दीबाचा

फर्हंग इस्तिलाहाते पेशेवराँ का यह तीसरा हिस्सा चार फसलों, चौबीस पेशों और कुछ कम दो हजार इस्तिलाहात पर मुश्तमिल है। जो देशी और परदेशी मुख्तलिफ़ बोलियों का एक मज़मूआ है, जिसमें कुछ अल्फाज़ तो अपने असली रूप में है और अक्सर ने चोला बदलकर या मस्ख़ होकर एक नया जनम इख़्तियार कर लिया है, जिनकी असलियत को खोज निकालना भी मुश्किल है, ऐसे अल्फ़ाज़ के चन्द नमूने तहरीर किये जाते हैं। तश्रीह किताब में मुलाहिज़ा हो।

1– औला, तमंका, राब, सीनी, कपूरा, कुल्हड़ा, कुलिया, ग़र्क़ी, मुग़ली, मुस्दी।

2–तई, तौला, थलक, तैत्ड़ी, औसा, बेधा, टक, बट, पत, मून, मर्त्बान।

नम्बर एक अरबी के और नम्बर दो संस्कृत अल्फ़ाज़ के बिगड़े हुये नमूने हैं।

ख़ाक सार

ज़फर–उर्रहमान अब्बासी (देहलवी)

हैदराबाद (दकन)

नवम्बर 1940ई0

पहली फ़स्ल फ़ने–जुरूफ़साज़ी
मआ़ मुलम्मअ़कारी
1 जुरुफ़साज़ी
1 पेशा–ए–टोकरीसाज़ी

बांक (स्त्री) बांस की खपच्चियाँ और पल्वत तराशने का टोकरीसाज़ का हिलाली शक्ल का आहनी औज़ार।

बुट्टी (स्त्री) ढकनेदार पिटारीनुमा बनी हुई टोकरी, जिसके लटकाने को ऊपर खपच्ची का एक हल्क़ा लगा होता है (यह लफ़्ज़ बंगाली है लेकिन जुनूबी हिन्द के अक्सर मुक़ामात पर बोला जाता और उर्दू में खप गया है।

बखार (पु0) देखें ढाला।

बिंगा (पु0, स्त्री) देखें पल्वत।

बोई (स्त्री) एक क़िस्म के घास के तुर्रा की सींक जो हल्की–फुल्की और खुश वज़अ़ टोकरियाँ बनाने के काम में लाई जाती है।

बोइय्या (पु0) फल–फूल रखने की बोई की बनी हुई नाज़ुक क़िस्म की टोकरी।

पाया (पु0) टोकरे या टोकरी की बाड की तीलियाँ जिनमें आड़ी तीलियाँ बतौर बुनावट डालकर टोकरी का ढाँचा तैयार किया जाता है।

जमाना, बाँधना बाड़ की तीलियों की तरतीब से बंदिश करना। **उतारना** बाड़ की तीलियों को हस्बे ज़रूरत छोटा करना।

पत्तल (स्त्री) ढ़ाक के पत्तों का थालीनुमा बनाया हुआ ज़र्फ़।

पतौरा (पु0) देखें दौना।

पिटारा (पु0) बेलन की वज़अ़ का बड़ी क़िस्म का ढकनेदार बना हुआ टोकरा। मामूल से छोटे को पिटारी कहते हैं। पिटारा, बिहारी ज़बान का लफ़्ज़ है लेकिन उर्दू में शरीक हो गया है और शिमाली हिन्द में आमतौर से बोला और समझा जाता है।

पिटारी (स्त्री) पिटारे का इस्मे मुसग्ग़र, **देखें** पिटारा। शिमाली हिन्द में धातु के बने हुये पानदान को भी पिटारी कहते हैं,जो अमूमन पिटारे की शक्ल की होती है।

पिट्ठू (पु0) बड़े पेट और छोटे मुँह का औसत दर्जे का टोकरा, जिसमें फल और तरकारी ज़्यादा मिक़दार में हिफ़ाज़त से रखी जाय। पिट्ठू, लफ़्ज़ पेटू (बड़ा पेट वाला) का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है। इसके मुँह को इस्तिलाह में मोरी कहते हैं।

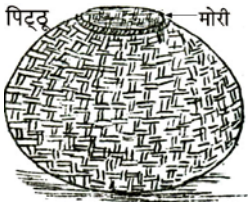

पल्डा (पु0) देखें पल्वा।

पल्ला (पु0) देखें झल्ला।

पल्वा/पल्डा (पु0) पल्ले का इस्मे मुसग्ग़र **देखें** पल्ला।

पल्वत/पल्वट (पु0) बिंगा, खप्चर फाँट। टोकरी वग़ैरा बनाने को बाँस की तराशी हुई पतली–पतली पट्टियाँ।

फाँट (स्त्री) देखें पल्वत।

फूल डलिया (स्त्री) साजी। फूल वग़ैरा रखने की सींको की बनी हुई नाज़ुक और फैलवाँ मुँह की टोकरी। **देखें** चंगेर पृ0।

तरौना (पु0) फेरे वाले सौदा फरोशों का ख्वांचा रखने का डुगडुगीनुमा अड्डा, हस्बेज़रूरत छोटा बड़ा बाँस की तीलियों या सरकंडे का बनाया जाता है।

तिल्कम (पु0) टोकरी या टोकरी की बुनाई का आडा फेर जो बतौर बाना बुना जाता है। **फेरना, डालना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पाया।

टापा (पु0) खाँचा, झाँपी, मख़रूती शक्ल का ऊँचा और बड़ा टोकरा, जो आमतौर से मुर्गियाँ बंद करने

टापा (खाँचा, झाँपी)

के इस्तेमाल में आता है। पूरब में टापा, पश्चिम में खाँचा और बंगाल में झांपी कहलाता है। लफ़्ज़ टापू से टापा बन गया है।

टोकरा (पु0) बांस या झाऊ की शाखों का बना हुआ प्यालेनुमा शक्ल का ज़र्फ़ हस्बेज़रूरत छोटा, बड़ा और मुख़्तलिफ़ नमूनों का बनाया जाता है। मामूल से छोटा, टोकरी कहलाता है।

टोक्री (स्त्री) टोकरे का इस्मे मुसग्ग़र।

टोक्री साज़। टोकरियाँ बनाने वाला कारीगर, बाँस की तीलियों सींकों और बाज़ दरख़्तों की शाखों और पत्तों के ज़रूफ़ बनाने वाला मज़दूर उर्फ़ आम में टोकरीसाज़ या टोकरी वाला कहलाता है। टोकरीसाज़ी क़दीम, मुस्तक़िल अनमिट सन्अत है और हर ज़माना हर मुल्क और हर कौम में ज़रूरत रहती है। ज़माने की तरक्क़ी के साथ इस में भी तरक्क़ी होती रहती है।

झाबा/झब्बा/झव्वा (पु0) झाऊ की शाखों का बुना हुआ थाल की शक्ल का ज़र्फ़, जो आमतौर से कुंजड़े तरकारी वगैरा रखने को काम में लाते हैं। झब्बा और झव्वा झावे का गलत तलफ़्फ़ुज़ है, जो देहाती बोलते हैं। मामूल से छोटा झाबी, झब्री और झब्ड़ी कहलाता है।

झाबा (झब्बा, झव्वा)

झबरी/झब्डी (स्त्री) झाबे का इस्मे मुसग्ग़र।

झांपी (स्त्री) देखें टापा पृ0।

झाऊ (पु0) एक क़िस्म की लम्बी और पतली शाखों की झाड़ी जो अ़मूमन बड़े दरियाओं के किनारे खुद रौ पैदा होती है। दो आबा के इलाकों में दरियाए गंगा और यमुना के किनारों पर बहुत होती है। टोकरियाँ और अनाज रखने के लिये बड़ी–बड़ी कोठियाँ बनाने के काम आती है।

झव्वा/झब्बा (पु0) देखें झाबा।

झब्री/झब्डी (स्त्री) देखें झाबी।

झल्ला (पु0) पल्ला, **देखें** झल्ली।

झल्ली (स्त्री) ऊँची बाड का पिटारीनुमा बड़ा टोकरा, जिसमें एक मज़दूर के उठाने के लायक बोझ भरा जा सके।

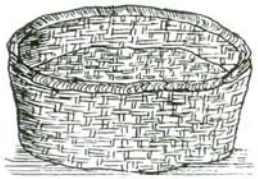
झल्ली

औसत दर्जे से ज़्यादा बड़ा इस्तिलाह में झल्ला कहलाता है, लेकिन बहुत कम बोला जाता है। आम लफ़्ज़ झल्ली है। लफ़्ज़ झल्ला और झल्ली मस्दर झेलना बमाने उठाना का इस्मे ज़र्फ़ है।

चंगेर (स्त्री) साजी, गंजीरी, फूल ढलिया, मौनी। फूल–फल रखने की फैलवाँ मुँह की उथली टोकरी।

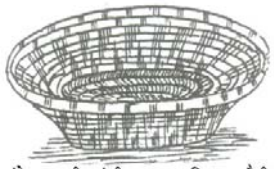
चंगेर (साजी, गंजीर, फूल डलिया, मौनी)

झीबा (पु0) झाबे का दूसरा तलफ़्फ़ुज़, जो बाज़ मुक़ामात पर बोला जाता है। **देखें** झाबा।

दौरा (पु0) झल्ली की क़िस्म की मगर इससे बहुत छोटी एक क़िस्म की पिटारीनुमा टोकरी। दौरा बिहारी ज़बान का लफ़्ज़ है। आगरा, अवध में भी बोला जाता है। मगर आमतौर से ढलिया कहलाता है, जो ग़ालिबन मस्दर डालना का इस्मे ज़र्फ़ है। जिस तरह से मस्दर झेलना से झल्ली। **देखें** झल्ली

दौना (पु0) पतौरा, पत्तों का बनाया हुआ प्यालेनुमा ज़र्फ़। पत्तल और दोना अहले हुनूद के बहुत क़दीम ज़माने के खाने के बर्तन हैं, जो आमतौर से इस्तेमाल होते हैं। पत्तल, थाली और दोना, कटोरे के बजाय काम में लाया जाता है।

डाला (पु0) बखार, ढ़ाका, कोरंगा। छोटे मुँह और फैलवाँ बड़े पेट का पिठ्ठू की वज़अ़ का टोकरा जिसमें चिड़ीमार नया पकड़ा हुआ जानवर बन्द रखते हैं।

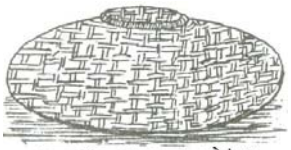
डाला (बखार, ढाका, कोरंगा)

ढलिया (स्त्री) देखें दौरा।

ढ़ाका/ढक्का (पु0) देखें ढाला।

साजी (स्त्री) देखें चंगेर।

सींक (स्त्री) एक क़िस्म की घास की सिरकी यानी तुर्रे का डंठल जो उमदा क़िस्म की टोकरियाँ बनाने के काम आती है और झाड़ू भी बनायी जाती है।

कोरंगा (पु0) देखें डाला पृ0।

खारा (पु0) देहाती औरतों का जुरूरी सामान रखने का संदूक की वज़अ़ का बना हुआ टोकरा। (रुसूमे हिन्द हिस्सा अव्वल)

खाँचा (पु0) देखें टापा पे0।

खाँची (स्त्री) खाँचे की वज़अ़ की चंद खपच्चियाँ जोड़कर बनाई हुई बड़ी और फैलवाँ मुँह की टोकरी जो कुम्हारों में बर्तन उठाने के काम आती है।

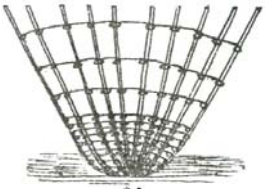
खाँची

गंजीरी (स्त्री) देखें चंगेर/चंगीर।

मोरी (स्त्री) देखें पिट्ठू।

मोनी (स्त्री) देखें चंगेर।

2 पेशा–ए–कुम्हारी

आब ख़ोरह (पु0) कूज़ा, कुल्हड़ा, घौल्वा, मटकैना, गिलास, पानी वगैरा पीने का गिलास की वज़अ़ का बना हुआ लम्बोतरा ज़र्फ़। उर्दू में धात और शीशे के बने हुये को गिलास और मिट्टी के बने हुये को आबख़ोरह कहते हैं। शिमाली हिन्द में अ़वाम खुसूसन अहले हुनूद कुल्हड़ा, मटकैना और गँवार घौल्वा बोलते हैं। **कुल्हड़ा** अरबी लफ़्ज़ ''कुल्ला'' का उर्दू तलफ्फुज़ है। पंजाब से दो आबा के इलाक़े में पहुँचकर हिन्दी में शामिल हो गया और अहले हिन्द ने उसको अपना लिया। **कुलिया, छोटा कुल्हड़ा** यह लफ़्ज़ भी लफ़्ज़ ''कुल्ला''का उर्दू तलफ़्फुज़ और कुल्हड़े का इस्मे मुसग्ग़र है। आमतौर से बोला और समझा जाता है। कुलिया में गुड़ फोड़ना एक आम ज़र्ब–उल–मसल है। **मटकैना** मटके का इस्मे मुसग्ग़र है। **देखें** मटका पृ0। **कूज़ा** यह लफ़्ज़ आमतौर से असली मायनों में नहीं बोला जाता है। अलबत्ता मिस्री के कूज़े मशहूर है। शिमाली हिन्द में मिस्री मिट्टी के छोटे आबख़ोरों में बनाई जाती है,जो आबख़ोरह की शक्ल की हो जाती है। इसलिये इस्तिलाहे आम में मिस्री का कूज़ा कहलाता है।

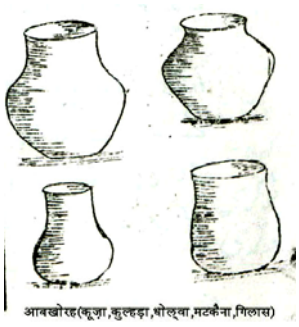
आबख़ोरह(कूज़ा,कुल्हड़ा,घौल्वा,मटकैना,गिलास)

आवा (पु0) मिट्टी के बर्तन पकाने की भट्टी। आग से पुख़्ता करने के लिये मिट्टी के बर्तनों का अम्बार। **मसल** माँ का पेट कुम्हार का आवा कोई गोरा कोई काला। **गंदा होना** किसी नुकसान की वजह आवे के तमाम बर्तनों का खराब हो जाना। कच्चा और नाक़िस रहना। **मसल** उनका आँवे का आँवा गंदा निकला।

बज्री (स्त्री) संग रेज़ेदार सुर्ख़ क़िस्म की मिट्टी जो बर्तन बनाने के काम न आ सके।

बद्नी/बध्नी (स्त्री) मिट्टी का बना हुआ टोंटीदार लोटा। **(अलग से चित्र देना है) तूतई** बद्नी की वज़अ़ का मामूल से बहुत छोटा बना हुआ ज़र्फ़।

बुय्याम (पु0) अचार, मुरब्बा या शीरेदार दवाइयाँ रखने का बेलन की वज़अ़ का बना हुआ चौड़े मुँह का बर्तन, मिट्टी चीनी शीशे और हर क़िस्म की धात का बनाया जाता है। तौला भी कहते हैं। **मर्तबान** (अमृत+ बान) बोयाम की क़िस्म का किसी क़दर तंगमुँह और पेटदार बर्तन। उर्दू में लफ़्ज़ मर्तबान आम और बुय्याम ख़ास है।

बुय्याम(मर्तबान,तौला)

बहाना (क्रिया) कुम्हार के चाक के दौर पर मिट्टी से बर्तन डौलाना या बनाना।

भप्का (पु0) मामूल से बड़ा और सुडौल बना हुआ आबख़ोरह।

प्रजापति (पु0) देखें कुम्हार।

पेंडी (स्त्री) पेंडी, ठप्पा, छपता कोसी। मटके की क़िस्म के बर्तन की गोलाई को थपककर बढ़ाने की चोबी थापी।

पैंड़ी (स्त्री) देखें पेंडी।

फिरका/फिरैता (पु0)

देखें चाक।

फड़ैड़ी (स्त्री) जेड़ी। आँवे में बर्तनों को करीने से तले ऊपर जमाकर बनाई हुई चोटी। सीधी क़तार।

फल्का (पु0) देखें चाक।

तुतई (स्त्री) (संस्कृत–तौंढा) मिट्टी की टोंटीदार लुटिया। **देखें** बद्नी।

तौला (पु0) (संस्कृत तौल) रोटी वगैरा रखने की चौड़े मुँह की मिट्टी की हंडिया (आगरा और अवध), दूध नापने का खुले मुँह का मिट्टी का बर्तन (बंगाल)।

ठप्पा (पु0) देखें पेंडी।

ठिलिया (स्त्री) घड़िया (पंजाबी) मट्के की वज़्अ का छोटे मुँह का पानी रखने का ज़र्फ़। उर्दू में मिट्टी की बनी हुई को आमतौर से ठिलिया और देहात की बनी हुई को घड़िया कहते हैं।

ठीक्रा (पु0) मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा। मटके का टूटा हुआ खपरा, बहुत छोटा टुकड़ा ठीक्री कहलाता है।

ठीक्री (स्त्री) ठीकरे का इस्मे मुसग्ग़र।

जेड़ी (स्त्री) देखें फड़ैड़ी। लफ़्ज़ जोड़ना यानी ऊपर तले रखना या बराबर–बराबर मिलाकर रखना से जेड़ी बन गया है। क़िला मुअ़ल्ला की ज़बान में नियाज़ के शर्बत की ठीलिया को जिसके मुँह पर बद्नी की टोंटी में पान का बीड़ा और मुँह पर आब ख़ोरह रखा जाता था, इस्तिलाह में जेकड कहते थे, जो ग़ालिबन जेड़ी से बना हो। (किताब बज़्म आख़िर)

जेकड़ (स्त्री) देखें जेड़ी।

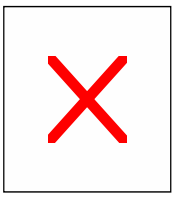

झांकी (स्त्री) झायीं मायीं। जालीदार बनी हुई हंडिया, जिसमें गरीब गुर्बा हवा से बचाव के लिये चिराग़ रख लेते थे।

छायीं मायीं (स्त्री) देखें छांकी।

झझरी (स्त्री) पानी रखने का सुराही की क़िस्म का मामूली वज़्अ का मिट्टी का बर्तन, झज्जर एक मुक़ाम का नाम है। जहाँ से यह बर्तन बड़ी तादाद में तैयार होकर शहरों में आते थे। गर्मियों में उनमें पानी ठण्डा रहता था। इस खुसूसियत की वजह से मशहूर और झज्जरी के नाम से मौसूम हो गये। अब आला बनावट की सुराहियों के मुकाबले में उन का बन्ना मौक़ूफ़ और रवाज़ जाता रहा।

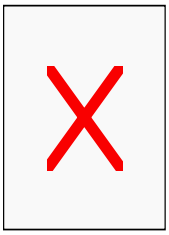

झूटी चीनी (स्त्री) देखें चीनी मिट्टी।

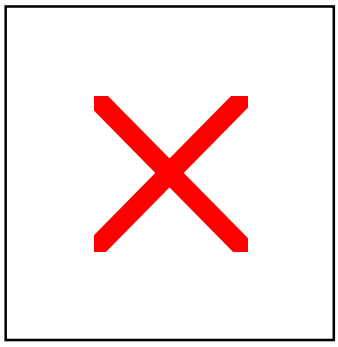

चाक (पु0) फिरका, फिरैता, फल्का, चर्ख़, कुम्हार का बर्तन डौलाने या साँचने का चक्की के पाट की शक्ल का पत्थर का पहिया। शिमाली हिंद में फल्का कहलाता है। जिसका दूसरा तलफ़्फ़ुज़ फिरका और फरैता है। **चक लैटी** चोबी डंडा, जिससे चाक घुमाया जाता है। इसको बाज़ मुक़ामात पर चकैत भी कहते हैं। **चकौत** ज़मीन में गड़ा हुआ चाक का कीला, जिसपर चाक घूमता है। **कन्ना** चाक के किनारे पर का छोटा गढहा जिसमें चक लैटी फँसाकर चाक को घुमाते हैं।

चप्नी (स्त्री) ढ़प्नी, ढ़कनी, हंडिया और मट्के वगैरा के मुँह पर ढ़कने का मिट्टी का बना हुआ ढ़क्ना।

चुट्टा (पु0) देखें घेरा।

चक लैटी/चकैत (स्त्री) चाक।

चकौत (स्त्री) देखें चाक।

चकौंदी (स्त्री) बर्तन डौलाते वक़्त चाक पर मिट्टी चिकनाने को पानी की हंडिया।

चकैत (पु0) वह कीला जिसपर कुम्हार का चाक घूमता है। **देखें** चाक।

चौघड़ा (पु0) पिसा हुआ नमक–मिर्च और गरम मसाला वगैरा रखने का मिट्टी का बना हुआ चौमुखा ज़र्फ़ जिसमें मुदव्वर शक्ल के प्यालेनुमा चार

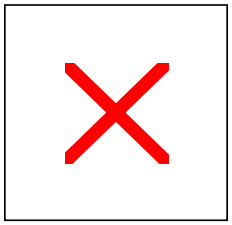

बर्तन मुरब्बा शक्ल में जुड़े होते हैं।

चीनी मिट्टी (स्त्री) बर्तन बनाने की एक ख़ास किस्म की खरिया मिट्टी। इस किस्म की मसनूई बनाई हुई खरिया, छूटी चीनी कहलाती है।

छप्ता (पु0) **देखें** पेंडी।

छैना (पु0) चाक पर तैयार किये हुए बर्तन को मिट्टी के थोये से काटने का तागे का बारीक तार। बाज़ मुक़ामात पर छीव्री या छीवल कहते हैं।

इसके लिये कुम्हारों में यह पहेली मशहूर है।

पानी में निस दिन रहे जाके हाड़ न माँस।
काम करे तलवार का फिर पानी में बाँस।।

यह डोरा जिससे बर्तन को मिट्टी के थोये से काटा जाता है। पानी की हंडिया में पड़ा रहता है। इसी बात की तरफ पहेली में इशारा है।

छीव्री/छीवल (पु0, स्त्री) देखें छैना।

ढप्नी (स्त्री) देखें चप्नी।

राँजन/रँजन (स्त्री) लम्बोत्री शक्ल और बड़ी बनावट का मट्का या गोल। ख़ास ज़रूरतों के लिए इस पर लाख का रौग़न कर दिया जाता है।

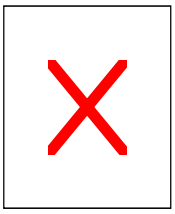

सकोरा (पु0) फैलवाँ मुँह और उथली (कम गहरी) वज़अ़ का मिट्टी का छोटा प्याला, जिसमें पाँच से दस तोला तक पानी आ जाय। मामूल से छोटा सकोरी कहलाता है (सकोरा दरअसल) अरबी लफ़्ज़ 'सुकुर्रह' का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ है, जो कसरते इस्तेमाल से हिंदिया गया है, जिसतरह कुल्हड़ा और कुलिया। शिमाली हिंद में आमतौर से बोला जाता है और उर्दू ज़बान का लफ़्ज़ बन गया है।

सकोरी (स्त्री) सकोरे का इस्मे मुसग्गर। **देखें** सकोरा।

सैलखरी (स्त्री) एक क़िस्म का चिकना, चमकदार, नर्म और नैलँगू सफेद रंग का पत्थर जिसको बारीक पीसकर और सफेदी के साथ पानी में मिलाकर बर्तन में बेल–बूटे बनाते हैं।

सीनक/सहनक (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ है, जो उर्दू में शामिल होकर मिट्टी की बनी हुई बड़ी रकाबी के लिये जो नियाज़ नज़र के मौके पर इस्तेमाल की जाये, मख़्सूस हो गया है।

सुराही (स्त्री) पानी रखने को लम्बोत्री गर्दन का खुशनुमा बना हुआ ज़र्फ़। मिट्टी के बने हुए का इस्तेमाल आमतौर से मुरव्विज है। तकल्लुफ़न धात और शीशे का भी बनाया जाता है।

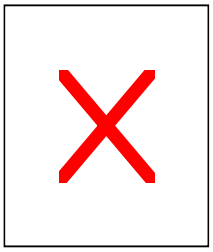

काग़ज़ी बर्तन (पु0) पतली तह का नाज़ुक बना हुआ मिट्टी का बर्तन इस्तिलाह में काग़ज़ी बर्तन कहलाता है।

कुलिया (स्त्री) देखें आबख़ोरह। (कुल्हड़े का इस्मे मुसग्गर)

कुल्हड़ा (स्त्री) देखें आबख़ोरह। अरबी लफ़्ज़ कुल्ला का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़ है

कमाई हुई मिट्टी (स्त्री) बर्तन बनाने के लायक़ साफ की हुई और लोचदार बनाई हुई मिट्टी।

कुम्हार (पु0) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला क़दीम पेशेवर सन्नाअ़। तक़सीमे–कार के लिहाज़ से इसकी हस्बेज़ेल ज़ातें मशहूर हैं। **प्रजापति कुम्हार** खिलौने और बग़ैर चाक के बर्तन बनाने वाला कुम्हार मामूली दर्जे के कारीगरों में शुमार किया जाता है। **कैरिई कुम्हार** सिर्फ़ खिलौने बनाने वाला कुम्हार। प्रजापति का शरीक–ए–कार। **गोले कुम्हार** चाक पर और आला क़िस्म के बर्तन बनाने वाला कुम्हार इसका शुमार दर्जा–ए– अव्वल के कारीगरों में किया जाता है। **मुहार** कुम्हारों का वह फ़िरक़ा जो बतौर–ए–पेशा बर्तन बनाने का काम नहीं करता, बल्कि शरीक–ए– कार की हैसियत रखता है। मिट्टी फराहम करना और ज़रूरत के वक़्त बर्तन बनाने में मदद देना इसका मामूली काम है ख़ाली वक्त में जानवर चराता है।

कुम्हारी (स्त्री) कुम्हार की औरत। एक परदार कीड़ा जो मिट्टी का घर बनाता और उसमें अपने अण्डे रखता है।

कन/कन्ना (पु0) देखें चाक।

कनौसी (स्त्री) देखें पेंडी।

कोरा बर्तन (पु0) आँवे से निकला हुआ नया ग़ैर मुस्तअ़मिला बर्तन।

कूज़ा (पु0) **देखें** आबख़ोरह।

कूंडा (पु0) फैले मुँह का कम गहरा, प्याले की वज़अ़ का बर्तन। मामूली इस्तेमाल के बड़े से बड़े कूंडे का मुँह फुट डेढ़ फुट फैलाव का होता है, मामूल से छोटा कूंडी और कुंडाली कहलाता है। दकन में पौधे लगाने के गमले को कूंडा कहते हैं।

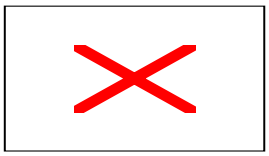

कूंडी (स्त्री) कूंडे का इस्मे मुसग्गर।

कुंडाली (स्त्री) कूंडी का इस्मे मुसग्गर। **देखें** कूंडा।

कैरेई कुम्हार (पु0) **देखें** कुम्हार।

खरिया (स्त्री) एक क़िस्म की सफेद मिट्टी जिसमें चूने के अज्ज़ा ग़ालिब होते हैं। उमदा क़िस्म के बर्तन बनाने को मिट्टी में मिलाई जाती है।

खोया (पु0) गोंदा। बर्तन तैयार करने को पानी से गूँधकर लोचदार बनाई हुई मिट्टी। ख़मीर की हुई मिट्टी।

गम्ला/घम्ला (पु0) कूंडे की क़िस्म का छोटे पौधे लगाने का फैलवाँ मुँह और तंग पेंदे का मिट्टी का ज़र्फ़।

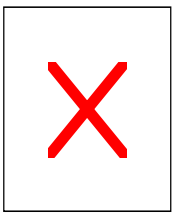

गोल (स्त्री) **देखें** मटका।

गोले कुम्हार (पु0) **देखें** कुम्हार।

गोंदा (पु0) **देखें** खोया। पूरब में मेंडी कहलाता है।

घड़ा (पु0) (पंजाबी) ठिलिया की वज़अ़ का बड़ी क़िस्म का बर्तन। **देखें** ठिलिया, मामूल से छोटा खड़िया कहलाता है।

घड़ा एक मिट्टी का टूटा हुआ।
क़रीब उसके ही इकतरफ को पड़ा।। (शाद)

घड़िया (स्त्री) **देखें** घड़ा।

घेरा मटका रखने का मिट्टी का बना हुआ हल्का, दकन में चुट्टा कहलाता है।

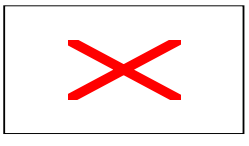

लकोटा (पु0) लाक का रौग़न जो मिट्टी के बर्तनों पर किया जाता है। **फेरना, लगाना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

लेहसुर (पु0) कमाई हुई मिट्टी को पाती में गलाने और लोचदार बनाने का औज़ार।

मटका (पु0) पानी रखने का बैज़वी शक्ल का मिट्टी का बना हुआ बड़ा ज़र्फ़ बाज़ मुक़ामात पर अ़वाम मटके को गोल कहते हैं। मामूल से छोटा मटकी और बहुत छोटा जो आबख़ोरह का काम दे, मटकैना कहलाता है, जिसका दूसरा नाम कुल्हड़ा है।

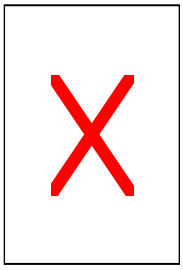

मटकी (स्त्री) मट्के का इस्मे मुसग्ग़र।

मटकैना (पु0) कुल्हड़ा। मटके का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** मटका और आबख़ोरह।

मटियार (स्त्री) वह जगह जहाँ बर्तन बनाने की मिट्टी तैयार की जाये। **देखें** तग़ार (पहला हिस्सा, पेशा–ए–बेलदारी पृ0)

मर्तबान (पु0) बोयाम (संस्कृत) (अमृतबान) **देखें** बोयाम।

मुरम (स्त्री) संगरेजों की मिट्टी, जो बर्तन बनाने के काम नहीं आती।

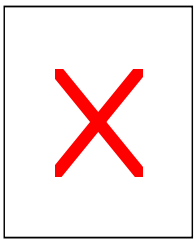

मुहार (पु0) **देखें** कुम्हार।

मेंडी (स्त्री) **देखें** गोंदा।

नाँद (स्त्री) प्याले की वज़अ़ का बना हुआ मिट्टी का बड़ा बर्तन, जो धोबी रंगरेज और दीगर पेशेवरों के काम आता है। मामूल से छोटा नदौला कहलाता है।

नदौला (पु0) नांद का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** नाँद।

हांडी (स्त्री) **देखें** हंडिया।

हंडा (पु0) चौड़े मुँह का मटके की क़िस्म का मगर उससे छोटा बर्तन। मामूल से छोटा हंडिया कहलाता है।

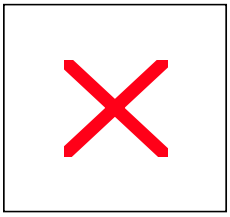

हंडी/हंडिया (स्त्री) हांडी।

हंडे का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** हंडा।

3 पेशा–ए–कुप्पासाज़ी (दबगिरी)

पारी (स्त्री) औसत दर्जे का कुप्पा। **देखें** कुप्पा।

पुट्ठा (पु0) कुप्पे का बग़ली रुख़ जो किसी क़दर चिपटा होता है। **देखें** तस्वीर कुप्पा।

पल्ला (पु0) सब से बड़ी क़िस्म का कुप्पा, जिसमें ढाई–तीन मन वज़न आ सके। **देखें** कुप्पा। मामूल से छोटा पल्ली कहलाता है।

पल्ली (स्त्री) देखें पल्ला।

पेट (पु0) कुप्पे का बीच का फूला हुआ हिस्सा। **देखें** तस्वीर कुप्पा।

ताड़ी (पु0) कुप्पे के मुँह पर चमड़े की गोट के साथ सिला हुआ बाँस की खपच्ची का हल्क़ा, जिस से कुप्पे का मुँह तना रहता है। मस्दर तान्ना से तान मुज़क्कर, तानी मुअन्नस है और ताड़ी उसका ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है। **देखें** तस्वीर कुप्पा

टिक्की (स्त्री) फर्मा, कैंडा, साँचा। लकड़ी या चमड़े का बना हुआ नमूना, जिसपर कुप्पे के हिस्से तराशे जाते हैं।

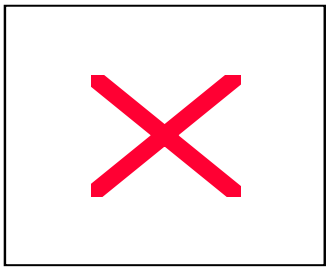

जंतरी (स्त्री) चमड़े के बारीक तस्मे काटने का कंघीनुमा बना हुआ औज़ार, जिसपर चमड़ा मढ़कर कुप्पा सीने के लायक बारीक–बारीक तस्मे काट लिये जाते हैं।

झाबा (पु0) हंडे की शक्ल का टोंटीदार चरमी बना हुआ ज़र्फ़।

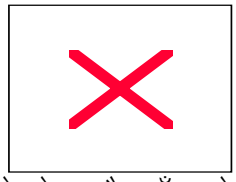

चोली (स्त्री) गल्ला। कुप्पे के पेट और मुँह के दरमियान का छोटा और तंग हिस्सा, जो बतौर गर्दन होता है। **देखें** तस्वीर कुप्पा।

दबगर (पु0) कुप्पासाज़। कुप्पे और इसी क़िस्म के चमड़े के ज़र्फ़ बनाने वाला कारीगर। अरबी लफ़्ज़ दब्बा बमानी, चमड़े का बड़ा मटका। संस्कृत में कतोपा और उर्दू में कुप्पा कहलाता है।

काल्बुद (पु0) क़ालिब का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। कुप्पा डौलाने का मिट्टी का साँचा जिसपर कुप्पे के पाखे मिलाकर सीते हैं और चमड़ा खुश्क़ होने के बाद मिट्टी का साँचा तोड़कर निकाल लेते हैं।

झाड़ना मिट्टी के साँचे को तोड़कर कुप्पे को अन्दर से साफ करना।

कुप्पा (पु0) संस्कृत कतोपा–अरबी दब्बा। मट्के की वज़्अ़ का किसी क़दर लम्बोतरा चमड़े का बनाया हुआ ज़र्फ़, औसत दर्जे के कुप्पे को पारी, मामूली और छोटी क़िस्म को कुप्पी कहते हैं।

चित्र–कुप्पा।

कुप्पासाज़ (पु0) देखें दबगर। दब्बा अरबी में कुप्पे को कहते हैं। इसी लिये बाज़ बड़े शहरों में कुप्पेसाज़ दबगर कहलाते हैं।

कुप्पी (स्त्री) देखें कुप्पा।

गल्ला (पु0) देखें चोली।

घेरना (पु0) चमड़े के गोल टुकड़े काटने का गित्तेनुमा गोल कैंडा।

4 पेशा–ए–ढलईकारी मअ़ा पेशा झलाई और छिलाई

उधेड़ (पु0) ढले हुए बर्तनों के खुरदुरेपन को निकालने और उनकी सतह हमवार करने के लिये इब्तिदाई मोटी छिलाई करने का अ़मल। **करना** बर्तन का खुरदुरापन छीलना।

अल्मोनियम (स्त्री) एक क़िस्म की मुरक्क़ब धात, जो ख़ाक में मिले हुए मुख़्तलिफ़ क़िस्म के धातों के ज़र्रों से तैयार की जाती है।

औगी (स्त्री) बर्तन ढालने का पिटारीनुमा बना हुआ घेरा। औगी के हस्बेज़रूरत दो या दो से ज़्यादा हिस्से होते हैं। हर हिस्सा रेज़ह और उस की मज़मूई हैय्यत झुंड कहलाती है।

बादी (स्त्री) बर्तनों की सतह छीलने और साफ करने का फौलादी पट्टी का औज़ार

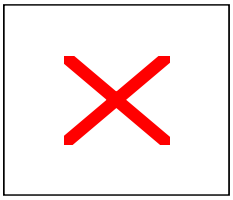

जो खर्राद के औज़ार से मिलता–जुलता और हस्बे –ज़रूरत छोटा–बड़ा होता है।

बट (स्त्री) ढले हुये बर्तन की सतह के ऊपर का खुरदुरापन और शिकन वग़ैरा जो ढलाई में पड़ जाती है। **पड़ना, निकालना, साफ करना** के साथ मिलाकर बोला जाता है।

बिरंज (पु0) देखें पीतल।

बिरंजसाज़ (पु0) पीतल तैयार करने और उसके बर्तन ढालने और बनाने वाला पेशेवर कारीगर।

बेधा (पु0) ढला हुआ बर्तन यानी वह बर्तन, जो ढालकर तैयार किया जाये।

बिहिन्कार/भिन्कार (स्त्री) जस्त, सियाह ताब धात, जो ताँबे और शीशे को मिलाकर तैयार की जाती है।

भेट (स्त्री) ज़ाइद बढ़ी हुई कोर, जो ढलाई में बर्तन के जोड़ के अतराफ़ जम जाये और बाद में काटकर अलग करनी पड़े। इस सूरत में ढलाई का नुक़्स समझा जाता है। जिससे काम बढ़ जाता है। **पड़ना, जमना** के साथ बोला जाता है।

पत्रा (पु0) छिलाई का औज़ार तेज़ करने की फौलादी पट्टी। किसी धात की ढली हुई पतली चादर का टुकड़ा।

पक्का टाँका (पु0) देखें टाँका।

पल्ली (स्त्री) मुख़्तलिफ़ धातों के अज्ज़ा को मिलाकर गलाने का बड़ा ज़र्फ़ बाज़ कारीगर छीजली कहते हैं, जो ग़ालिबन लफ़्ज़ छीज या छीजना से बना है।

पीतल (पु0) बिरंज, ज़र्द रंग की मुरक्कब धात जो तीन हिस्से ताँबा और एक हिस्सा जस्त या रूहे तूतिया मिलाकर तैयार की जाती है। क़दीम ज़माने से हिन्दुओं में इस धात के बने हुए बर्तन आमतौर से इस्तेमाल किये जाते हैं।

पीना/पैना (पु0) मुरक्कब धातु गलाने का एक मसाला।

पैर (पु0) औगी के जोड़ मिलाने के कुंडे। **देखें** तस्वीर औगी।

फूल (पु0) देखें कांसी।

ताव (पु0) भट्टी की आग की तेजी, जो धात को गला दे। **आना** आग की तेजी का अपनी इंतिहाई हद को पहुँच जाना। **लगना** आग की तेजी का किसी चीज़ पर असर होना। **उतरना** आग की तेजी का अपनी हद को पहुँचकर धीमा होने लगना।

तुक्का (पु0) एक साथ कई ढलने वाले बर्तनों की दरमियानी शाख़, जो सब में मुश्तरक होती है और जिसके ज़रीए पिघला हुआ माद्दा हर बर्तन की जगह पहुँच जाता है। **चित्र**

तकिया (पु0) औगी का ढक्कन जिस पर औगी जमाई जाती है। **देखें** तस्वीर औगी।

टाँका (पु0) धात के बर्तन के हिस्सों को झालने यानी जोड़ने वाली ऐसी धात जो जोड़ से मिलकर एक जान हो जाये और तपाने से न खुले। ऐसा टाँका इस्तिलाह में पक्का टाँका और इस के बर खिलाफ़ जो टाँका बर्तन की धात के साथ वस्ल न हो और तपाने से जुदा हो जाय। कच्चा टाँका कहलाता है। **लगाना, देना** धात के बर्तन के जोड़ को किसी दूसरी धात से झालना। (बाहम वस्ल करना) **दौड़ना, दौड़ाना** टाँके का जोड़ पर फैलना और जोड़ की दर्ज़े भर जाना। फैलाना, भर देना। **खुलना, निकलना** टाँके का कायम न रहना।

टोंटी (स्त्री) औगी का मुँह। **देखें** तस्वीर औगी।

ठांस (स्त्री) चोबी मुढ़ढी जो छिलय्या बर्तन को ख़र्राद पर चढ़ाने के लिये उसके एक सिरे पर जमा लेता है।

जर्मन सिलवर (स्त्री) देखें काँसी।

जस्त (पु0) बिहिनकार (भिन्कार) एक मुरक्कब धात, जो ताँबे और शीशे को मिलाकर तैयार की जाती है। जिसमें ताँबा चार सेर और सीसा एक सेर होता है।

झाल (पु0) धात के बर्तन के टुकड़ों को जोड़ने या सुराख़ को बंद करने का अमल जो किसी दूसरी धातु का टाँका लगाकर किया जाता है। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है।

झालना (क्रिया) देखें झाल।

झलाई (स्त्री) बर्तन झालने का अमल। **देखें** झाल।

झलय्या (पु0) ढले हुए बर्तनों के जोड़ झालने वाला ढलाई के कारख़ाने का कारीगर।

झुण्ड (पु0) देखें औगी।

चूनस (स्त्री) धात के बर्तनों की छीलन जो बर्तनों के खुरदुरापन को छीलने और साफ करने में खारिज़ हो।

छिलय्या (पु0) ढले हुए बर्तनों की सतह के खुरदुरेपन को ख़र्राद पर छीलकर साफ़ और चिकना करने वाला, ढलाई के कारख़ाने का कारीगर।

छीज्ली (स्त्री) देखें पल्ली।

ख़ाका छिड़कना (क्रिया) ढलाई के साँचे के नक़श पर राख छिड़कना, ताकि उसके जोड़ आपस में चिपक न सकें।

ढलाई (स्त्री) धात के बर्तन वगैरा ढालने का अ़मल। बर्तन ढालने की उजरत।

ढलय्या (पु0) सूधा, काँस्य। धात के बर्तन वगैरा ढालने वाला कारीगर, जो मुरक्कब धात मसलन पीतल, काँस्य, जस्त वगैरा से छोटी क़िस्म के ज़रूफ़ तैयार करता है, जो गढ़कर तैयार नहीं हो सकते या जिन को गढ़कर बनाने में दुश्वारी के अलावा मेहनत और लागत ज़्यादा आती है। ठटेरे के काम में जो छीज निकलती है। उसको बतौर जुज़ उसी काम में लाने का ढलईकारी का एक तरीका है।

राँग (स्त्री) चाँदी से मिलती–जुलती एक धात जिससे तांबे, पीतल के बर्तनों पर क़लई और एक क़िस्म की मुरक्कब धात तैयार की जाती है, जो फूल और काँस के नाम से मअ़रूफ़ है। राँग से पीतल और टीन के बर्तनों में झाल भी लगाया जाता है, मगर इसका झाल भी कच्चा रहता है।

रेज़ा (पु0) देखें औगी।

ज़मीन (स्त्री) ढले हुए बर्तनों की बालाई सतह, जो इब्तिदा में खुरदुरी होती है और छीलकर साफ की जाती है। **बनाना** ढले हुए बर्तनों की छिलाई करके उसकी सतह को हमवार और चिकना करना।

सोख़्ती (स्त्री) ढलई के साँचे की जली हुई मिट्टी, जो पिघली हुई धात की तेज़ी से जलकर सख़्त हो जाये और साँचा बनाने के काम न आये।

सूधा (पु0) ढलाई का काम करने वाला पेशेवर बाज़ मुक़ामात पर सूधा कहलाता है। **देखें** ढलय्या।

फ़रमा बनाना (क्रिया) बर्तन की ढलाई का साँचा तैयार करना।

काँसी (स्त्री) फूल। चार हिस्से ताँबा और एक हिस्से क़लई को तरकीब देकर तैयार की हुई धात जो आजकल जर्मन सिल्वर के नाम से मअ़रूफ़ है।

काँस्या (पु0) मुरक्कब धात के बर्तन ढालने वाला कारीगर तफ़सील के लिए। **देखें** लफ़्ज़ कसेरा पेशा–ए–तांम्बटकारी। पृ0

कइय्या (पु0) बर्तनों के जोड़ झालने का आहनी औज़ार।

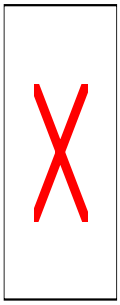

कच्चा टांका (पु0) देखें टांका।

किरात्ना (क्रिया) ढले हुए बर्तन के खुरदुरेपन को ख़र्राद पर चढ़ाने से कब्ल सोहन से रगड़कर कम करना। लफ़्ज़ किरना (किसी चीज़ के अज्ज़ा का कमजोर होकर झड़ना) से किरात्ना बमानी झाड़ना बन गया है।

किर्रा (पु0) बर्तन के जोड़ के पैवस्त होने का निशान, जो लहरियेदार होता है और एक आहनी औज़ार से दबाकर डाला जाता है।

किलौनी (स्त्री) बर्तन के जोड़ को दबाकर बे मालूम करने का दाँतेदार फ़िरकी की शक्ल का आहनी औज़ार, जिससे जोड़ को दबाकर पैवस्त कर दिया जाता है।

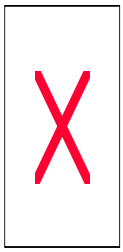

खताना (क्रिया) ढले हुए बर्तन की सतह को चमकाना, चिकनाना।

खताई (स्त्री) खताने का अ़मल। **देखें** खताना। **करना** के साथ बोला जाता है।

गिलट (पु0) एक क़िस्म की मुरक्कब धात जिसका रंग नीलगू सफेद होता है। क़लई और ताँबा मिलाकर तैयार की जाती है।

गिलटसाज़ (पु0) गिलट की चीज़ें बनाने वाला कारीगर ढलय्या।

माल (पु0) ढलय्यों की इस्तिलाह में मुरक्कब धात बनाने के अज्ज़ा का मज़मूई नाम। **तेज़ होना** मुरक्कब धातु के अज्ज़ा की गलाई में फर्क पैदा होना।

माल की दौड़ (स्त्री) पिघली हुई धात का बहाव। तेज़ रवानी, फैलाव। **आना** के साथ बोला जाता है।

मिस्सी जोश (पु0) ताँबे के बर्तन को आग में खूब तपाकर झाल को जोड़ों में पैवस्त करने का अमल। ऐसा झाल मामूली तपिश से नहीं खुलता और पक्का छाल कहलाता है। मिस्सी जोश से मुराद ताँबे को इस दर्जे तपाना कि वह आग की तरह सुर्ख़ हो जाय और टाँका (झाल) इसमें जज़्ब हो जाय।

5 पेशा–ए–ठठेरा गिरी क–(ताँबटकारी)

आबे गर्मा (पु0) पानी गरम करने का अंगीठीदार बर्तन हस्बे ज़रूरत छोटे–बड़े मुख्तलिफ़ क़िस्म के तैयार किये जाते हैं।

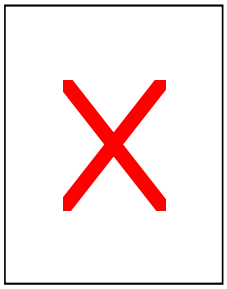

उथला प्याला (पु0) फैले हुए मुँह का कम गहरा प्याला।

आड़ (स्त्री) बर्तन के कोर किनारे सीधे करने और गड्ढ़े गूमड़े निकालने का चोंच की शक्ल का ठटेरे का हथौड़ा।

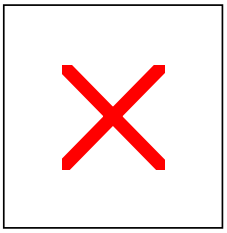

आफताबा (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ आबे–ताबा का उर्दू, तलफ्फुज़ और आबे–गरमा का मुतरादिफ़ लफ़्ज़ है, लेकिन तलफ़्फुज़ के साथ उर्दू में इसका महफ़ूम भी बदल गया है और आमतौर से खुश वज़अ़ सरपोशदार लोटे के लिये बोला जाता है। हिन्दी में इसी क़िस्म के बर्तन को जिसमें ढकना तो होता है, लेकिन टोंटी नहीं होती, गंगा सागर कहते हैं।

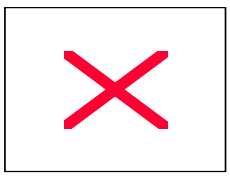

इकवाई (स्त्री) बिंगा, ठटेरे का कुहनीनुमा आहनी औज़ार, जिसपर मामूली घड़ाई का काम किया जाता है। जब इसका मुँह चपटा होता है, तो उसे चौरस इकवाई कहते हैं।

बाटी (स्त्री) बटलोई का इस्मे मुसग्ग़र बगैर टोंटी की छोटी गोल वज़अ़ की लुटिया। **देखें** बटलोई।

बाद्या (पु0) सीधी बाड़ और कुशादह मुँह का बड़ा प्याला। यह लफ़्ज़ शिमाल मग़रिबी हिन्दुस्तान के किसी इलाक़े से उर्दू में आया है। देहली और नवाहे–देहली में खुसूसन और शिमाली हिन्द में अमूमन मज़कूर–उस–सदर मफ़हूम के लिये बोला जाता है।

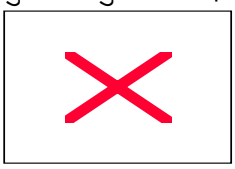

बासन (पु0) खाने–पीने की ज़रूरत के इस्तेमाल के हर क़िस्म के बर्तन।

बटलोई (स्त्री) दूध या पानी रखने का हंडे की वज़अ़ का ताँबे या पीतल का बर्तन।

बर्तन (पु0) बासन। खाने–पीने वगैरा की ज़रूरियात के हर क़िस्म के ज़रूफ़।

भगोना (पु0) दकन की किसी ज़बान का लफ़्ज़, जो वहाँ आमतौर से छोटी और बड़ी दोनों क़िस्म की पतीली के लिये बोला जाता है। उर्दू ज़बान और खुसूसन शिमाली हिन्द में इस लफ़्ज़ का मफ़हूम सीधी बाड़ और चपटे पेंदे की पतीली के लियें मख़सूस हो गया है। जो जदीद और गैर–मुल्की वज़अ़ में शुमार होती है।

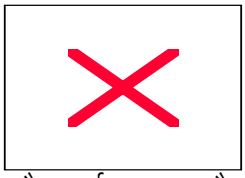

बिंगा (पु0) **देखें** इकवाई।

भाकन (स्त्री) थाली। रोटी रखने का बर्तन (मर्हटी में रोटी को भाकरया कहते हैं। इसी वजह से दकन में यह लफ़्ज़ अक्सर मुक़ामात पर बोला जाता है।

भांढा (पु0) अवाम की ज़रूरत के मामूली मोटे और भद्दे हर क़िस्म के बर्तन उर्दू बोल–चाल में इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल बर्तन के साथ होता है, अलाहिदा नहीं बोला जाता और इसके मफ़हूम में

मिट्टी के वह बर्तन दाखिल हैं, जो खाने–पीने की ज़ुरुरियात में काम आते हैं।

जब नाइक तन का निकल गया तो मुल्कों–मुल्कों बांढा है।
फिर भांढा है न डांडा है न हल्वा है न मांढा है।। नज़ीर।

पाईन (स्त्री) दो रूख़ी आड़। ठटेरे का इकवाई की क़िस्म का दो रुख़ा आहनी औज़ार। जिसका एक मुँह चपटा और नोंकदार होता है, जिसपर बर्तन की गोलाई दुरुस्त की जाती है।

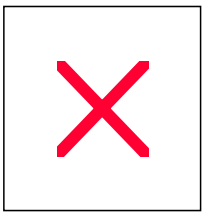

पतीला (पु0) देगचः (देग्चा) खुले मुँह और फैले हुए पेट का सालन वग़ैरा पकाने का बड़ा बर्तन। रोज़मर्रा के इस्तेमाल का औसत दर्जे का पतीली कहलाता है। पतीला और देग़चा एक ही क़िस्म के बर्तन हैं। लेकिन इन की बनावट में थोड़ा फ़र्क़ है। इसीलिये उर्दू में इन दोनों लफ़्ज़ों के मफ़हूम में भी फर्क है। पतीला मज़कूर–उस–सदर शक्ल के लिए बोला जाता है और देग़चा छोटे मुँह के कोठीदार पतीले को कहते हैं, यानी जिसका पेट घेरदार हो। घेर को इस्तिलाह में कोठी कहते हैं। देग़चा, फारसी लफ़्ज़ देगचे का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ और देग़ (देग) का इस्मे मुसग्ग़र है।

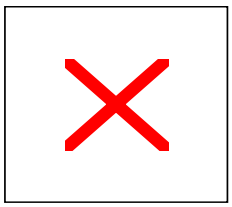

पतीली (स्त्री) देग़ची–पतीले का इस्मे मुसग्ग़र **देखें** पतीला।

पिटारी (स्त्री) खड़ी बाड़, चपटे पेंदे और बेलन की शक्ल का ढकनेदार बर्तन। उर्दू में पिटारी का लफ़्ज़ पानदान के लिये मख़सूस हो गया है और मज़कूर–उस–सदर क़िस्म का बर्तन आमतौर से कुल्फ़ी कहलाता है। जो छोटा–बड़ा और मुख़्तलिफ़ शक्ल का बनाया जाता है।

परात (पु0) देखें तस्ला।

जहाँ देखी थाली परात।
वहाँ काटी सारी रात।।

प्याला (पु0) कटोरा। खुलेमुँह का गोल और गहरा खाने–पीने की पानीदार पतली क़िस्म की चीज़ों के इस्तेमाल का बर्तन। मेअ़यारी उर्दू में मिट्टी और चीनी का बना हुआ प्याला और धात का बना हुआ कटोरा कहलाता है। प्याले और कटोरे के मफ़हूम में उनकी बनावट को भी दख़ल है। प्याले का पेंदा मुँह की निस्बत तंग और सिकुड़ा हुआ होता है। बरख़िलाफ़ इसके कटोरे का पेंदा मुँह की तरह खुला और फैला हुआ होता है। मामूल से छोटा प्याली कहलाता है।

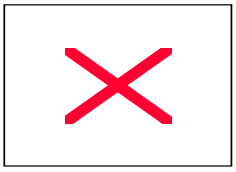

प्याली (स्त्री) प्याले का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** प्याला।

तामबट/ताँबट (पु0) तांबे वग़ैरा के बर्तन गढ़ने वाला कारीगर। तफ़सील के लिये, **देखें** कसेरा।

तामडकुण्ड (पु0) कटोरे की शक्ल का ताँबे का कूंडा।

ताम्लोट/तामलैट (पु0) तांबिया, तम्बिया, ताँबे का लोटा। लोटे की क़िस्म का बर्तन, **देखें** लोटा।

ताम्हान/तम्हान (पु0) देखें तस्ला।

ताँबिया, तम्बिया (पु0) देखें तामलोट।

ततेड़ा (पु0) संस्कृत तप्ताकरा। पानी गरम करने का तंग मुँह का ठिलिया की वज़अ़ का पीतल या ताँबे का बना हुआ ज़र्फ़। मुसलमानों में आमतौर से ताँबे का बना हुआ इस्तेमाल किया जाता है। औसत दर्जे और रोज़मर्रा के इस्तेमाल का ततेड़ी कहलाता है। ततेड़ा और ततेड़ी संस्कृत लफ़्ज का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ है। देहली में खुसूसन और शिमाली हिन्द में अ़मूमन मुसलमान ततेड़ी बोलते हैं। हिन्दू अवाम कलसा कहते हैं। जिसका इस्मे मुसग्ग़र कसैंडी है। वस्त हिन्द में गागर कहलाता है। जिसका इस्मे मुसग्ग़र गगरी है।

मैं आया था नद्दी के इस घाट पर।
कि गागर में जल भर के ले जाऊँगा घर।। (शाद)

ततेड़ी (स्त्री) ततेड़े का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** ततेड़ा।

तस्ला (पु0) परात, लगन। बाड़दार यानी उठे हुये किनारों का कूंडे की वज़अ़ का बर्तन। अ़रबी लफ़्ज़ तश्त का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ है,

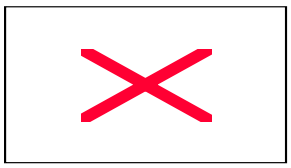

जो आ़मतौर से हर जगह बोला जाता है। हिन्दी में परात और फ़ारसी में लगन कहते हैं। लगन और परात एक ही क़िस्म के बर्तनों का नाम है। लेकिन उनकी वज़ अ़ में किसी कदर फ़र्क होता है। उर्दू में तसले का मफ़हूम परात और लगन से बिल्कुल जुदा है। तस्ला या तश्त छोटी क़िस्म और मामूली जुरूरियात के इस्तेमाल का बर्तन कहलाता है। बरखिलाफ उसके लगन और परात बहुत कुशादह और ज़्यादा बड़ी जुरूरतों में काम आते हैं।

तिलयार (पु0) देखें कसेरा।

तौंबिया (पु0) देखें ढोंगा।

थाल (पु0) सीनी का मुतरादिफ़ लफ़्ज़। तफ़सील के लिए, **देखें** सीनी।

थाली (स्त्री) थाल का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** थाल।

टट्राल (पु0) बर्तनों की गोलाई दुरुस्त करने का ठटेरे का गोल मुँह का हथौड़ा।

ठाँस (स्त्री) बर्तन के मुँह की कोर की मुडाई, जो पलटाकर दबा दी जाती है ताकि किनारा मोटा मालूम हो और पक्का हो जाये।

ठाँसना (क्रिया) कोर को मोड़कर दबा देना ताकि किनारा मज़बूत हो जाये और धारदार न रहे। आमतौर से किश्ती, सीनी और इसी क़िस्म के बर्तनों की कोर ठाँस दी जाती है, यानी मोड़कर दबा दी जाती है।

ठटेरा (पु0) संस्कृत सथारा। गढ़कर ताँबे, पीतल के बर्तन बनाने वाला कारीगर। तफ़सील के लिए **देखें** कसेरा।

चगुन (पु0) समावार। चाय दम करने का बर्तन।

चिलम्ची/सिलप्ची (स्त्री) तुर्की लफ़्ज़ चिलाप्ची का उर्दू तलफ़्फ़ुज़, जिसको बाज़ लोग ग़लती से सिलप्ची कहते हैं। तश्त या तस्ले की क़िस्म का बर्तन। देहली और नवाहे–देहली में आ़मतौर से चिलम्ची कहलाता है, जो अमूमन कोठीदार बनाया जाता हैं खड़ीबाड़ का

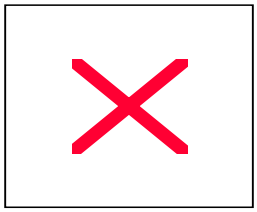

तश्त कहलाता है। चिलम्ची के मुँह पर जालीदार ढ़कना होता है, जो तश्त के लिये जुरूरी नहीं है।

चम्बू (पु0) देखें ढोंगा।

चम्चा (पु0) संस्कृत कूसा, फारसी काशुक। खाना वगैरा एक बर्तन से दूसरे बर्तन में निकालने, दूध, शर्बत, चाय और दूसरी क़िस्म की पतली ग़िज़ा खाने–पीने के लिए सीप के शक्ल का दस्तीदार ज़र्फ़। हस्बे जुरूरत छोटे बड़े मुख़्तलिफ़ शक्ल के बनाये जाते हैं।

चौरस इक्वाई (स्त्री) देखें इक्वाई।

चौर्सा (पु0) बर्तन की सतह हमवार करने का ठटेरे का चपटे मुँह का हथौड़ा।

खोन/ख्वान (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। सीनी या थाल की क़िस्म का ज़र्फ़। **देखें** सीनी। उर्दू में खोन का लफ़्ज़ लकड़ी के बने हुए के लिए मख़्सूस है, लेकिन लफ़्ज़ सीनी और परात में धात का बना होना मफ़हूम होता है।

खोंचा/ख्वांचा (पु0) खोन का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** खोन।

दड़ी (स्त्री) ठटेरे का टेढ़े मुँह का हथौड़े की क़िस्म का औज़ार उर्फ़न ठरी कहलाता है और गोल मुँह के सीधे औज़ार मेख़ कहलाते हैं।

दो रुखी आड़ (स्त्री) देखें पाईंन।

देग/देग (स्त्री) देखें पतीला।

देग्चा/देगचा (पु0) देग़ (देग) का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** पतीला।

देग्ची/देगची (स्त्री) पतीली मामूल से छोटा देग़चा।

डबक (स्त्री) देखें मोच।

डबोलिया (पु0) देखें ढोंगा।

डुंगिया (स्त्री) ढोंगे का इस्मे मुसग्गर। **देखें** ढोंगा।

डोंगा (पु0) तौंबिया, चम्बू, ढबोलिया, गुड्आ। किसी बड़े बर्तन से पानी निकालने का कोठीदार प्याले की शक्ल का ज़र्फ़ मुख़्तलिफ़ शक्ल का हस्बेजुरूरत छोटा बड़ा हर क़िस्म की धात का बनाया जाता है। नारियल का खोल और तोंबा भी

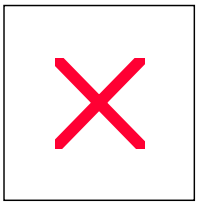

इस ज़रूरत के लिए काम में लाया जाता है। मज़कूर–उस–सदर इस्तिलाही नाम मुक़ामी बोलियों के हैं। ढोंगे का लफ़्ज़ आम है, जो हर जगह बोला और समझा जाता है।

डोई (स्त्री) देखें कफ़गीर।

रकाबी (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ रिकाब बमानी छोटी किश्ती का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। खाना खाने का गोल घेरेदार उथल्वाँ सतह का बर्तन। जिसका क़ुत्र कम से कम आठ और ज़्यादा से ज़्यादा बारह इंच का होता है। मिट्टी चीनी और हर क़िस्म की धात का हस्बेज़रूरत छोटा बड़ा और मुख़्तलिफ़ नमूनों का बनाया जाता है।

सब्री (स्त्री) सब्बल का इस्मे मुसग्ग़र। (**देखें** सब्बल पेशा–ए–बेलदारी जिल्द अव्वल) पु0 तलफ़्फ़ुज़ में 'ल' 'र' से बदल गया है। ठटेरे का हथौड़े की क़िस्म का आहनी औज़ार जो बर्तनों के गड़ने, गढ़े, गोमड़े निकालने और गोलाई दुरूस्त करने के लिए हसबेज़रूरत टेढ़े, आड़े और गोल मुँह के होते हैं। फ़ारसी लफ़्ज़ सुम्बा दकन में सब्बल और शिमाली हिन्द में ठटेरों की इस्तिलाह में सब्री हो गया।

सरपोश (पु0) रकाबी, तबाक और प्याले वग़ैरा का कुब्बेनुमा ढकना।

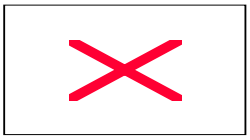

सिलप्ची (स्त्री) देखें चिलम्ची।

समावार (पु0) चकुन। चाय दम करने का अंगीठीदार जर्फ़ या चाय का पानी गर्म करने का ज़र्फ़।

सीनी (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ सहनक का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ आमतौर से हर जगह बोला और समझा जाता है। हमवार सतह का किनारे उभरा हुआ गोल ज़र्फ़ दो फुट से तीन फुट क़ुत्र तक बनाया जाता है। हिन्दी में थाल और फ़ारसी में ख़्वान कहते हैं। लेकिन उर्दू में खोन का मफ़हूम सीनी से जुदा है। **देखें** खोन।

त़बाक़ (पु0) अरबी लफ़्ज़ तबक़ बमानी ढ़कना का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ सीनी और रकाबी का दरमियानी बर्तन, यानी जो सीनी से छोटा और रकाबी से बड़ा हो। इस्तिलाह में त़बाक़ कहलाता है।

त़श्त (पु0) देखें तस्ला।

त़श्तरी (स्त्री) तश्त का इस्मे मुसग्ग़र लेकिन उर्फ़े आ़म में मामूल से छोटी रकाबी जिसका क़ुत्र तीन इंच से छः इंच तक हो तश्तरी कहलाती है। **देखें** रकाबी।

ग़ोरी (स्त्री) खड़े किनारों की शोरबादार सालन खाने की रकाबी। यह लफ़्ज़ खास देहली और नवाहे–देहली में बोला जाता है।

चित्र–ग़ोरी

क़ाब (स्त्री) तुर्की लफ़्ज़ और त़बाक़ का मुतरादिफ़ है। **देखें** त़बाक़ मामूल से बड़ी रकाबी।

कुल्फ़ी (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ कुफ़्ली का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। ढकनेदार पिटारी की वज़अ़ का बर्तन। **देखें** पिटारी।

काँटा (पु0) सहशाख़ा पंजे की शक्ल का चम्चा। अहले यूरोप की ईजाद और उनके खाने के तरीके में हाथ की उंगलियाँ का काम देता है।

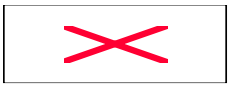

कतिया (पु0) धात की चादर काटने की कैंची।

कडा/कठरा (पु0) लकड़ी का बना हुआ कूंडा या लगनी।

कटरी/कठरी (स्त्री) कटरे का इस्मे मुसग्ग़र **देखें** कटरा।

कटोरा (पु0) कुशादह मुँह और फैले हुये पेंदे का प्याले की क़िस्म का ज़र्फ़। बाज़ लोग कटोरे को कंवल का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ बताते हैं और बाज़ का ख्याल है कि कटोरा काठ बमानी लकड़ी से बना है। तफ़्सील के लिये **देखें** प्याला।

कुठिलाना (क्रिया) बर्तन का पेट गोलाना यानी उसका गोलाईदार हिस्सा गढ़ना जैसे–लोटे का पेट या पतीली का पेंदा वगैरा। **देखें** कुठील्ना।

कुठील्ना (पु0) बर्तनों की गोलाई गढ़ने का मुढ्ढी की शक्ल का लकड़ी का ठीया या औज़ार। धात की चादर की हमवार सतह को गढ़कर हस्बे–ज़रूरत गहरा या गोलाईदार बनाना।

कर्छा (पु0) रौगन दाग, घी गरम करने या बघार तैयार करने का प्याले की शक्ल का दस्तेदार ज़र्फ़ आमज़ुरूरत के लिए चार–पाँच इंच कुत्र का बनाया जाता है।

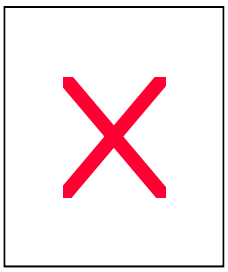

कर्छी (स्त्री) कर्छे का इस्मे मुसग्ग़र **देखें** कर्छा।

कसेरा (पु0) संस्कृत कांस्य। ताम्बट, तिल्यार, कनसार। कांस्य और कनसार बज़ाहिर एक ही लफ़्ज़ के दो तलफ़्फ़ुज़ है, जो शिमाली हिन्द में कसोरे के नाम से मशहूर है और ताँबे, पीतल के बर्तनों के व्यापारी या ताजिर के लिये बोला जाता है। बर्तन बनाने वाले कारीगर ठटेरे और ढलय्ये के नामों से मअरूफ़ है। नाम की तरह उनके काम भी जुदा हैं। जिनकी तफ़सील उन अल्फ़ाज़ के तहत लिखी गयी है। कनसार या कानसार जिसको बाज़ मुकाम पर ताम्बट और तिलयार भी कहते हैं। दरअसल बंगाल के इलाक़े बिलौरी मुत्तसिल पूर्निया की रहने वाली एक जाति का नाम है, जिसका आबाई पेशा ताँबे, पीतल के बर्तन गढ़कर या ढालकर बनाना है। कनसार या कानसार का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ कसेरा है, जो मज़कूर–उस–सदर मफ़हूम के लिए बोला जाता है।

कसैंडी (स्त्री) संस्कृत कलशी। कल्से का इस्मे मुसग्ग़र **देखें** कल्सा और ततेड़ा।

किश्ती (स्त्री) बैज़वी शक्ल की सीनी। तफ़सील के लिए **देखें** सीनी।

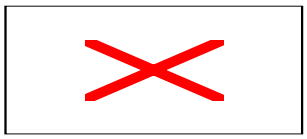

कफ़्गीर (पु0) ढोई। खाना पकाने की ज़ुरूरत का बड़ी क़िस्म का चमचे की वज़अ़ का ज़र्फ़ औसत दर्जे की हाथ की हथेली के बराबर और उसके हमशक्ल होता है। उर्दू में लफ़्ज़ ढोई लकड़ी के बने हुए कफ़्गीर के लिए मख़सूस है।

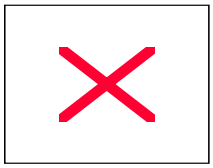

कफ़्गीरी (स्त्री) कफ़्गीर का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** कफ़्गीर।

कल्सा (पु0) गगरा। **देखें** ततेड़ा।

कन्सार/कानसार (पु0) देखें कसेरा।

कंवल कटोरा (पु0) कंवल की शक्ल का फैले मुँह का कटोरा। **देखें** कटोरा।

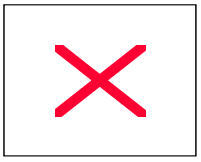

कोठी (स्त्री) देखें पतीला।

कोठीदार पतीला (पु0) ऐसा देग़चा जिसका मुँह छोटा और पेट घेरदार हो। **देखें** तस्वीर पे0–30।

कूसा (पु0) देखें चम्चा।

खरूआ/खरौल (पु0, स्त्री) बर्तन का सब्री की क़िस्म का औज़ार। **देखें** सब्री। संस्कृत खुरा।

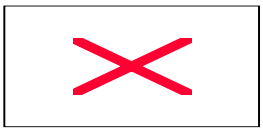

गागर (पु0) देखें ततेड़ा।

गुड़ूआ (पु0) देखें ढोंगा।

गगरा/गगरिया (पु0, स्त्री) संस्कृत गुरगुरी, गागर का इस्मे मुसग्ग़र।

मैं आया था नद्दी के इस घाट पर।
कि गागर में जल भर के ले जाऊँ घर।।

ग्लास/गिलास (पु0) देखें आबख़ोरह। पेशा–ए–कुम्हार। पृ0

गुल मूआ (पु0) ठटेरे का लम्बोतरे मुँह का हथौड़ा जिससे पतरे की सतह में गहराई बनाई जाती है।

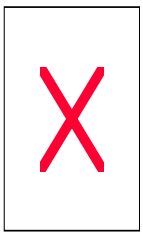

गुलमुई (स्त्री) गुलमूये का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** गुलमूआ।

गंगासागर (पु0) देखें आफ़ताबा।

लगन (पु0) देखें तसला।

लग्नी (स्त्री) लगन का इस्मे मुसग्ग़र।

लोटा (पु0) हाथ मुँह धोने और इसी क़िस्म की दूसरी ज़ुरूरियात में पानी के इस्तेमाल के लिए एक क़िस्म का ज़रूफ़ जिसमें डेढ़, दो सेर पानी आ जाय। मुसलमानों में टोंटीदार और हिन्दुओं में बग़ैर टोंटी का मुरव्विज़ है। हिन्दुस्तान में टोंटीदार लोटा मुसलमानों की ईज़ाद है।

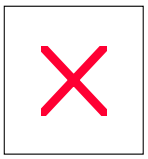

लुटिया (स्त्री) लोटे का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** लोटा।
मठार (पु0) बर्तन की सतह पर गढ़ाई का निशान, जो हथौड़े की ज़र्ब से पड़ जाता है।
मठारना (क्रिया) बर्तन की सतह को हथौड़े की ज़र्ब से हसबेज़ुरूरत मौज़ूं करना यानी सुडौल बनाना।
मोच (स्त्री) ढबक, तांबे, पीतल या दूसरी किसी धात के बर्तन का गड़हा, जो गिरने या किसी चीज़ की ज़र्ब लगने से पड़ जाय। **आना, पड़ना, निकलना** के साथ बोला जाता है।
मोचना (पु0) मोच दुरूस्त करने का ठटेरे का औज़ार, जो सब्री की क़िस्म का होता है। **देखें** मोच।
नक़्शीं बर्तन (पु0) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खूबसूरत और खुशवज़अ नक़श चिते हुये बर्तन।
नालक (पु0) ताँबे, पीतल के टूटे, फूटे, नाकारा बर्तन जिनकी मरम्मत और दुरुस्ती न हो सके।

ख मुलम्मअ़कारी

6 पेशा–ए–वरक़ या पन्नी साज़ी

अद्ढी (स्त्री) वरक़साज़ के काम करने की तिपाई।
आड़ी बनाना (क्रिया) वरक़ तैयार करने के लिए चाँदी या सोने की सवा इंच लम्बी, पौन इंच चौड़ी काग़ज़ जैसी पतली पन्नी का हस्बेज़ुरूरत दुरुस्त करना और इसके टुकड़े काटना।
आल्गा (पु0) वरक़ बनाने के लिए एक तोला चाँदी की 21 फुट लम्बी और पौन इंच चौड़ी तैयार की हुई पट्टी।
बुलबुली (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म के चमड़े की बनी हुई वरक़ कूटने की थैली। वरक़ कूटने की थैली का चमड़ा।
पन्नी (स्त्री) ताँबे, पीतल, जस्ता सीसे का तैयार किया हुआ पतला वरक़, जो आराइश और इसी क़िस्म के और कामों में लगाया जाता है।
पन्नीसाज़ (पु0) पन्नी बनाने वाला कारीगर।
पोर्वा (पु0) बंदी, कच्का। वरक़ साज़ों का उंगली की पोर का चमड़े का ग़िलाफ़, जो वरक़ की उलट–पुलट करते वक्त कारीगर उंगली पर चढ़ा लेता है ताकि वरक़ उंगली को न लगे।
पुश्ती (स्त्री) देखें थडा।
पौंच्ना (पु0) वरक़ कूटने की सैल खरी की थैली। **फेरना** के साथ बोला जाता है।
पहनाई (स्त्री) वरक़ कूटने की मामूल से बड़ी थैली।
फल्वा (पु0) काम के दौरान में वरक़ को उलट–पुलट करने की एक उंगल चौड़ी पतली और लचकदार फौलादी पट्टी।
फेर कूटना (क्रिया) चौफेरी कुटाई। वरक़ों की थैली की यकसाँ चौतरफा कुटाई करना। इस अ़मल को कारीगरों की इस्तिलाह में हमला कहते हैं।
तोल (स्त्री) वरक़ों का चूरा जो गिनती में न आये और तोल से शुमार किया जाये। कारोबारी ज़बान में तोल कहलाता है।
थड़ा (पु0) पुश्ती। चमड़े की गद्दी जो वरक़ कूटने की थैली के अन्दर छिल्लियों की हिफ़ाज़त को ऊपर नीचे रखी जाती है।
टीआ (पु0) वरक़ कूटने की चर्मी थैली, जिसमें वरक़ रखने की झिल्लियाँ और उनकी हिफ़ाज़त की चर्मी गद्दी भी शामिल है।

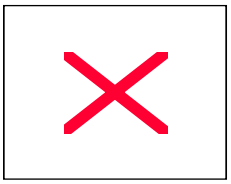

लफ़्ज़ टिया ग़ालिबन ठिया का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है। पुराने कारीगर इस थैली को दफ़्ती या कजकू कहते हैं। कजकू फारसी लफ़्ज़ कजकोल का इस्मे मुसग्ग़र है।
टीप (स्त्री) पत्थर की सिल, जिसपर वरक़ की थैली कूटी जाती है।
ज़ुट (स्त्री) तैयार वरक़ों की ख़ास तरीक़े से तह ब–तह जमाई हुई गड्डी। **बनाना** के साथ बोला जाता है।
हमला (पु0) देखें फेर कूटना।
दफ़्तरी (स्त्री) देखें टीआ।
ज़रकोब (पु0) देखें वरक़साज़।
कजकू (पु0) कजकोल का इस्मे मुसग्ग़र। **देखें** टिआ।
गिरह (स्त्री) बे क़ाइदा कुटाई से वरक़ की सतह, जो कहीं कहीं मोटी रह जाती है। वह इस्तिलाह

में गिरह कहलाती है। **पड़ना** वरक़ का कुटाई में कहीं–कहीं मोटा रह जाना।

लट (स्त्री) वरक़ के पत्रे कुटाई से जो फैलाव शुरू होता है। इस्तिलाह में लट कहते हैं। **चलना** कुटाई के अ़मल से वरक़ में फैलाव शुरू होना।

मुक्वा/मुख्वा (पु0) देखें मकोल।

मकोल/मुखओल (पु0) सैल खरी और चाक से तैयार किया हुआ निहायत बारीक और चिकना सफूफ़ जिससे झिल्लियों को जिसमें वरक़ रहता है, चिकनाते हैं।

निमकारा (पु0) चाँदी या सोने की पतली तैयार की हुई पट्टी का एक वरक़ बनाने के लायक काटा हुआ टुकड़ा। कारीगर अमूमन जमअ़ का सीगा (निमकारे) बोलते हैं। **लगाना** निमकारों को झिल्लियों के अन्दर जमाना।

वरक़ (पु0) चाँदी या सोने की निहायत बारीक झिल्ली की मानिंद एक मुक़र्ररिह मिक़दार की तैयार की हुई पन्नी जो मुलम्माकारी और दवा में इस्तेमाल की जाती है।

हिंगी (स्त्री) वरक़ कूटने की मुस्तामिला और नाकारा छिल्ली जिसमें कुटाई से बारीक सूराख़ पड़ गये हों।

7 पेशा–ए–कोफ्तकारी

पच्चीकारी (स्त्री) देखें कोफ्तकारी।

तहनिशान (पु0) बर्तन की सतह पर फौलादी क़लम से खोदे हुए फूल–पत्ती के कटाव, जो कोफ्तकारी में सोने चाँदी का तार बिठाने को किया जाता है। **करना** के साथ बोला जाता है।

चाँदी छापना (क्रिया) देखें ज़रबुलंद।

ज़रबुलंद (पु0) करता बेदी। कोफ्तकारी की एक क़िस्म जिसमें सोने या चाँदी के वरक़ को बर्तन पर जमा कर इसमें फूल–बूटे काटे जाते हैं और आहनी क़लम की नोंक से उनकी कोरों की सतह में पैवस्त किया जाता है। इस अ़मल से फूल–बर्तन की सतह पर उभरे हुए मालूम होते हैं। कोफ्तकारी के इस अ़मल को आम कारीगर चाँदी छापना और सोना छापना भी कहते हैं। **देखें** कोफ्तकारी।

सलाई (स्त्री) कोफ्तकार की तह निशान बनाने की फौलादी क़लम।

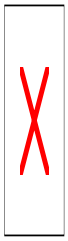

सोना छापना (क्रिया) देखें ज़रबुलंद।

ग़र्की (स्त्री) देखें कोफ्तकारी।

क़लमकारी (स्त्री) देखें कोफ्तकारी।

करताबेदी (पु0) देखें ज़रबुलंद।

कोफ्त (स्त्री) खुदान। बर्तन की सतह पर फौलादी क़लम की नोंक से फूल पत्ते खोदने का अ़मल।

कोफ्तकारी (स्त्री) बर्तनों पर सोने या चाँदी का नक़शी काम बनाने की सिनअत, जो पच्चीकारी, गर्की, क़लमकारी, ज़रबुलंद और करता बेदी वगैरा नामों से मौसूम किया जाता है। पहले तीनों नाम ऐसी कोफ्तकारी के लिए बोले जाते हैं जिसमें बर्तन की सतह पर क़लम से फूल–पत्तों के कटाव बनाकर उसमें सोने या चाँदी का तार बिठाकर बर्तन की सतह के साथ एकजान कर दिया जाता है। आखिर के दो नाम ऐसी कोफ्तकारी के लिए हैं, जिसकी तश्रीह लफ्ज़ ज़र बुलंद के तहत की गयी है। इस तरीक़े में मेहनत कम करनी पड़ती है और माल अद्ना लगाया जाता है। किसी ज़माने में इस काम के लिए बेदर और लखनऊ ख़ास तौर से मशहूर थे।

खुदान (स्त्री) देखें कोफ्त।

गंगाजमुनी कोफ्त (स्त्री) सुनहरी और रूपहली मिलवाँ कोफ्तकारी। **देखें** कोफ्तकारी।

वर्क़ छापना (क्रिया) बर्तन की सतह पर चाँदी या सोने का वरक़ जमा कर इसमें फूल–पत्ते काटना। इस अ़मल को चाँदी और सोना छापना भी कहते हैं।

8 पेशा–ए–क़लई गिरी। (मुलम्मअ़कारी)

बद क़लई बर्तन (पु0) खराब कलई का बर्तन। उतरी या उड़ी हुई क़लई का बर्तन।

बर्तन बुझाना (क्रिया) मैले और बद क़लई बर्तन को निखारने के लिए तेज़ाब में डालना।

बिनका (पु0) देखें क़लई।

पारा देना (क्रिया) ताँबे या पीतल के बर्तन पर मुलम्मअ़ के लिए सोने या चाँदी का वरक़ चढ़ाने

से क़ब्ल मुर्दा पारे का पुचारा फेरना, इस अ़मल से वरक़ बर्तन की सतह पर जज़्ब हो जाता है। **़उड़ाना, उतारना** पारे के असर को बर्तन से मिटाना।

पाई (स्त्री) क़लई करने से पहले रेत वग़ैरा से रगड़कर बर्तन की मंझाई। **करना** के साथ बोला जाता है।

ठंडा मुलम्मअ़ (पु0) देखें मुलम्मअ़।

जुटाई (स्त्री) देखें जुटाई करना।

जुटाई करना (क्रिया) बर्तन पर मुलम्मअ़ के लिए सोने या चाँदी का वरक़ चढ़ाना, जो पारे की लाग से सतह पर वस्ल हो जाता है।

जिग्री करना (क्रिया) बर्तन की सतह के इस मैल को ऐसा साफ करना कि उसपर मैलेपन का कोई असर बाक़ी न रहे।

झाला (पु0) धब्बा या मैला निशान, जो मुलम्मअ़ पर आ जाये। यह सूरत सफाई यानी जिग्री करने में नुक़स रह जाने से पैदा होती है। क्योंकि जिस जगह मैलापन रह जाता है। वहाँ वरक़ ज़ज़्ब नहीं होता और जिला में निकल जाता है। **पड़ना, आना** के साथ बोला जाता है।

राँगा (पु0) देखें क़लई।

क़लई (स्त्री) राँग, बिंका। चाँदी से मिलती–जुलती एक धात, जो ताँबे, पीतल के बर्तनों पर मुलम्मअ़ करने और मुरक्कब धात बनाने के काम आती है। **़करना, चढ़ाना, फेरना** बर्तन पर कलई का मुलम्मअ़ करना। पुचारा फेरना। **़उतरना, उतारना, उड़ना, उड़ाना** बर्तन की क़लई का मुलम्मअ़ निकल जाना या हस्बेज़रूरत मांझकर या तपाकर निकाल देना। पारे की क़लई जो मुरादाबाद में उमदा की जाती है। मुरादाबादी क़लई कहलाती है।

कलई चट (पु0) ऐसा बर्तन या उसका कोई हिस्सा जिसपर क़लई न चढ़े। ख्वाह सफाई के नुक़्स का सबब हो या धात की खराबी की वजह।

क़ल्ईदार बर्तन (पु0) क़लई का मुलम्मअ़ किया हुआ बर्तन।

क़ल्ईगर (पु0) बर्तनों पर क़ल्ई करने वाला कारीगर।

मुरादाबादी क़ल्ई (स्त्री) देखें क़ल्ई।

मुलम्मअ़ (पु0) ताँबे या पीतल के बर्तनों पर सोने या चाँदी की क़ल्ई। **करना** के साथ बोला जाता है। **पक्का मुलम्मअ़** मुलम्मअ़ करने का क़दीम तरीक़ा। जिसमें बर्तन की सतह पर सोने या चाँदी का वरक़ चढ़ाकर सतह के साथ वस्ल कर दिया जाता है या उस पर जिला कर दी जाती थी। यह मुलम्मअ़ निहायत पायदार होता था। लेकिन ज़दीद ईज़ाद ने इस तरीका–ए–कार को बिल्कुल खत्म कर दिया है। **ठंडा मुलम्मअ़** मुलम्मअ़कारी का ज़दीद तरीका जो चाँदी या सोने को तुर्शा कर यानी तेज़ाब में महलूल बनाकर बर्तन पर बतौर रंगत चढ़ाया जाता है। यह मुलम्मअ़ अगर चे आसानी से हर क़िस्म के बर्तन पर चढ़ जाता है। लेकिन नापायदार होता है। **़उड़ना, उड़ाना** ठंडे मुलम्मअ़ का फीका पड़ना या जाता रहना या उतारना। **़चाटना** किसी नुक़्स की वजह बर्तन के किसी हिस्से या पूरे बर्तन पर मुलम्मअ़ न चढ़ना, रंगत न आना। इस सूरत को कारीगरों की इस्तिलाह में बर्तन का मुलम्मअ़ चाटना कहलाता है।

मुलम्मअ़ कार (पु0) बर्तन वग़ैरा पर चाँदी या सोने का मुलम्मअ़ करने वाला कारीगर।

मुलम्मअ़कारी मुलम्मअ़ करने की सन्अत।

वर्क़ पीना (क्रिया) बर्तन का सोने या चाँदी का वरक़ या दूसरी सूरत में उस के महलूल को एक ख़ास मिक़दार तक जज़्ब करना, मुलम्मअ़ कारी में सोना या चाँदी मुक़र्ररिह मिक़दार से ज़्यादा नहीं चढ़ती। पक्की मुलम्मअ़कारी की सूरत में पप्ड़ा जाती है और रंगतकारी में महलूल में रह जाती है।

9 पेशा–ए–जिलाकारी।

आड़ी बादी (स्त्री) बर्तन को जिला करने का टेढ़े मुँह का फौलादी क़लम। **देखें** बादी।

बादल (पु0) झायीं। बर्तन की जिला के धब्बे, जो हरारत या नमी के असर से जिला की चमक में

परछायीं की तरह मालूम हो और जिला को बदनुमा कर दे। **आना** के साथ बोला जाता है।

बादी (स्त्री) बर्तन की सतह मुजल्ला करने यानी मुलम्मअ़ या क़लई को झमकाने का कलम की वज़अ़ का आहनी औज़ार, जो हस्बेज़रूरत

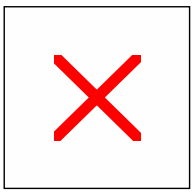

मुख़्तलिफ क़िस्म का होता है और उसी नौइय्यत से मौसूम किया जाता है। **कसना, घुलाना** बादी का मुँह घिसकर चिकनाना, मुजल्ला करना।

पोल्ची (स्त्री) ज़लन, घोटी, मुहारीं। जिलाकार का

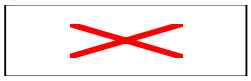

बर्तन पर जिला करने का औज़ार, जो एक चोबी हत्था होता है। जिसके मुँह पर अ़क़ीक़ लगा रहता है।

जिला (स्त्री) बर्तन की मुलम्मअ़ या कलई की चमक और चिकनाहट, जो औज़ार से रगड़कर पैदा की जाये। **करना** के साथ बोला जाता है।

जिलाकार (पु0) बर्तनों पर जिला करने वाला कारीगर। **देखें** जिला।

जिलाकारी (स्त्री) बर्तनों की क़ल्ई या मुलम्मअ़ पर चमक पैदा करने का अ़मल।

झायीं (स्त्री) देखें बादल।

ज़लन (स्त्री) जिला करने का मुजल्ला मुँह का आहनी औज़ार। जिससे तैयारी का हाथ फेरा जाता है। अरबी लफ़्ज़ ज़लक़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ है। **देखें** पोलची।

कसनी (स्त्री) जिला करने के आहनी औज़ार बादी वग़ैरा का मुँह

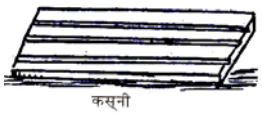

कसनी

साफ़ करने, चिकनाने और चमकाने की सिल्ली, जो हसबेज़रूरत लोहे, पत्थर या लकड़ी की होती है।

खड़ (स्त्री) देखें मानक रेत।

घोटी (स्त्री) देखें पोलची।

लछियाना (क्रिया) बर्तन के मुलम्मअ़ का पोथ (बारीक मसनूई मोतियों की लड़) से रगड़ना।

मानक (पु0) खड़। मानक पत्थर का सफ़ूफ़, जो मुलम्मअ़ के बर्तन को धोकर मुजल्ला करने के काम आता है।

मुहारी (स्त्री) मुहरा। **देखें** पोलची। **करना** के साथ बोला जाता है।

दूसरी फ़सल
बाज़ पेशेवर–खुराकी कमेरे
1 पेशा–ए–माहीगीरी

अर्रा (स्त्री) तेग़–ए–माही। आरी की शक्ल की लम्बी थूथनी वाली मछली।

अड़ंगा (पु0) ढाड़। मछली पकड़ने के काँटे के नोंकदार सिरे पर अन्दर के रुख़ ज़रा उठा हुआ नुकीला आँकड़ा, जो खाल में चुभ जाने के बाद काँटे की नोंक को बाहर निकलने नहीं देता। (तस्वीर के लिए **देखें** काँटा पे0 50।)

अखण्डा (पु0) चँदवा। मछली पकड़ने के लिए तालाब के किनारे उथले पानी में बनाया हुआ ऐसा गहरा गढ़ा जिसमें मछली आकर निकल न सके।

अंद्ला (पु0) बाम की क़िस्म की दरिया के किनारे कीचड़ में रहने वाली साँप की शक्ल की मछली। क़स्साब पिंढली के गोश्त को जो मज़कूर–उस–सदर मछली की शक्ल का होता है। अद्ला कहते हैं।

अंधा शिकार (पु0) मछली के शिकार को इस्तिलाह में अंधा शिकार कहते हैं। क्योंकि शिकार शिकारी की नज़र से ओझल पानी में रहता है।

अंड्वी/अंड्वारी (स्त्री) छोटी ज़ात की छिलकार मछली स्याही माइल चपटी शक्ल की और वज़न में बड़ी से बड़ी एक सेर से ज़्यादा नहीं होती।

ऐल (स्त्री) शिमाली समंदरों की बड़ी ज़ात की छिलकार मछली।

बाला (पु0) देखें हल्सा।

बाम (स्त्री) साँप की शक्ल से मिलती–जुलती काही रंग की मछली इसके जिल्द पर बारीक छिल्के और पीठ पर कंघीनुमा झालर, दुम तक फैली हुई और बड़ी से बड़ी एक गज़ लम्बी होती है।

बाम्चा चौड़े मुँह की बाम से मुशाबा नायाब मछली दरिया–ए–नील में कहीं–कहीं पाई जाती है और

चूँकि इसमें बर्क़ी कुव्वत होती है। इसलिये सिर्फ रेशमी जाल से पकड़ी जाती है।

बिजन/बिचन (स्त्री) थल। दरिया के किनारे की ऐसी दलदल जिसमें बाज़ अद्‌ना क़िस्म की मछलियाँ रहती हैं और आम मछलियाँ अंडे देती हैं।

बिच्वा (स्त्री) भिग्वा, पैंक्ड़ा। बिज्जू की शक्ल की नैलगूं स्याह माइल रंगत वाली बड़ी क़िस्म की छिल्कार मछली। ग्यारह–बारह सेर तक वज़नी और मुँह छिपकली जैसा होता है।

बिच्वासन (स्त्री) चकरिया जाल के बीच में बँधी हुई रस्सी जिससे जाल खींचा जाता है।

बम्च् (स्त्री) बगैर छिल्के और मूँछ की बाम की शक्ल की मछली। वज़न में बीस सेर तक होती है और फर्रों के नीचे काँटे होते हैं।

बंसी (स्त्री) ढंगी, लग्गी। मछली का शिकार खेलने की बांस की क़िस्म की लम्बी, पतली और मज़बूत छड, जो काँटे को किनारे से किसी कदर दूर पानी में तैरती रखती है।

बोसा (स्त्री) कटीला। बम्च् की क़िस्म की चौड़े मुँह, स्याह पेट और सुर्ख़ी माइल पीठ की बड़ी ज़ात की मछली। बड़ी से बड़ी तीस सेर तक वज़नी होती है।

बोली (स्त्री) चौड़े मुँह की समंदरी छोटी क़िस्म की मछली उसके दाँत बारीक और बराबर–बराबर बुर्श के मानिन्द होते हैं। जिनसे बाज़ सन्नाअ़ बुर्श का काम लेते हैं।

भाँगन (स्त्री) जिस्म की चपटी, रंग की सफेद, छोटी जात की बारीक छिल्कार मछली। ऊपर–नीचे कंघी जैसे–पर, वज़न में एक छटाँक से ज़्यादा नहीं होती।

भिग्वा (स्त्री) देखें बिचवा।

भँवर जाल/भाँवर जाल (पु0) बड़े ख़ानों का छोटा जाल, जो थोड़े पानी में इस्तेमाल किया जाता है।

भूड़ (स्त्री) भाँगन की क़िस्म की मछली वज़न में तोला दो तोला से ज़्यादा नहीं होती। **देखें** भाँगन।

भोंट (स्त्री) छिपकली की शक्ल का मगरमच्छ। **देखें** मगरमच्छ।

पार्चा (पु0) देखें मचान।

पातल (स्त्री) कछवे की एक छोटी ज़ात। **देखें** कछुआ।

पटिया जाल (पु0) वह जाल, जो पानी में दीवार की तरह सीधा खड़ा रहे और मछली को बहाव की तरफ जाने से रोके। इस के एक किनारे पर सीसे की गोलियाँ और उसके मुक़ाबिल के किनारे पर तोंबे बँधे होते हैं। सीसे की गोलियों वाला सिरा पानी के अन्दर उतर जाता है और तोंबों वाला सिरा पानी के अन्दर उतर जाता है और तोंबे वाला रुख़ पानी की सतह के बराबर रहता है। इस तरह पानी में जाल की दीवार बन जाती है।

पनचोरा (पु0) एक ख़ास क़िस्म का पानी में रहने वाला कीड़ा, जो मछली के अंडों को नुक़सान पहुँचाता है।

पनडुब्बा (पु0) पानी में डुबकी लगाकर मछली पकड़ने वाला शिकारी परिंदा।

पंड़ियास/पंढियास (स्त्री) मल्ली की क़िस्म की मछली बड़ी से बड़ी बीस–पचीस सेर वज़न तक की होती है। **देखें** मल्ली।

पौदा (पु0) मछली पकड़ने के काँटे का सरबंद जिसमें ढोरी बाँधी जाती है। तस्वीर के लिए। **देखें** बंसी पे0।

पोखर/पोखरी (स्त्री) डाबर, डब्रा। तालाब या दरिया के किनारों के करीब ऐसे गड्ढे जो पानी के चढ़ाव से भर जायें और जो मछलियाँ उसमें बह आयें वह वहीं रह जायें और आसानी से पकड़ी जा सकें।

पेप्टा/पप्टा (पु0) मल्ली की क़िस्म की छोटी ज़ात की मछली वज़न में ज्यादा से ज़्यादा पाव सेर की होती है और गोश्त चीनी के मानिंद सफेद होता है।

पैकार (पु0) मछली की मण्डी का दल्लाल।

पेंक्ड़ा देखें बिच्वा।

फुंगा (स्त्री) छोटी ज़ात की छिल्कार मछली वज़न में आध्–पाव तक होती है।

तरौना/तरौंडा (पु0) संस्कृत तरांडा बमानी तैरती हुई चीज़ जाल या मछली पकड़ने के काँटे के

साथ पानी के ऊपर तैरती रहने वाली शय, जो शिकारी को मछली के जाल या काँटे को छूने का इशारा दे। तस्वीर के लिए **देखें** बंसी।

तिखूंटिया जाल (पु0) बंद और उथले पानी में छोटी मछलियाँ पकड़ने का बाँस के तेह खूँटे पर बँधा हुआ जाल।

तेग़ (स्त्री) हंसिया। मछली की खाल छीलने और काँटे का छूरे की क़िस्म का किसी क़दर खमीदा तेज़ धारदार औज़ार।

तेग़–ए–माही (स्त्री) देखें अर्रा।

थल/थला (स्त्री) बिजन। मछली के बैठने या अंडे देने की जगह, जो वह पानी के किनारे दलदल या पत्थरों में बना लेती है।

टापा (पु0) चकरिया, किलका, खौर, लूका। चक्कर की शक्ल में बाँधा हुआ जाल जिसके किनारे सीसे की गोलियाँ बराबर–बराबर बँधी होती हैं। जब जाल को पानी पर फैला कर डालते हैं। तो सरपोश की तरह पानी में नीचे उतरता चला जाता है। उसके घेरे में जो मछली आ जाती है, वह बंद हो जाती है।

चित्र–टापा (चकरिया, किलका, खौर, लूका)

जाल (पु0) मछली या परिंद पकड़ने का मज़बूत डोरे का खानेदार बुना हुआ पल्ला, जो हस्बेज़रूरत छोटा, बड़ा, बारीक और मोटे खाने का होता है और मुख़्तलिफ़ नामों से मौसूम किया जाता है।

जुलाहा (पु0) लम्बी टाँगों के चूंटा की शक्ल का पानी का मकोड़ा, जो मछली के बहुत छोटे बच्चों का जो इब्तिदा में कीड़े की शक्ल होते हैं, शिकार करता है।

जल तुरई (स्त्री) मछली।

जलकर (पु0) जलकोरा। तालाब से मछलियाँ पकड़ने का महसूल।

जलकोरा (पु0) **देखें** जलकर।

झींगा (पु0) टिड्डे की शक्ल का आबी कीड़ा, जो एक इंच से एक बालिश्त, बल्कि इससे भी कुछ ज़्यादा बड़ा होता है। इसके बदन में हड्डी काँटा कुछ नहीं होता और मछली की तरह खाया जाता है।

चाल (स्त्री) भाँगन और भूड़ की क़िस्म की बहुत छोटी ज़ात की मछली इसका पेट सब्ज़ी माइल ज़र्द होता है। **देखें** भाँगन और भूड़।

चरीला (पु0) बड़ी मछली पकड़ने का बड़ी क़िस्म का जाल।

चकरिया (पु0) जाल की एक क़िस्म। **देखें** टापा।

चंद्वा (पु0) देखें अखण्डा।

चौसी (स्त्री) कुर्स, यानी गोल गित्तेनुमा शक्ल की मछली, जो शार्क मछली के सिर से चिपटी रहती है।

छिल्का (पु0) खप्रा। मछली की खाल के ऊपर अब्रक जैसे–गोल परत।

छिल्कार (स्त्री) छिल्केदार मछली यानी वह मछली जिस की खाल अब्रक की मानिन्द गोल छिल्कों से ढकी हो।

छिंगा (पु0) छोटे खानों का छोटी मछलियाँ पकड़ने का जाल।

छम्ना (स्त्री) पम्फ़िलिट। छोटी ज़ात की गोल, चपटी, तंगदहन और बे छिल्कार संदरी मछली। इसमें काँटा नहीं होता, सिर्फ रीढ़ की हड्डी होती है। गोश्त निहायत मज़ेदार होता है।

ख़राकी/ख़राखी (स्त्री) मोह। कुर्सा की क़िस्म की बड़ी ज़ात की मछली। वज़न में पन्द्रह–बीस सेर तक होती है। गोश्त कटीला यानी बहुत काँटेदार होता है।

दाम्चा (पु0) देखें मचान।

दरम्मा (स्त्री) छोटी ज़ात की छिल्कार मछली रंग हल्का सुर्ख़ी माइल और गोश्त सफेद होता है। बड़ी से बड़ी सेर सवा सेर तक वज़नी होती है।

दरिया कमाना (क्रिया) माही गीरी करना। मछेरे का पेशा करना।

दरय्या (पु0) दरियाई मछलियाँ पकड़ने वाला मछेरा।

दुम्बाला (पु0) मछली पकड़ने के काँटे का सीधा सिरा जिसमें पौदा बाँधा जाता है। **देखें** बंसी और तस्वीर।

धीवँर (पु0) देखें माहीगीर।

डाबर/डब्रा (पु0) देखें अखण्डा।

ढाड़ (स्त्री) देखें अडंगा।

ढंगी/ढगन (स्त्री) देखें बंसी।

रमोरा (स्त्री) एक क़िस्म की समंदरी मछली।

रुधेरा (पु0) बड़ी क़िस्म और बड़े ख़ानों का जाल।

रौना (पु0) सीसे का मंका या गोली जो जाल के किनारे थोड़े–थोड़े फासले पर वज़न के लिए बाँधा जाता है। जिनकी वजह से जाल पानी की तह में उतर जाता है। जमअ़ रौने **डालना, निकालना** के साथ बोला जाता है। तस्वीर के लिए **देखें** टापा।

रहू (स्त्री) बड़ी नस्ल की छिल्कार तंग दहन मछली ऊपर का जिस्म स्याही माइल भूरा गुलदार और नीचे का सफेद होता है। बड़ी से बड़ी बीस पच्चीस सेर तक वज़नी होती है और गोश्त ज़र्दी माइल सफेद खुश ज़ाइका होता है।

सालिमन (स्त्री) शिमाली समंदर और दरियाओं की छिल्कार औसत दर्जे की मछली, इसका गोश्त निहायत खुश ज़ाइक़ा होता है।

सिलंद/सिलंदा (स्त्री) बहुत छोटी नस्ल की उंगुश्तिया मछली। मछलियों के छोटे बच्चे, जो पानी के किनारे पर बाहम मिलकर तैरते हैं।

सींघाड़ा (स्त्री) बड़ी ज़ात की बेछिल्कार चप्टे और चौड़े मुँह की मछली ऊपर का जिस्म स्याह और नीचे का सुर्ख़ी माइल सफेद, पीठ पर झांवें की तरह की सख़्त टिकिया और एक लम्बा मोटे सुये जैसा काँटा होता है। बड़ी से बड़ी बीस–पचीस सेर वज़नी गोश्त बे काँटा और बग़ली परों के साथ काँटे होते हैं।

सँवल (स्त्री) मरल। मख़रूती जिस्म और औसत दर्ज़े की छिल्कार मछली, मुँह चिपटा, रंग स्याही माइल काही। गोश्त बे काँटा और खुश ज़ाइक़ा तालाब या नदी–नालों के कम गहरे और बंद पानी में रहती है।

सूसमार/सूँस (स्त्री) बड़ी ज़ात की सब्ज़ी माइल स्याह रंग, बे छिल्कार मछली इसके पहलुओं में परों की जगह छोटे–छोटे पंजे होते हैं। मुँह मगरमच्छ की मादा के मानिंद लम्बा और जिस्म गौंज मछली का सा होता है। इसके गोश्त से तेल निकाला जाता है।

सींगी (स्त्री) मल्ली की नस्ल की छोटी ज़ात वाली ज़र्दी माइल स्याह रंग और बे छिल्कार मछली बड़ी से बड़ी दो सेर तक वज़नी होती है। **देखें** मल्ली।

शेर माही (स्त्री) बहुत बड़ी ज़ात की समंदरी मछली, जिसका मुँह कबूतर के मुँह से मिलता–जुलता होता है। इसके गोश्त से तेल निकाला जाता है।

कुर्सा (स्त्री) छोटी ज़ात की बारीक छिल्कार, तंग दहन और चाँदी जैसे सफेद रंग की मछली, वज़न में ज़्यादा से ज़्यादा पाँच छटांक होती है।

काच्बा/काश्बा (स्त्री) दरिया–ए–गंगा की एक बड़ी ज़ात की मछली।

काँटा (पु0) मछली का शिकार करने का ख़ास वज़अ़ का बना हुआ तेज़ नोंक का फौलादी आँकड़ा। हसबेज़रूरत छोटा–बड़ा होता है, मछली के गोश्त के अन्दर की बारीक सुईयों जैसी हड्डियाँ। तस्वीर के लिए **देखें** बंसी।

कटीला (स्त्री) काँटेदार मछली, जिसके गोश्त में बहुत काँटे हों। कांटेदार मछली की एक क़िस्म का नाम। **देखें** बोसा।

कछुवा (पु0) मोंढ़ा, पातल। पानी का एक मशहूर जानवर जिसको बाज़ कौमें बतौर ग़िज़ा खाती हैं।

किल्का (पु0) देखें टापा।

कलौंच/कलौंट (स्त्री) सँवल की क़िस्म की मछली इसका रंग सँवल की निस्बत किसी क़दर काला होता है। **देखें** सँवल।

कंदी (स्त्री) छोटी मछलियाँ पकड़ने का जाल।

कंघी/कंगी (स्त्री) मछली की रीढ़ की हड्डी, जिसकी बग़लियों में दोतरफा कंघी के से दाँतेंदार काँटे होते हैं।

कव्वा (पु0) सूँस मछली का पट्ठा यानी नौ उम्र बच्चा। **देखें** सूँस।

केटर (स्त्री) छोटी ज़ात की बे छिल्कार सब्जी माइल सफेद रंग की मछली आध पाव तक वज़नी, पहलुओं और पुश्त पर परों के साथ काँटा होता है।

केक्ड़ा (पु0) कछवे की वज़अ का दरियाई जानवर बाज़ कौमें बतौर ग़िज़ा खाती हैं। बड़े से बड़ा तीन–चार इंच कुत्र का होता है।

खपरा (पु0) देखें छिल्का।

खरिया (स्त्री) छोटी मछलियाँ रखने की मछेरे की जालीदार बनी हुई मज़बूत थैली।

खौर/खूबर (पु0) देखें टापा।

गुच/गिल्ची (स्त्री) मछली के पेट की आलाइश। आँतें वगैरा।

गुचता/गुश्टा (पु0) गाँच मछली का पट्ठा।

सियाना बच्चा

गलफड़ा (पु0) मछली के जबड़े से मिला हुआ सिर के हिस्से के पीछे दोनों तरफ सुर्ख़ रंग का कंघीनुमा उज़्व, जो मछली के फेफड़े के बजाय होता है।

गौंज (स्त्री) बड़ी ज़ात की बे छिल्कार चप्टे और चौड़े मुँह की मछली। कई–कई मन वज़नी, गोश्त ज़र्द रंग और अद्ना क़िस्म का होता है। अंग्रेज़ी में शार्क और मछेरों में दरियाई हाथी के नाम से मअ़रूफ है।

घाघी/घोघ (पु0) महाजाल। बहुत बड़ी क़िस्म का और निहायत मज़बूत जाल, जो बड़ी और क़वी मछलियाँ पकड़ने के काम आवे। लफ्ज़ घाग बमानी बड़ा से घाघी इस्तिलाह बन गई है।

घड़ियाल (पु0) देखें मगरमच्छ।

लग्गी (स्त्री) ढंगी। **देखें** बंसी।

लँबाड़ा (पु0) जुनूबी हिन्द की एक खानाबदोश ज़ात, जो समंदर के किनारे रहती है और माहीगीरी का पेशा करती है।

लूका (पु0) देखें टापा।

माशेर/महाशेर (स्त्री) रहू की नस्ल की बड़ी ज़ात वाली सफेद रंग छिल्कार मछली। रंग, सुर्ख़ी माइल सफेद। सिर, बड़ा और गाव दुम। वज़न में दो मन तक होती है। जाड़ों में इसका रंग ज़र्द हो जाता है।

माहीगीर (पु0) मछवा, मछेरा, धींवर, लम्बाड़ा, मछलियाँ पकड़ने वाला पेशेवर मज़दूर।

मचान (पु0) पार्चा, दाम्चा। दरिया या तालाब के किनारे उथले पानी में सत्हे–आब से सात–आठ फुट बुलंद बल्ली या बांस का कैंचीनुमा बना हुआ मछली के शिकार खेलने का अड्डा।

मछली (स्त्री) जल तुरई, माही, मच्छी।

मछ्वा (पु0) देखें माहीगीर।

मच्छी भवन (स्त्री) मछलियाँ फरोख़्त करने की मण्डी।

मछेरा (पु0) देखें माहीगीर।

मुराक़/मुराक़ी (स्त्री) सुर्ख़ी माइल रंग की छिल्कार मछली वज़न में दस पंद्रह सेर तक होती है।

मरल (स्त्री) देखें सँवल।

मगोगोई (स्त्री) मगरमच्छ की मादा। **देखें** मगरमच्छ।

मगरमच्छ/मगर (पु0) घड़ियाल। भौंट निहायत खतरनाक मशहूर आबी जानवर, जो पानी में मछलियों का और खुश्की पर चढ़कर चौपाओं का शिकार कर लेता है। बाज़ बहुत बड़े–बड़े होते हैं।

मल्ली (स्त्री) बड़ी नस्ल की सफेद रंग नीलंगू कमर और चौड़े मुँह की बे छिल्कार मछली। गोश्त बे काँटे और वज़न में पाँच सेर तक होती है।

मोंढा (पु0) देखें कछुवा।

मोह (स्त्री) ख़राख़ी। कुर्सा की क़िस्म से बड़ी ज़ात की मछली, वज़न में पंद्रह–बीस सेर तक और गोश्त कँटीला होता है। **देखें** कुर्सा।

महा जाल (पु0) देखें घागी।

नरैन (स्त्री) रहू की क़िस्म की बड़ी ज़ात की मछली। इसका छिल्का बड़ा और वज़न बीस–पचीस सेर तक होता है। **देखें** रहू।

व्हेल (स्त्री) बहुत बड़ी ज़ात की समंदरी मछली, जिसकी चर्बी का तेल बहुत कारआमद होता है।

हसिया (पु0) देखें तेग़।

हिल्सा (स्त्री) बाला। दरिया–ए–सिंध की एक ख़ास क़िस्म की मछली।

हन्सी (पु0) एक क़िस्म का मख़रूती शक्ल का छोटी मछलियाँ पकड़ने का जाल। **देखें** तिखोटिया जाल।

2 पेशा–ए–चिड़ीमारी

अंडा/अंडे (पु0) बैज़:, ख़ाग। परिंदा की बच्चादानी मुर्गी के अंडे खुसूसन और दूसरे परिंदों के जिनका गोश्त खाया जाता है। अमूमन खुराक के तौर पर इस्तेमाल किये जाते हैं। **पर आना, होना** मादा परिंद के अंडे देने का वक़्त क़रीब आना। **बिठाना** पालतू परिंद के अंडे बच्चे निकलने को एक ख़ास वक़्त में मादा के नीचे रखना। **देना, छोड़ना** मादा परिंद के पेट से फ़ितरी तौर पर अंडा निकलना। **सेना** परिंदों का बच्चे निकालने के लिये अंडों को परों तले छिपाकर बैठना, ताकि परों की गरमाई से अंडे में बच्चा बने। **खुटक्ना** अंडे के छिल्के ज़र्ब लगकर चट्खना। अंडे के अंदर बच्चे की हरकत से छिल्के का तरख्ना। ठोंग या चोंच मारकर अंडे के छिल्के तोड़ना। **गंदा होना** अंडे के अंदर का माद्ह सड़ जाना।

अंडच (स्त्री) अंडों से पैदा होने वाले जानदार।

अँडौसी (पु0) अंडों पर आया हुआ या अंडे देता हुआ परिंद।

औंडा देखें पोटा।

बर्दा (स्त्री) परिंदों की एक बीमारी का नाम जिसमें उस के पर गिरे और पंजे सर्द रहते हैं। अरबी लफ़्ज़ बर्द बमानी सर्द होना से बर्दा इस्तिलाह बन गई।

बसेरा (पु0) परिंदों की शब ख़्वाबी, रात गुज़ारी, नींद, आराम। **करना, लेना** के साथ बोला जाता है।

बखारा (पु0) कोरंगा, ढाका। **देखें** पेशा–ए–टोकरी साज़ी। पृ0

बूंद मारना (क्रिया) नौगिरफ़्तार परिंद का मूक और वहशत में पिंजरे, जाल या फट्की से टकराना।

बीट (स्त्री) परिंदों के पेट का ख़रिज शुदह फ़ुज़ल:, गू। **करना** के साथ बोला जाता है।

भराना (क्रिया) परिंदों का नन्हें बच्चों को चोंच में चोंच डालकर ग़िज़ा खिलाना।

पालतू परिंद (पु0) वह परिंद, जो हिलाने से हिल मिल जाये और घरेलू बन जायें।

पामोज़ (पु0) वह परिंद जिनके पंजों पर, पर निकले हुये हों।

पर (पु0) परिंदों के उड़ने को बाजुओं में निकले हुये लम्बे और सख़्त तुक्के जिनके दोनों तरफ़ रेशेदार करारी झालर सी होती है। जिस्म को ढकने वाले किसी क़दर नर्म रेशों के पुर्ज़े। **तोल्ना** परिंद का उड़ने के लिए अपने बाजुओं को हरकत देने का क़सद करना। बाजू तान्ना। **झाड़ना** गर्द या पानी का असर दूर करने को परिंदों का परों को झटकना। पुराने पर गिराना। **छोड़ना** किसी बीमारी की वजह परिंद के बाजुओं के परों का लटक जाना, अपनी जगह से नीचे को उतरे रहना। **डालना, लटकाना** के साथ बोला जाता है। **खोलना** बाजू फैलाना, उड़ने को पर फैलना। **मारना** उड़ने के लिये या उड़ने में बाजुओं को हरकत देना। गुस्से में दुश्मन पर बाजू से हमला करना।

पर–ख़ोरा (पु0) अपने पर नोंचने, खाने वाला, ऐबदार परिंद।

पुर्ज़ा (पु0) देखें पर।

पर–क़ैंच (पु0) परकट। वह नया पकड़ा हुआ परिंद जिसके बाजू के पर कुतर दिये हों।

परैल (पु0) घने पर पुर्ज़े वाला परिंद, जो देखने में मोटा मगर जिस्म का दुबला और हल्का हो।

पंजाल (स्त्री) परिंद की अंडे की सफेदी जैसी बीट, जो उसके मेअ़दे की नाक़िस रतूबत और एक क़िस्म की बीमारी समझी जाती है।

पिंजरा (पु0) पाल्तू परिंदों के बंद रखने का जालदार बना हुआ पिटारा, जो लोहे के तार या बांस की तीलियों से हस्बे जुरूरत छोटा, बड़ा और मुख़्तलिफ़ वज़अ़ का बनाया जाता है।

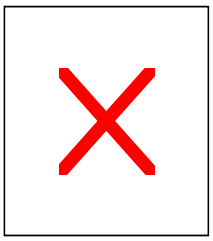

पोटा (पु0) परिंद के मेअदे की थैली, जो गर्दन की जड़ में सीने की सीब के सिरे पर होती है। जिसमें ग़िज़ा जमा होती है और वहाँ से आहिस्ता– आहिस्ता संगदानः में जाती है।

फटकी (स्त्री) छोटे परिंदों के पकड़ने का एक ख़ास तरह का बना हुआ टापा या पिटारा, जिसके मुँह का ढकना परिंद के अंदर दाखिल होते ही फट से बंद हो जाता है। फटकी के एक हिस्से में पले हुए परिंद बंद होते हैं, जिनको देखकर जंगली परिंद फटकी में दाख़िल हो जाता है। **लगाना** के साथ बोला जाता है। फटकीदार पिंजरा भी होता है। **देखें** तस्वीर पिंजरा। चिड़ीमार का नए पकड़े हुये जानवर बंद करने का टोकरा।

फुरेरी (स्त्री) परों की ख़ाक या पानी के असर के निकालने के लिए परिंद का पर फुलाकर झुरझुरी लेने का फेअ्ल। **लेना** के साथ बोला जाता है।

फड़फड़ाना (क्रिया) परिंद का वहशत या तकलीफ़ में उड़ने के लिए बे खुद होकर पर मारना। बाज़ू पटख़ारना।

फुल पैरा (पु0) देखें पामोज।

फंदा (पु0) जानवरों के पकड़ने का ताँत या किसी दूसरी क़िस्म की मज़बूत डोर का बना हुआ एक ख़ास वज़अ़ का हल्क़ा, बाज़ शिकारी हिरन और दूसरे छोटे जानवर भी फंदे से पकड़ते हैं। **डालना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

फूल (पु0) बाज़ परिंदों के अंडे से निकले हुए बच्चों की चोंच की नोंक पर की छोटी सी सख़्त घुंडी जो थोड़े दिनों बाद खुद–ब–खुद झड़ जाता है।

फूला (पु0) परिंदों की एक बीमारी का नाम जिसमें उसे जिस्म के तमाम पर फूले यानी उठे हुए रहते हैं और जानवर मर जाता है।

तल्वासना (पु0) परिंद के नीचे के पंजे की गद्दी।

तोरन (पु0) मस़नूई परिंद, जो जंगली परिंद के पकड़ने को धोखा देने के लिए जाल या फट्की पर बिठा दिया जाता है।

तह बैठना (क्रिया) परिंद का किसी ख़तरे से डरकर बचाव के लिए या बसेरा करने को इस तरह दबककर बैठना कि दिखाई न दे।

तैरना (क्रिया) जुफ़्ती की ख़्वाहिश में बाज़ परिंदों का पर फुलाकर झूमते हुए मादा के इर्द–गिर्द घूमना।

टापा (पु0) देखें पेशा–ए–टोकरी साज़ी। पृ0

ठोंग (स्त्री) परिंद की चोंच की मार, जो दुश्मन पर बतौर–ए– हमला या किसी चीज़ को तोड़ने के लिए लगई जाये। **मारना, लगाना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** काबुक में हाथ डालोगे तो कबूतर ठोंग मार देगा। **प्रयोग** कव्वे ने ठोंग मार कर अंडे को तोड़ दिया।

ठुंगियाना (क्रिया) परिंद पर किसी चीज़ पर मुतवातिर चोंच से ज़र्ब लगाना। चोंचे मारना।

जाल (पु0) देखें पेशा–ए–माहीगीरी। पृ0

झपट्टा (पु0) शिकारी परिंद का अपने शिकार या खाने की चीज़ के उचकने को लपककर यानी तेज़ी और फुर्ती से आना **मारना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** शिकरा छोटे परिंदों को झपट्टा मारकर पकड़ लेता है।

झिल्लड़ (पु0) झुंड, टोली, परिंदों का ग़ोल, जो मिलकर उड़ते या चरते–चुगते हों। **प्रयोग** जब पीपलियाँ पकती है, तो तिलैरों के छिल्लड़ के छिल्लड़ चले आते हैं।

छुंड देखें (पु0) छिल्लड़। **प्रयोग** बागों में तोतों के झुंड के झुंड उड़ते नज़र आते हैं।

झोल (पु0) हमल। मादा परिंद का अंडौसी होना यानी उसके पेट में अंडों का एक मज़मूआ़ तैयार होना। लफ़्ज झेलना बमानी उठाना से छोल एक इस्तिलाह बन गयी है। **प्रयोग** अच्छी नस्ल की मुर्गियाँ एक झोल में दस–बारह अंडे देती है। बाज़ छोटी क़िस्म के चौपाओं के लिए भी झोल का लफ़्ज़ बोला जाता है। **प्रयोग** बिल्ली एक झोल में चार बच्चे तक देती है। **बिठाना** बच्चे निकलवाने को मुर्गी के नीचे अंडे सेने को रखना।

चिड़ीमार (पु0) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जंगली परिंदों को जाल या इसी क़िस्म की दूसरी चीज़ों से पकड़ने वाला पेशेवर कमेरा, चिड़ीमार। **अव्वल** आमतौर से ऐसे जंगली परिंद पकड़ते हैं, जो गिज़ा के लिए काम आये, उनको मंडी में लाकर

फरोख़्त करते हैं। ग़िज़ा की ज़रूरत के लिए बाज़ परिंदों को बाज़ पालते और उनकी नस्ल बढ़ाते हैं। जैसे–मुर्गियाँ, तीतर, बटेर, कबूतर वग़ैरा।

दोम ऐसे परिंद भी पकड़ते हैं, जो पालतू भी बन सके और शौक़िया रखे जायें जैसे–तोते, लाल, पिद्दी वग़ैरा। **सोम** ऐसे शिकारी परिंद, जो शिकार की गरज़ से परवरिश किए जाते हैं। इसीलिए यह पेशेवर कमेरे की तरह–तरह के परिंद अपने पास रख़ते हैं। **मसल** मशहूर है कि चिड़ीमार टोला, भाँति–भाँति का जानवर बोला। यानी चिड़ीमार के बाजार में क़िस्म–क़िस्म के परिंद बोलते हैं।

हराम जानवर (पु0) वह परिंद या चौपाया, जो मुसलमानों में खाना मज़हब में मना हो।

हलाल जानवर (पु0) वह परिंद या चौपाया, जो मुसलमानों में खाना मज़हब में जायज़ हो।

चख्खी (स्त्री) परिंद का मन भाता खाजा जो उसके पकड़ने को जाल या फट्की वग़ैरा में रखा जाता है। **देना** के साथ बोला जाता है।

चुगना (क्रिया) परिंदों का ज़मीन पर से अपनी खुराक उठाकर खाना।

चौगड्डी (स्त्री) परिंद के पकड़ने को बाँस का बना हुआ चौमुँहा अड्डा, जिसकी खड़ी लकड़ी के सिरे पर चक्खी यानी परिंद की मरगूब ग़िज़ा और चौतरफ़ा आड़ी लकड़ियों पर लासा लगाते हैं।

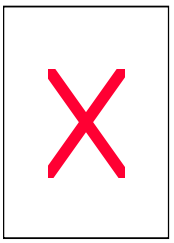

चक्खी खाने का जानवर जब उस पर आकर बैठता है, जो उसके पंजे लासा से चिपक जाते हैं। **लगाना, खड़ी करना**, के साथ बोला जाता है।

चींगा बोटी (स्त्री) अंडे से निकला हुआ बे बालो पर बच्चा, चींगा तिलंगी ज़बान का लफ़्ज़ है। उर्दू में बोटी के साथ मज़कूर–उस–सदर मानों में बोला जाता है। **करना** किसी चीज़ के छोटे–छोटे टुकड़े कर देना।

छपका (पु0) बांस के बने हुए लम्बोत्रे तेह–खूँटिये में बँधा हुआ जाल, जो

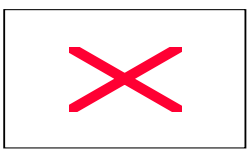

छोटे परिंदों के पकड़ने को ख़ास सूरतों में इस्तेमाल किया जाता है।

ख़ाकी अंडा (पु0) बग़ैर नर मिले, दिया हुआ अंडा बाज़ मुर्गियाँ बहार पर आकर बगैर मुर्ग़ के अंडा देती है। ऐसा अंडा इस्तिलाह में ख़ाकी अंडा कहलाता है। इस अंडे से बच्चा पैदा नहीं होता।

दाना पल्टी (स्त्री) बाज़ परिंदों का जुफ़्ती से क़ब्ल मादा की चोंच में चोंच डालकर मुँह के लुआब की बाहमी बदली करने का अ़मल। **होना, करना** के साथ बोला जाता है।

रस (पु0) परिंदों की गठिया की क़िस्म की एक बीमारी जिसमें खूबत बाजुओं के जोड़ों में उतर आती है और उन को बेकार कर देती है। **उतरना, भरना** के साथ बोला जाता है।

रस भरा (पु0) ऐसा परिंद जिसके बाजुओं के जोड़ों में खराब माद्दा उतर आया हो।

रंज पोटा (पु0) परिंद की बद्हज़मी की बीमारी जिसमें उसका पोटा फूल जाता है और दाना हज़म नहीं होता।

ज़र्दी (स्त्री) अंडे के अंदर का ज़र्द रंग का माद्दा, जिससे बच्चे का जिस्म बनता है।

सफेदी (स्त्री) अंडे के अंदर का सफेद रंग लेसदार माद्दा, जो जर्दी के अत्राफ बतौर ग़िलाफ़ होता है।

संगदाना (पु0) परिंद का मेअ़दा, जो संग रेजों से पुर रहता है। पोटे का दाना थोड़ा–थोड़ा होकर इसमें जाता और वहाँ संगदानों में पिसकर हज़म होता है।

सीप (स्त्री) परिंद की एक बीमारी, जिससे उसके सीने की हड्डी सूखने लगती है। **निकलना** के साथ बोला जाता है।

सेना (क्रिया) परिंदों का अंडों को परों में लेकर बैठना ताकि परों की गर्मी से अंडों में बच्चा बने।

साफ़ा (पु0) जुल्लाब। परिंद के पेट की सफ़ाई की दवा। **देना** के साथ बोला जाता है।

गोल (पु0) **देखें** झिल्लड़।

क़लम (स्त्री) **देखें** मुहरा कली।

काँटा (पु0) परिंद की एक बड़ी मोहलिक बीमारी, जो चने के दाने की शक्ल दुम की जगह नोंक पर फुंसी की शक्ल की होती है। जिसकी तकलीफ से परिंद खाना–पीना छोड़ देता है और जल्द मर जाता है। **निकलना** के साथ बोला जाता है।

कुर्रा/खुर्रा (पु0) परिंद के फेफड़ों की बीमारी, जो खाँसी की तरह होती है। **लगना, होना** के साथ बोला जाता है।

कुरेज/कुरेज़ (स्त्री) परिंदों के पुराने पर गिरने या झड़ने की हालत। **करना** परिंद के पुराने पर झड़ना।

कुरेल/कुरेलना (स्त्री) परिंद का चोंच से परों के अंदर खुजाना और पुराने पर निकालना। **करना** के साथ बोला जाता है।

कुरेद्ना (क्रिया) परिंद का चोंच से कूड़ा, मिट्टी, टटोलना। मिट्टी कूड़े में ग़िज़ा ढूँढना।

कुड्डुक (स्त्री) मुर्ग़ी और बाज़ दूसरे परिंदों की अंडों से उतरने की हालत यानी अंडे दे चुकने के बाद की हालत, जिसमें उसको अंडे सेने की ख़्वाहिश होती है। **होना** के साथ बोला जाता है।

कली (स्त्री) बाज़ुओं के बड़े परों के फूटे हुये नुकीले सिरे। **निकलना, फूटना** के साथ बोला जाता है।

कुंदा/कुंदे (पु0) परिंदे के बाज़ू। **जोड़ना** परिंद का उड़ते में जल्द नीचे आने को एकदम बाज़ू सिकोड़ लेना। **प्रयोग** चील कुंदे जोड़कर बुलंदी से एकदम नीचे उतर आती है। **प्रयोग** शिकरा कुंदे जोड़कर शिकार पर गिरता है।

कूक (स्त्री) नौ गिरफ़्तार परिंद की वहशत दूर करने को उसके सर और कानों पर मुँह की भाप देने का अ़मल। **देना** के साथ बोला जाता है।

खेदा (पु0) परिंद का मुख़ालिफ़ परिंद को घेरकर और ढराकर अपनी जगह से बाहर कर देने का अ़मल। **लेना** परिंद का मुख़ालिफ़ परिंद को अपने पास से भगाने के लिए पीछे पड़ना। अपने रहने की जगह न ठहरने देना। सताना, दिक़ करना, तंग करना।

खेद्ना (क्रिया) देखें खेदा, लेना।

गंदा अंडा (पु0) देखें अंडा गंदा होना।

गोंदा/गोंधा (पु0) परिंद को खिलाने की आटे, घी और शक्कर की बनाई हुई चक्खी। **देना** के साथ बोला जाता है। **पर लगाना** चक्खी की चाट लगाना।

घोआ (पु0) झींगर की क़िस्म का एक कीड़ा जिसको चिड़ीमार छोटे परिंदों के पकड़ने को बतौर चक्खी इस्तेमाल करता है।

लासा (पु0) छोटे परिंद पकड़ने को एक लेसदार चिपक्ती हुई शय। छोटे कमज़ोर परिंद उस पर बैठें तो पंजे चिपक जाते हैं। **लगाना** परिंद पकड़ने को बाँस की छड़ पर लासा लगाना।

मसैल (पु0) मोटा, भद्दा और बड़ी उम्र का परिंद, जो फुर्ती से चल, फिर और उड़ न सके।

मंडलाना (क्रिया) शिकारी या मुर्दार ख़ोर परिंद का खुराक की तलाश में किसी मुक़ाम के आसपास हवा में चक्कर लगाते रहना।

मूठ मारना (क्रिया) छोटे परिंद को जो उड़ान का अच्छा न हो, वे ख़बरी या बसेरे में हाथ के झपट्टे से पकड़ना।

मुहरा कली (स्त्री) क़लम। परिंद के बाज़ुओं के लम्बे परों का पिछला हिस्सा, जो सिरे पर से खाली और बेरेशा होता है। इसका लिखने को क़लम भी बनाया जाता है।

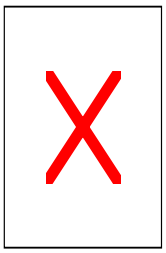

3 पेशा–ए–शिकारी

आखर (स्त्री) जंगल में आदमियों की गुज़र से दूर सुनसान जगह, जो वहशी चौपाओं, मसलन–नील, साँबर और हिरन वगैरा के बैठने का ठिकाना बनाया हुआ हो और जहाँ वह दिन–रात में एक मरतबा ज़रूर आकर खड़े हों।

उखराली (स्त्री) वहशी चौपाओं के सुनसान मुक़ाम पर आने और खड़े होने की अ़लामत जिसको शिकारी उनकी मेंगनियों और खुरों के निशानों से पहचानते हैं। **करना** वहशी चौपाओं का मुक़र्रिरा

सुनसान जगह पर आकर सुस्ताना। ठहरकर थोड़ी देर आराम करना।

अगौट (पु0) जंगल या वन से निकलकर जाने को सेहराई चौपाओं के महफ़ूज़ रास्ते।

अगौट का माला (पु0) जंगली चौपाओं का वन से निकलने के रास्ते पर शिकार करने को घात में बैठने के लिए बनाई हुई जगह।

ऐरा (पु0) वन से निकलते वक्त शिकार के पैरों की आहट, जो सूखे पत्तों पर चलने से होती है। **होना, करना** के साथ बोला जाता है। **लेना** शिकार के पैरों की आहट पर कान लगाना।

बाऊनी (स्त्री) वह जानवर, जो शेर के हमले के लिए जंगल मे बाँधा जाय। जब शेर उस पर हमला करने को आता है तो खुद शिकार हो जाता है। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

भटई/भटियारी (स्त्री) खरगोश के शिकार करने का एक तरीका जिस में चार–पाँच शिकारी रात के वक्त मशाल हाथों में लेकर एक क़िस्म का बाजा बजाते हुए झाड़ियों में घुसते हैं। जिनको देखकर ख़रगोश बौखलाकर खड़ा हो जाता है और पकड़ा जाता है। **करना** शिकार पर चारों तरफ से ले दे करना। भटों पर हिल्ला करना। भटों में से ख़रगोशों को निकालना। लफ़्ज़ भाट से मुशतक़ है।

पारचा (पु0) देखें माला।

फड़ (स्त्री) थापा। शिकार के जिस्म पर निशाना लगने की जगह चूँकि आमतौर से शिकारी शाना का निशाना लगाता है। इसलिए फड़ या थापा मजाज़न शाना को कहते हैं। **सही करना** शिकार के शाना का निशाना बाँधना।

फेरा देना (क्रिया) शिकार को घेरकर मार की ज़द में या घात की जगह के सामने लाना।

थापा (पु0) देखें फड़।

टोलना (क्रिया) शिकार को छिपी हुई जगह से बाहर निकालना और घेरना।

झांकी (स्त्री) रुंदा। घात में बैठने की जगह का वह मोखा, जिसमें से शिकारी शिकार की ताक लगाये या **देखें बनाना** शिकार को देखने के लिए घात की बन्द जगह सूराख़ बनाना।

छापर (पु0) जंगल का सुनसान और रास्तों से हटा हुआ, सेहराई जानवरों के रहने का ठिकाना।

डार (स्त्री) मंदा, खाडू। हिरन और इसी क़िस्म के दूसरे जानवरों का गल्ला, ग़ोल।

डांग (स्त्री) ऐसी ऊँची झाड़ियाँ, जिनके पीछे शिकारी घात में बैठ सके।

रुंदा (पु0) देखें झांकी।

शिकारी (पु0) जंगली चरिंद या परिंद का शिकार करने वाला। माहीगीर और चिड़ीमार का काम महदूद है और बतौर पेशा किया जाता है लेकिन लफ़्ज़ शिकार और शिकारी का मफ़्हूम ग़ैर महदूद है। उमरा और शौक़ीन मिज़ाज लोग शिकार तफ़्रीह या ख़ास गरज़ के लिए बतौर खेल खेलते हैं। उनको इस खेल व तफ़्रीह में मदद देने के लिए बाज़ कमेरे यह काम बतौर पेशा अख़्तियार कर लेते हैं। इस पेशे में उन्हीं पेशेवर कमेरों की इस्तिलाह जमा की गयी है। हसबे–मौक़ा यह लोग आम ज़ुरूरत के लिए भी शिकार करते हैं और खूराकी मंडियों में भेजते हैं। शिकारी आलात व हथियारों की तफ़्सील व इस्तिलाह फने सिपाहगिरी के तहत लिखी गयी है। **देखें** पृ0

गुर्राना (क्रिया) दरिंदे का दुश्मन को देखकर गुस्से भरा गुंजीला साँस लेना।

कैंची चढ़ाना (क्रिया) दरिंदे का शिकार पर हमला करने के वक्त या दुश्मन की आहट पाकर कान खड़े करना, जो उसके चौकन्ना होने और कोई तेज़ हरकत करने की अ़लामत समझी जाती है।

कारछा (पु0) हिरन की कतराई हुई चाल, जो वह डरकर और शिकारी की ज़द से बचने को अख़्तियार करता है। हिरन वग़ैरा का ख़ौफ की हालत में मुँह मोड़कर पीछे की तरफ देखते हुये भागना। ज़ेल के शेअ्र में इस मफ़हूम को बड़ी खूबी से अदा किया है।

डरते–डरते जो कभी तेरी महफिल में आ जाता हूँ।
सैदे ख़ाइफ की तरह रूबः क़ज़ा जाता हूँ।।

जाना, चलना के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** हिरन डरकर भागता और कारछा होकर देखता जाता है।

खाड़ू (पु0) देखें डार।

खिडक (पु0) वहशी चौपाओं का मामन यानी, वह छोटा जंगल जो खेतों से क़रीब हो और जहाँ वह फ़ौरन जा छुपे।

खोज (पु0) चौपाओं के पैरों का निशान जिससे शिकारी उसके जाने को रास्ता और ठिकाने का पता चलाता है। **पड़ना, निकालना, लगाना, मिलना** के साथ बोला जाता है।

गारा/गल (पु0) शेर का मारा और खाया हुआ शिकार। गारा या गल, शेर के उगले हुए को कहते हैं। जो वह ज़्यादा खाकर उगल देता और दूसरे वक़्त के खाने को छिपा देता है, लेकिन इस्तिलाहे आम में उसके खाये हुये शिकार को कहते हैं।

कोल्ड़ा (पु0) देखें मेहदिया।

घात (स्त्री) शिकार की छुपवाँ तलाश, ताक। **़में बैठना** शिकार की ताक में छुपकर बैठना। **़में लगना, में आना** शिकार की ताक में फिरना। शिकार के पीछे लगना। **प्रयोग** शेर घात में बैठा हुआ था ज़द पर आते ही हमला किया। **प्रयोग** शिकारी हिरन की घात में लगा हुआ दूर निकल गया।

घाट (पु0) देखें माला।

लगौर (पु0) इंसान के खून की चाट पर लगा हुआ शेर यानी एक मरतबा इंसान का शिकार करने के बाद हमेशा उस के शिकार की ताक में लगा रहने वाला शेर।

माला (पु0) पार्चा, घाट। जंगली जानवर या शेर का रात के वक्त शिकार करने के लिए दरख़्त के ऊपर घात में बैठने की बनाई हुई जगह। **़बाँधना** के साथ बोला जाता है। **़पर आना** माले के सामने शिकारी की ज़द में शिकार का आना।

माले का शिकार (पु0) वह शिकार, जो रात के वक़्त माले पर बैठकर किया जाये। **देखें** माला।

मोड़ी (स्त्री) बहार पर आयी हुई हिरनी, जो नर के साथ रहती है। **प्रयोग** हिरन बहुत होशियार या शिकारी पर नज़र पड़ते ही मोड़ियों को छोड़कर भाग गया। वस्त हिन्द की मुक़ामी बोली में मोड़ी नौजवान बे बियाही लड़की को कहते हैं।

मोल (स्त्री) शिकार के लिए घात में बैठने की ज़मीनदोज़ बनाई हुई जगह या घूँघटदार बनाई हुई आड़। **़बैठना** शिकार की घात में छुपकर बैठना। **़देना** शिकार को घेरकर घात की तरफ़ लाना। **़पर आना** शिकार का घात में बैठे हुए शिकारी की ज़द में आना।

मोल की झाड़ी (स्त्री) वह झाड़ी, जो शिकारी की घात के लिए ओट का काम दे।

मेहदिया (पु0) गोल्ड़ा, जसीम और बुड्ढ़ा स्याह हिरन या पुराना, होशियार और शिकारी से बिदका हुआ वहशी जानवर।

मीर (स्त्री) ऐसी आड़, जो शिकारी को शिकार की नज़र से ओझल रखे। **प्रयोग** मीर की सीध में या मीर पकड़कर मोल बैठना चाहिये।

हाका/हाँका (पु0) वहशी जानवरों को उनके ठिकानों से निकालने के लिए गुंजीली आवाज़े निकालने का अमल। **़देना** जानवरों के बैठने की जगह के क़रीब जाकर हुंकारे भरना। हाका या हाँका साँस फुलाकर आवाज़ से 'हूँ' करने का नाम है।

हौंकी (स्त्री) दरिंदे का हुँकारा जो गुस्से में भरे। **़देना** दरिंदे का गुस्से की हालत में हुँकारा भरना।

4 पेशा–ए –क़स्साबी (क़साई)

अद्ला (पु0) मछली, करेली हाथ–पैर की लम्बी हड्डियों यानी नलियों के ऊपर मढ़ा हुआ मछली की शक्ल का लम्बोतरा गोश्त। दिल्ली के क़साई अद्ला जमअ़ अद्ले कहते हैं। दूसरे मुक़ामात पर मछली की मुशाबहत से कहीं मछली और करेले की मुशाबहत से कहीं करेली कहलाता है। **प्रयोग** अद्ले का गोश्त बारीक रेशे का और खाने में मज़ेदार होता है।

अधंत (पु0) आधे दाँतों का बकरा, भेंड़ वगैरा यानी दूध के दाँत वाला ज़्यादा से ज़्यादा एक साल की

उम्र का। भेंड़, बकरी की ज़ात के जानवरों के पैदाइशी दाँत छोटे होते हैं। उनमें से हर साल दो दाँत टूटते और उनकी जगह दो बड़े निकलते हैं, जिनसे बकरे बगैरा की उम्र का अंदाज़ा किया जाता है और एक साल तक अधंत कहलाता है।

अर्ख़ा (पु0) मग़ज़ी, मौर। रीढ़ की हड्डियों के पूरे सिलसिले पर मछली की शक्ल का दोतरफा मंढ़ा हुआ गोश्त जैसा कि हाथ पैर की नल्लियों पर होता है। अर्ख़ा तुर्की ज़बान में पीठ को कहते हैं। दिल्ली के पुराने क़साई रीड़ के ऊपर के इस गोश्त को अर्खा और दूसरे मग़ज़ी या मौर के नाम से मौसूम करते हैं।

अंदरा करना (क्रिया) बकरा बनाना, बकरे वगैरा की खाल उतारने और पेट की आलाइश निकालने को उल्टा लट्काना।

अंदर्वा तुर्की ज़बान का लफ्ज़ है जिसके मानी सर को नीचे की तरफ झुका देने से है। दिल्ली के क़साई बकरे के उल्टा लटकाने को अंदरा करना कहते हैं।

अंड्वा (पु0) वह भेंड़, बकरा, वगैरा जिसको खस्सी न किया गया हो। यानी कपूरे न निकाले गये हो। **देखें** ख़स्सी।

ओझ (पु0) गाय, बैल और इसी क़िस्म के बड़े जानवरों का मेदा।

ओझड़ी (स्त्री) पेटा, कोठा, ओझ का इस्मे मुसग्गर। **देखें** ओझ। छोटे जानवर, मिस्ल–भेंड़, बकरी वगैरा का मेदा, दकन के बाज़ शहरों में ओझड़ी की बजाय लफ्ज़ बोटी बोला जाता है।

बिजन खुरी/ बिचन खुरी (स्त्री) जुगाली करने वाले जानवरों के खुरों के ऊपर, पीछे के रुख़ तख़्ने के जोड़ से मिले हुए दो ग़दूद जो सख़्त खाल से मंढे होते हैं।

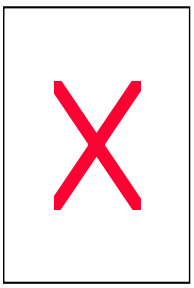

बिसाँद (स्त्री) गोश्त की बू।

प्रयोग बत्तख़ का गोश्त बहुत बिसाँदा होता है।

बुग़दा (पु0) कस्साब का बड़ा और वज़नी छुरा, जो एक ख़ास शक्ल का होता है और आमतौर से गाय क़स्साबों को काम में आता है।

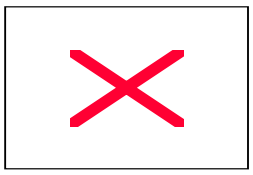

बकरा बनाना (क्रिया) देखें अंदरा करना।

बकर क़स्साब (पु0) देखें क़स्साब।

बोटा (पु0) गोश्त का आधा पाव, पाव सेर या उससे ज़्यादा वज़न का काटा हुआ टुकड़ा।

बोटी (स्त्री) बोटे का इसमे मुसग्गर। गोश्त का छटाँक, आधी छटाँक या उससे कम वज़न का कटा हुआ टुकड़ा। दकन के बाज़ शहरों में ओछड़ी को बोटी कहते हैं। **देखें** ओछड़ी। **बनाना, काटना** के साथ बोला जाता है।

बूक/बोकड़ (पु0) बूबक, झक, बुड्ढा, उम्र से उतरा हुआ बकरा वग़ैरा जिसका गोश्त लिज्लिजा लेसदार और खाने में बदमज़ा होता है।

पार्चा (पु0) देखें तिक्का।

पासूसन करना (क्रिया) जानवर की खाल उतारने के लिए पैर की खुरी के पास से शिग़ाफ लगाना। फारसी लफ्ज़ पाश्ना बमानी एड़ी से यह इस्तिलाह बनी मालूम होती है।

पानी दिखाना (क्रिया) ज़बह करने से क़बल जानवर के सामने पानी पीने को रखना।

पाया/पाये (पु0) भेंड़, बकरी और दीगर चौपाओं के पैर का पूरा हिस्सा।

पत ओझड़ी (स्त्री) भेंड़, बकरी वग़ैरा की ओझड़ी का छोटा हिस्सा, जो उसके साथ अलाहदा बतौर–ए–थैली लगा हुआ मालूम होता है।

पत्री (स्त्री) देखें परदा।

पुट (स्त्री) फ़ारसी लफ्ज़ पुश्त का इस्तिलाही तलफ़्फुज़–बकरे की कमर का हिस्सा या उसका गोश्त।

पट (स्त्री) बकरी। दिल्ली के क़साई बकरी को पट कहते हैं। पट, काबुल के इलाक़े के एक गाँव का नाम है जहाँ की बकरी पश्म के लिए मशहूर है। शायद यह वही लफ्ज़ है।

पठ्ठा (पु0) रीढ़ की हड्डी के गोश्त से मिला हुआ ज़र्दी माइल सफेद रंग तस्मे की वज़अ का ताँत्वा। **देखें** ताँत्वा।

पर्दा (पु0) पत्री। पेट और सीने के हिस्से के दरमियान पत्ले गोश्त की एक आड़, जो आखिरी पसलियों से कमर तक फैली हुई लगी होती है और इन दोनों हिस्सों को जुदा करती है।

पसंदा (पु0) गोश्त का आधा कुटा, पतला, छोटा तिक्का। चौपारा गोदा हुआ छोटा टिक्का। बोटी और क़ीमे की दरमियानी सूरत। पकने में जल्दी गलता है और मज़े में सोंधा मालूम होता है।

पोट्ला (पु0) मेंढ़ा, भेड़ की नस्ल का मुज़न्नस जानवर, जो बकरे और भेड़ के मेल से पैदा होता है।

पेटा (पु0) देखें ओझ्ड़ी।

फर्रा (पु0) फड़, थापा, चौपाये जानवरों के शाने की लम्बोत्रे तिकून की वज़अ़ की हड्डी, जिसपर गोश्त मंढ़ा और सामने का पैर क़ायम रहता है।

फड़ (स्त्री) देखें फर्रा।

फुक्ना (पु0) पेशाब की थैली।

फेर (पु0) आँतों का घेर, जो एक बारीक झिल्ली के साथ चक्रवार बना होता है।

तौंत्वा (पु0) अद्ले या मछली के सिरे का नुकीला सिरा, जो निहायत बारीक सफेद रेशों का मज़मूआ होता है और हड्डी के सिरे से जुड़ा रहता है। इसके तनाव से हड्डी के जोड़ में हरकत होती है।

तिक्का (पु0) पार्चा। गोश्त का सेर, आधा सेर वज़नी लम्बा काटा हुआ टुकड़ा। **करना, काटना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

थापा (पु0) फर्रा।

टोटा (पु0) ओझड़ी की नली। (मेअ़दे का मुँह)

जाली (स्त्री) ओझड़ी पर मँढ़ी हुई चर्बीली चादर इस चादर पर नसों के साथ चर्बी का जाल सा बना होता है। यही सूरत उसकी वजह तसमिया है।

झक (पु0) देखें बूक।

झिल्ली (स्त्री) गोश्त और खाल के दरमियान बारीक पर्दा, जो गोश्त के मुख़्तलिफ़ सूरतों से मँढ़ा होता है। गोश्त के ऊपर का बारीक गिलाफ़।

चुश्ता (पु0) लम्बी थैली की शक्ल का फेर यानी आँतों का मुंह जिसमें मेअ़दे से गिज़ा तहलील होकर आती है।

चक्ती (स्त्री) दुंम्बे की फेरदार गिरदे की शक्ल की दुम, जो चर्बीले माद्दे से बनी हुई और खाने में निहायत मज़ेदार होती है। फर्बः दुंम्बों की चक्ती बीस, तीस सेर वज़न तक होती है।

छुरी फेरना (क्रिया) बकरे बगैरा को ज़बह करना।

छीछड़ा (पु0) झिल्ली की क़िस्म की शय्, जो कहीं–कहीं गोश्त के साथ या उस की तहों में लगी होती है। पत्ला झिल्लीनुमा गोश्त। **निकालना** के साथ बोला जाता है।

हराम मग्ज़ (पु0) रीढ़ की हड्डियों के बीच का गूदा, जो डोरी के तौर पर उनके बीच में होता है।

हलाल करना (क्रिया) मुसलमानों के तरीके पर जानवर को ज़िबह करना।

हल्वान (पु0) कम उम्र जानवर का गोश्त। नर्म गोश्त। क़साइयों की इस्तिलाह में भेंड़, बकरी के छः माह तक की उम्र के बच्चे का गोश्त, जो खाने में मज़ेदार और पकने में जल्द गल जाता है।

ख़स्सी (पु0) ऐसा भेंड़, बकरा जिसके फोते (बैज़े) निकाल दिये गये हों। यह अ़मल जानवर को फर्बः बनाने के लिए किया जाता है। **करना** के साथ बोला जाता है।

दड़ा/दड़ी (पु0) दो साल या उससे कुछ ज़्यादा उम्र का बकरा वग़ैरा। अरब, ईरान और तुर्की में कसरत से होता है। इसकी दुम दर्बीले माद्दे की गोल चक्तीनुमा होती है और यही इसकी वज्हे तसमिया है। जितना यह जानवर फर्बः होता है। उतनी ही उसकी दुम, जो इस्तिलाह में चक्ती कहलाती है, बड़ी और वज़नी होती है।

दुम गज़ा (पु0) बकरे वग़ैरा की दुम का पूरा हिस्सा। दुम की पूरीं ऐसी छोटी दुम, जो ऊपर को उठी रहे।

रवाज़ (स्त्री) गोश्त की चर्बी, गोश्त के रेशों में पैवस्त चर्बी के ज़र्रे, जो फ़र्बही की अ़लामत है।

रवाज़दार गोश्त (पु0) चिक्नाई या चर्बीदार गोश्त।

रूखा गोश्त (पु0) बगैर चर्बी का गोश्त।

रेशा (पु0) गोश्त का तुस।

साँसनी (स्त्री) देखें नरख़रा।

सिरी (स्त्री) मुंडी, कल्ला। भेंड़, बकरी का सिर, जो ज़िबह करके जिस्म से जुदा कर लिया जाय।

सूमड़ी/सूमड़ियाँ (स्त्री) कोंपल, कच्ची और छोटी पसली पसलियाँ, जो कुरकुरी हड्डी के मानिन्द नर्म और बड़ी पसलियों के नीचे दोनों तरफ कोक के साथ झिल्ली में लगी होती है।

क़साई/क़साई (पु0) अरबी लफ्ज़ क़स्साब का उर्दू तलफ़्फुज़ और रसमे ख़त। खूराक की जुरूरत के लिए गोश्त का व्यापार करने वाला पेशेवर शख़्स, जो आमतौर से हलाल जानवर ज़िबह करके उनकी खाल और गोश्त की तिजारत करते हैं। दिल्ली के क़साई अपनी एक बड़ी बिरादरी रखते हैं और मुसलमानों के इबतिदाई अहेद से वहाँ उनका एक बड़ा मुहल्ला आबाद है। जो क़स्साब पूरे के नाम से मशहूर है। इन लोगों के अजदाद तुर्की या अरबी–उल–नसल थे। इसलिए इनकी अक्सर इस्तिलाह अरबी या तुर्की अल्फ़ाज़ के उर्दू तलफ्फुज़ हैं। इनमें बकरे का गोश्त बेचने वाले गाय क़स्साब के नामों से मअरूफ़ हैं। मुसल्मानों के अलावा हिन्दूओं की बाज़ अछूत जात के लोग भी क़दीम से यह पेशा करते हैं।

क़स्साब (पु0) देखें क़साई।

क़ीमा (पु0) बारीक कुटा यानी रेज़ह किया हुआ गोश्त, जिससे कबाब, सालन और बाज़ ख़ास–ख़ास क़िस्म के खाने पकाये जाते हैं। **करना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

कपूरा/कफूरा (पु0) आँड़, बैज़:, खुस्या। बकरे और इसी क़िस्म के दूसरे जानवरों के उज़्वे तनासुल के साथ के दो उज़्व (अरबी लफ़्ज़ कुफू या कफ़्फ़ा का उर्दू तलफ़्फुज़ है।

कतीफ़ (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ कित्फ़ बमानी शाना, कंधा या मोंढे का उर्दू तलफ़्फुज़, दिल्ली के क़साइयों की ख़ास इस्तिलाह।

कुर्कुरी हड्डी (स्त्री) शाने की हड्डी का नर्म और पतला सिरा, जो कच्ची हड्डी का बना होता है। इसी क़िस्म की एक हड्डी सीने का किवाड़ियों के जोड़ पर भी होती है।

किर्खारास (पु0) बोकड़, बुढ्ढा या लाग़र बकरा या भेंड़।

करेली (स्त्री) देखें अद्ला।

कड़ी (स्त्री) पसलियों का रीढ़ की हड्डियों के मुक़ाबिल छाती पर का जोड़ जिस पर चर्बी मंढी होती है।

कल्ला (पु0) देखें सिर।

कलेजी (स्त्री) क़साइयों की इस्तिलाह में फेफड़े, जिगर और दिल का मजमूई नाम।

कमेला (पु0) मज़बख़, मस्लख़, भेंड़, बकरी वग़ैरा के ज़िबह करने की जगह। **करना** खुराक की जुरूरत के लिए चौपाओं को मुक़र्रिरा मुक़ाम पर ज़िबह करना। **होना** कमेले का काम जारी रहना, ज़िबह का काम शुरू होना।

कोठा (पु0) देखें ओझड़ी।

कौंपल (स्त्री) देखें सूमड़ी।

खुरी (स्त्री) भेंड़, बकरी और इसी क़िस्म के दूसरे जानवरों के सुम यानी पैर के तले के ऊपर का ख़ोल।

खीरी (स्त्री) थनों का गोश्त जिसमें बच्चे के लिए कुदरती तौर पर दूध बनता और रहता है। यह गोश्त सफेद रंग और स्पंज की सी बनावट का होता है।

गाय क़स्साब (पु0) देखें क़साई।

गुड्डी/गुड्डियाँ (स्त्री) भेंड़, बकरी वग़ैरा के टख़नों के जोड़ों की हड्डियाँ और नलियों की चूलें।

गूदा (पु0) नलियों यानी हाथ पैर की हड्डियों के अंदर का मग़ज़।

गूढी (स्त्री) मुग्ली, हाथ पैर की पूरी सिरबन्द नली या नलियाँ जिनमें गूदा भरा होता है। गूदेदार नली या हड्डी। पैर और घुटने के दरमियान की नली (मुग्ली अरबी लफ़्ज़ मुग़लक़ बमानी बन्द दरवाजा का उर्दू तलफ़्फुज़ है।

गोश्त बनाना (क्रिया) गोश्त को छिच्ड़ों वग़ैरा से साफ करके हसबेज़रूरत टुकड़े करना।

लादा (पु0) गाय, बैल और इसी क़िस्म के बड़े जानवरों के पेट की कुल आलाइश आँतें, फेर और ओझ वग़ैरा।

लब्बा/लुब्बे लुबाब (पु0) जिगर के नीचे और गुर्दों से ऊपर कमर से मिला हुआ सफेद रंग, खीरी की वज़अ़ का गोश्त का छोटा सा तिक्का, जिसके खाने से पेशाब की ज़ियाद्ती और शक्कर का पेशाब में आना कम हो जाता है।

लोथड़ा (पु0) गोश्त का बद डोल और बद वज़अ़ टुकड़ा।

मुच्चा (पु0) बोटा। गोश्त की मामूल से बड़ी बोटी।

मछली (स्त्री) देखें अद्ला।

मुड्डी (स्त्री) क़साई के गोश्त काटने की घेरदार वज़नी लकड़ी।

मग़्ज़ी (स्त्री) मौर। रीढ़ की हड्डियों पर मछलीनुमा शक्ल का मंढ़ा हुआ गोश्त और फर्रे के ऊपर का मंढ़ा हुआ गोश्त।

मुग़ली (स्त्री) देखें गूढ़ी।

मंका (पु0) देखें नुक्का।

मौर (पु0) देखें मग़्ज़ी।

मेंढ़ा (पु0) देखें पोट्ला।

नर्ख़रा (पु0) साँसनी। साँस लेने की नली जिसके कट जाने से जानदार मर जाता है।

नरौठा (पु0) रान यानी बकरे वग़ैरा की पिछली टाँग के टख़ने से जुड़ा हुआ पिंढली की मछली का सिरा, जो पुट्ठे की शक्ल का गोल और लम्बोत्रा होता है।

नुक्का (पु0) मंका, खोपड़ी और रीढ़ की हड्डी के दरमियान का हड्डी का हल्क़ा, जो दोनों के दरमियान बतौर कड़ी होती है।

नुकात (पु0) बुड्ढे बकरे वगैरा का गोश्त, जो पकने में काला पड़ जाये।

नली (स्त्री) हाथ, पैर की लम्बी और सिरबन्द हड्डी।

अर्ना भैंस (पु0) भैंस का नर, जो सिर्फ नसल लेने को परवरिश किया जाता है।

उफान (पु0) देखें फेन।

उकरा (पु0) देखें तूरिया।

अगौर (पु0) देखें तूरिया।

अलवाई (स्त्री) लैनी। बच्चा जनने के क़रीब होने वाली भैंस यानी वह भैंस या गाय जिसके ह़मल के दिन पूरे हो गये हों और थनों में दूध आ गया हो। एक आध माह की जनी हुई गाय, भैंस।

ऐन (स्त्री) देखें गाभ।

बाख्री/बाख्ली (स्त्री) बगैनी, बाखर, बाक़्रीं। दूध से उतरी हुई भैंस। वह भैंस जिसको बच्चा जने बहुत दिन हो गये हों और गियाबिन होने के क़रीब आ गयी हो। ऐसी भैंस का दूध कम और खरियाला हो जाता है। यानी उसमें खारीपन आ जाता है।

बाख्रा दूध (पु0) बाख्री भैंस का दूध। बहुत दिनों की जनी हुई भैंस का दूध जिसमें खारीपन आ जाये।

बाँगर (स्त्री) वह गाय या भैंस जिसके बच्चा होना मौकूफ हो गया हो और बहुत थोड़ा दूध देती हो।

बच्चा (पु0) घी का गंदा जमाव। ज़्यादा मिक़दार के बहुत दिनों तक बंद रखे हुए घी में खून का लोथड़ा या कच लहू सा पैदा हो जाता है। जिसको इस्तिलाह में बच्चा कहते हैं। उसकी वजह से घी बदबूदार और गंदा हो जाता है **पड़ना**, के साथ मिलाकर बोला जाता है।

बगैनी (स्त्री) देखें बाख्री।

बिलोंना (क्रिया) मक्खन निकालने के लिए दूध या दही को रई से फेंट्ना, घिंघोल्ना।

बिलौनी (स्त्री) दूध बिलोने का बर्तन। **रई** दूध को हरकत देने यानी बिलोने की ढोई।

बूरा (पु0) देखें गाला।

बियाह्ना/बियाना (क्रिया) गाभ डालना। गाय, भैंस वगैरा का बच्चा जनना। **प्रयोग** रात को गाये बियाही बछड़ा पैदा हुआ।

पाड़ा/पड़वा (पु0) पढ़्ढ़ा, कटरा। भैंस का नर बच्चा।

कहावत जो सोवे उसका पड़वा, जो जागे उसकी पड़िया।

पड़िया/पढ़िया (स्त्री) कटिया, भैंस का मादा बच्चा।

कहावत जागते की कटिया सोते का कट्टा।

पनीर (पु0) ज़ामिन देकर जमाया हुआ दूध। ख़ास क़िस्म के ज़ामिन से इसका कुल पानी निकलकर ठोस हो जाता है और बहुत अ़र्सा तक बग़ैर ख़राब हुए रहता है। हिन्दुस्तान में इसका रवाज़ मुसलमानों के ज़माने से हुआ।

पेउसी/पेव्सी (स्त्री) खिरसा, गिलोरा, नया दूध। गाय, भैंस वग़ैरा का हमल के ज़माने का दूध, जो थनों में आ जाता है। बच्चा पैदा होने के बाद पहले दो–तीन रोज़ का दूध, जो गर्म करने से फट जाता है।

फेन (पु0) उफान, झाग। दूध के नन्हे–नन्हे बुलबुलों का मज़मूआ, जो हवा के अस़र से दूध की सतह पर बन जाता है और चिकनाई की वजह देर तक कायम रहता है। जितना दूध ज़्यादा गाढ़ा होता है उतना ही फेन ज़्यादा और देरपा होता है **आना** के साथ भी बोला जाता है।

तूरिया (पु0) उक्रा, अगौर, संघरप, कुरती। गाय या भैंस का मसनूई बच्चा, जो उसका बच्चा मरने के बाद दूध दुहने के लिए बना लेते हैं। क्योंकि नई जनी हुई गाय या भैंस जब तक बच्चा सामने न हो दूध नहीं देती।

तोड़ (पु0) दूध का पानी का जुज़ यानी दूध का कुदरती पानी।

तौन (स्त्री) ढड़ह्री, साँधा, निहाना। दूध दुहते वक्त गाय या भैंस के पीछे पैरों में बाँधने की रस्सी, जो ऐसी भैंस या गाय के बाँधी जाती है। जो दूध दुहने में लात मारती है। लफ्ज़ तौन, तान का और साँधा, सांठ बमानी गिरह का ग़लत तलफ़्फुज़ है।

थन (पु0) बिटनी, चुसनी, चूची। गाय, भैंस और दीगर दूध पिलाने वाले जानवरों के दूध के उज़्व (गाभ) का मुँह जो तादाद में दो, चार और छः तक होते हैं।

जमौनी (स्त्री) जाम्नी (ज़ाम्नी), दूध जमाने की हड़िया।

झाक्ड़ी (स्त्री) देखें गुर्सी।

झाग (पु0) देखें फेन।

चक का दही देखें दही। ख़ालिस दूध का ठोस यानी खूब जमा हुआ दही, जिसमें पानी न छूटे। चक, ढेकली पर रखे हुए पत्थर या वज़न को कहते हैं। जो उसको दबाये रहे। फ़ारसी में चग़ मक्खन का दही बिलोने की ढोई (रई) को कहते हैं।

छाज/छाछ (स्त्री) मट्ठा, मई मक्खन निकाले हुये दही का बाक़ी जुज़, जो दूध की तरह पतला होता है।

छछेरू घी की तल्छट, कच्चे घी या मसके में मिला हुआ दही का जुज़, जो पिघलाने से बर्तन की तह में जम जाये।

छव्वा दही (पु0) मक्खन निकाले हुये दूध का दही। छाज का बनाया हुआ दही।

दाउन (पु0) ज़मिन का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** ज़ामिन।

दूध (पु0) बच्चे जनने वाले हैवानों के जिस्म का सफेद रंग लतीफ़ जौहर, जो बच्चे की खुराक के लिए दूध के उज़्व में एक ख़ास मुद्दत तक पैदा होता रहता है। **दुहना, निकलना, निचोड़ना** गाय, भैंस वग़ैरा के थन या थनों से खुराक की जुरूरत के लिए दूध निकालना। **आना** दूध के उज़्व में दूध पैदा होना। **उतरना देखें** दूध आना। **प्रयोग** बच्चा पैदा होने के दो तीन रोज़ बाद दूध उतरना शुरू होता है। **प्रयोग** बच्चा होने के छः सात महीने बाद दूध उतर, यानी कम हो जाता है। **मोड़ा खाना** तबीअत की ख़राबी या बच्चे के दूध न पीने की वजह दूध का अपने उज़्व में आना रुक जाना। गाभ की तरफ से पलट जाना। **चढ़ना, चढ़ाना** किसी ख़िलाफ–ए–तबीअत वाक़िआ़ से गाय या भैंस के दूध न उतरना या गाय में दूध आने से रोक लेना।

दूधैल/दूधैली (स्त्री) दूध पर आयी हुई या ज़्यादा दूध देने वाली गाय भैंस वग़ैरा।

कहावत दुधैली गाय की दो लातें भली।

दूधैंडी (स्त्री) देखें दुहनी।

दुहनी/धूनी (स्त्री) दूधैंडी। दूध दुहने की हांडिया यानी वह बर्तन जिसमें घोसी गाय, भैंस का दूध दुहता है।

दही (पु0) ज़ामिन डालकर जमाया हुआ दूध यानी किसी क़िस्म की लाग से जमाया हुआ दूध।

दही का तोड़ दही का छूटा हुआ पानी। **देखें** तोड़।

दुहैन (स्त्री) दूध देने वाली या दूध पर आयी हुई गाय या भैंस।

दहैंड़ी/दहीनी (स्त्री) दही जमाने की हंडिया।

ढाँस (पु0) भैंस को काटने वाला मच्छर।

ढगराना (क्रिया) राँभना। गाय भैंस का बच्चे की तलाश में भोंडी और करख़्त आवाज़ निकलना। चिल्लाना।

रब्ड़ी (स्त्री) चौरस दूध, गाढ़ा किया हुआ दूध, जो पककर अस्ल वज़न का एक तिहाई रह जाये और क़ंद मिलाकर मीठा कर लिया जाये। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

रई (स्त्री) खेलर, मथना, मथानी, मथनी। दूध बिलोने और मक्खन निकालने की चौपारा मुँह की ढोई। **चलाना, फेरना** के साथ भी बोला जाता है।

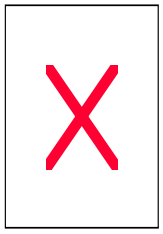

साँदा/साँधा (पु0) देखें तौन।

संधरप (पु0) देखें तूरिया।

ज़ामिन (पु0) दूध जमाने की लाग, गँवार जामन कहते हैं।

कट्रा/कठ्रा (पु0) देखें पाड़ा।

कटिया/कठिया (स्त्री) देखें पड़िया।

कछर्या (स्त्री) दूध बिलोने की बड़े पेट की हंढिया।

कुर्ती (स्त्री) देखें तूरिया।

कलाड़ी (स्त्री) दूध का बनाया हुआ सफूफ। ख़ुश्क किया हुआ दूध जिसका पानी उड़ाकर मुंजमिद और ख़ुश्क करके सफूफ़ बना लिया जाता है।

कुंदा (पु0) देखें खोया।

कंधैलिया (पु0, स्त्री) वह भैंस या गाय जिसके कंधे मामूल से ज़ाइद ऊपर को उठे हुए हों। ऐसी भैंस या गायें दूध बहुत कम देती है।

मसल है कि भैंस कंधैलिया पेवलाय, बाजे धार न खटके रई, माँगे छाज सो ही गई।

खिरसा/खेस (स्त्री) देखें पेव्सी।

खल्लर (पु0) देखें खोला।

खोला (पु0) खल्लर। बूढ़ा और नाकारा भैंसा। दकन की मुक़ामी ज़बान में भैंसे को खुल्गा कहते हैं।

खोया (पु0) कुंदा, मावा। आग पर पकाकर गाढ़ा और भूनकर लुग़दी बनाया हुआ दूध जिससे पेंड़ा और क़लाकंद बनाते हैं।

रंगी को नारंगी कहें और नक़द माल को खोया।
चलती को गाड़ी कहें यह देख कबीरा रोया।।

खेलर (स्त्री) देखें रई।

गाला (पु0) बूरा, नैनू। दूध का चिकना जुज़, जो दूध के ठंड में ज़्यादा देर रखे रहने से निथरकर ऊपर सतह पर आ जाये। यह एक किस्म का कच्चा मक्खन होता है। जिसके निकल जाने से दूध पत्ला और हलका हो जाता है।

गाभ/गाभा (पु0) ऐन, खीरी। दूध का उज़्व जिसमें दूध बनता और जमा होता है। **डालना** बच्चा पैदा होने के क़रीब गाभ का बढ़ना और लटक जाना, जो उसमें दूध आने की अ़लामत है, बच्चा जनना।

गुर्सी (स्त्री) झाक़ड़ी। दूध रखने का बर्तन।

गिलोरा (पु0) देखें पेव्सी।

ग्वालिया/गौली (पु0) देखें घोसी।

ग्वालन/गौलिन (स्त्री) देखें घोसिन।

गियाब (पु0) हमल। गाय, भैंस, बकरी वगैरा के पेट में बच्चा होने की हालत।

गियाबिन (स्त्री) हमल वाली गाय भैंस वगैरा। **होना** हमल से होना, पेट में बच्चा होना।

घोसिन (स्त्री) ग्वालन, ग्वालिये की बीबी या वह औरत, जो ग़िज़ा के लिए दूध फ़राहम करने के लिए गाय, भैंस पाले।

घोसी (पु0) ग्वालिये, ग़िज़ा के लिए दूध फ़राहम करने को गाय भैंस पालने वाला पेशेवर शख़्स।

घी (पु0) मक्खन, दूध की चिकनाई, जो दूध से निकालकर साफ कर ली जाये।

घी हैंढी/घियंढी (स्त्री) घी रखने की हँढिया या बर्तन।

लस्सी (स्त्री) दूध का शर्बत या बराबर का पानी मिला हुआ दूध। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

लौनी (स्त्री) मस्का, मक्खन, माया, नैनऊ, नैनी। दूध की चिकनाई, जो दही जमाकर और बिलोकर निकाली जाये और जिसको ताकर घी बना लिया जाये। पंजाब में लोनी, दकन में मस्का, माया और पूरब के बाज़ मुक़ामात में नैनऊ, नैनी कहते हैं।

लैनी (स्त्री) देखें अल्वाई।

मावा (पु0) देखें खोया।

माया (पु0) देखें लौनी।

मथानी/मथनी (स्त्री) देखें रई।

मट्ठा (पु0) देखें छाज।

मसका (पु0) देखें लौनी।

मक्खन (पु0) दूध की निकाली और साफ की हुई चिकनाई, जिसको गरम न किया गया हो।

मलाई (स्त्री) दूध का चिकना जुज़, जो दूध को उबालकर ठंडा करने से ऊपर आकर पपड़ी की तरह जम जाता है। **उतारना** दूध पर जमी हुई मलाई निकालना।

महना (क्रिया) दही बिलोकर मही बनाना। दही की छाज बनाना। **देखें** छाज।

मही/मइ (स्त्री) छाज।

महेरा (स्त्री) छाज की गाद, तलछट जिसका पानी खुश्क होकर सूख गयी हो।

नीती (स्त्री) वह रस्सी जिससे दूध बिलोने को रई फेरी जाती है। तसवीर के लिए **देखें** रई।

4 पेश–ए–तेली (तेल पेलना)

अद्ढा (पु0) कोल्हू की लाट की दाब रखने की जगह जिसपर कोल्हू चलाने वाला भी बैठ जाता है।

अम्बर (स्त्री) अम्बूबः बमानी मोरी, परनाले का इस्तिलाही तलफ़्फुज़। कोल्हू की मोरी जिसमें से तेल रिस कर बाहर आता है। **देखें** तस्वीर कल्हू।

बर्खम्बा/मर्खम्बा (पु0) कोल्हू की लाट का टेका या सहारा। **देखें** तस्वीर कल्हू।

पाट (पु0) कोल्हू के लाट की दाब, जो पत्थर की सिल या किसी वज़नी चीज़ की बना ली जाती है। **चढ़ाना, उतारना** लाट के दबाव का वज़न हसबेज़रूरत बढ़ाना या घटाना। इस अमल को अद्ढा चढ़ाना या उतारना भी कहते हैं। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

पारा (पु0) लफ़्ज़ बाड़ का ग़लत तलफ़्फुज़ कोल्हू के मुँह की चौड़ी कोर, जो किसी क़दर सलामीदार होती है। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

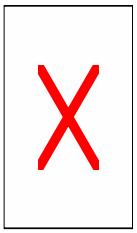

पल्ला (पु0) मिरवा। तेल नापने का प्यालेनुमा उमूदी दस्ते का पैमाना, जो पाव सेर या उससे कुछ ज़ाइद वज़न का होता है।

पल्ली (स्त्री) पल्ले का इस्मे मुसग्गर। **देखें** पल्ला।

पौपट/पापट (स्त्री) कोल्हू के बैल की आँखों की अंधेरी जो कोल्हू में चलते वक़्त उसके आँखों पर चढ़ा दी जाती है, ताकि वह हुरे नहीं और अपनी राह चले जाये। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

पैड/पैंडा (पु0) कोल्हू के गिर्द बैल के चलने का रास्ता, जो दायरे की शक्ल का होता है। जिसके बीच में कोल्हू होता है। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

पेलना/ पिल्ना (क्रिया) रौग़नी तुख्म का कुव्वत से दबाकर तेल निकालना।

वाक्य *कोल्हू चल रहा है। तिल पिल रही है।*

पैना (स्त्री) देखें खली।

फूक (पु0) बेसत शैय् यानी वह चीज़ जिसका सत निकल गया हो।

तिल/तिली (पु0, स्त्री) एक क़िस्म का रौग़नी तुख्म जिसको फूलों में बसाकर खुश्बूदार तेल बनाते हैं और खाने में भी आता है।

तिल्हन/तिली (स्त्री) रौग़नी तुख्म। ऐसे बीज जिनमें से तेल निकलता हो।

तनी (स्त्री) कोल्हू की लाट से बँधी हुई बैल की नाथ की रस्सी, जो बैल को अपनी जगह फिरने पर मज़बूर रखती है। **देखें** तस्वीर कोल्हू

तेल (पु0) निबाताती चिकनाई या रौग़न।

तेल कश (पु0) किसी गहरे बर्तन में से तेल खींचने का आलः।

तेलवाँस (स्त्री) मजानी। कोल्हू की मोरी के नीचे रखी हुई हंडिया या कोई बर्तन जिसमें कोल्हू में से तेल रिसकर जमा होता रहे।

तेली (पु0) तिलहन से तेल निकालने वाला पेशेवर शख़्स।

तेलन (स्त्री) तेली की बीवी।

जाँगी (स्त्री) कोल्हू की जांग यानी निचले हिस्से के बाहर के रुख़ धुरे की वज़अ़ पर लगी हुई लकड़ी, इसका एक सिरा कोल्हू से लगा हुआ होता है और दूसरे सिरे पर लाट की आड़ खड़ी होती है। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

चोटिया (पु0) कोल्हू की लाट का नुकीला सिरा। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

चीकट (पु0) तेल की पुरानी चीपदार गाद।

धोई तिली (स्त्री) छिल्का निकली और भूसी साफ़ की हुई तिली।

ढोया (पु0) देखें खोंच्नी।

किलाई (स्त्री) तिली का भूसा उतारने का अ़मल। **ˎकरना, किलाना** के साथ बोला जाता है।

कुलहाड़ (पु0) कोल्हूहाड़। वह जग़ह जहाँ कोल्हू लगा हुआ हो यानी जहाँ कोल्हू के ज़रीए तेल निकाला जाता है।

कोटा (पु0) अध् पिली घानी यानी कोल्हू में डाली हुई अध्कुचली तिलहन जिसमें तेल न छूटा हो। नीम कोफ़्ता।

ˎखींचना, ˎकोल्हू में से तेल निकालना, **ˎतिलहन** कोल्हू में से थोड़ी अध्कुटी तिलहन निकाल लेना ताकि तेल निकालने की जगह हो।

पैड़, पैंड़ा, भवन

कोल्हू (पु0) तिलहन से तेल निकालने की कदीम बज़अ़ की कल, क़दीम वज़अ़ की कल, जो एक भारी मूसल वाली बड़ी ओख्ली की वज़अ़ की होती है। इस मशीन को एक बैल घुमाता है। जिससे तिलहन कुचली जाती और तेल निकल आता है। कोल्हू के हिस्सों के मुख़्तलिफ़ नाम है। सिलसिलए अल्फ़ाज़ में उनकी तश्रीह और तसवीर में शक्ल दिखाई गयी है। इस कुल मजमूअ़े को कोल्हू कहते हैं।

खल/खली (स्त्री) तिल्हन का फूक, तेल निकला हुआ जुज़ जिसमें सत न हो।

खौंची (स्त्री) ढोया, तिलहन को कोल्हू के अन्दर उलट–पुलट और तले ऊपर करने का कफ्गीर या चम्चे की वज़अ़ का लम्बा हत्ता, जो कोल्हू की लाट से बँधा रहता है और लाट के साथ घूमकर तिल्हन को पलटाता रहता है। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

घानी (स्त्री) तिल्हन की एक मुक़र्रिरा मिक़दार, जो बवक्त वाहिद कोल्हू में डाली जाए। **डालना** के साथ बोला जाता है।

लाट (स्त्री) कोल्हू का मूसल। **देखें** तस्वीर कोल्हू।

लहास/लहासा (पु0) कोल्हू की लाट का झट्का या हचकोला, जो उसका तवाज़ुन बिगड़ने से पैदा होता है। **ˎलेना, खाना** कोल्हू की लाट का झटके खाना। अपनी जगह से हटकर घूमना।

मजानी (स्त्री) देखें तेलवाँस।

मर्खम्बा (पु0) देखें बर्खम्बा।

मिर्वा (पु0) देखें पल्ला/पल्ली।

मग्री/मक्ड़ी (स्त्री) कोल्हू की लाट और बर्खम्बे की चोटियों के दरमियान लगी हुई आड़। तस्वीर के लिए **देखें** कोल्हू।

नल्वा खोंचनी (स्त्री) कोल्हू की मोरी खोलने और साफ़ करने की आहनी सलाख़ या चोबी दस्ता।

7 पेश–ए–ईंधन बरारी

उप्ला (पु0) कंडा, गौंठा, छेना। गाय, भैंस का सूखा हुआ गोबर, जो जलाने के काम आये। **ˎथापना** गीले गोबर में भुस वगैरा मिलाकर सूखने के लिए टिक्कड़ बना लेना। **ˎचुनना** गाय, भैंस का सूखा हुआ गोबर जंगल या चारागाहों में जाकर जमा करना। **ˎअर्ण, उप्ला** असली हालत में सूखा

हुआ गोबर, जो जलाने के लिए जंगल से चुनकर लाया जाये। **देखें** अर्ण कंडा। **थप्वाँ उप्ला, गौंठा** गाय, भैंस वगैरा के गीले गोबर को हसबेज़रूरत टिकिया की शक्ल में बनाकर सुखाया हुआ उप्ला। जो आमतौर से घर पर बना लिया जाता है। **कर्सी** उप्ले का झड़ा हुआ टुकड़ा या टुकड़े। उपलों का चूरा। **प्रयोग** कर्सी सुलग–सुलग कर जलती है। **प्रयोग** उप्ले टूटकर कर्सियाँ बन गयीं।

अर्ण उप्ला (पु0) देखें उप्ला।

अर्ण कंडा बन कंडा। बिनवा कंडा। (अर्ण+कंडा) अर्ण बमानी जंगल से चुना हुआ और कंडा बमानी सूखा गोबर इस्तिलाह में उप्ला कहलाता है।

ईंधन (पु0) जुलैती, जलावन, जलौनी संस्कृत ईंधन बमानी रोशन करना। हर वह चीज़ जो खाना पकाने, पानी गरम करने या इसी क़िस्म की दूसरी ज़रूरतों के लिए जलायी जाये।

ईंधौर (पु0) ईंधन रखने की जगह। **देखें** ईंधन।

बिटौरा/बिटोरा (पु0) उप्लों के अंबार, जो बुर्जी की शक्ल में बनाया और सबतरफ मिट्टी थोपकर बारिश से महफूज़ कर दिया जाये। उप्लों का महफूज़ ज़ख़ीरा।

बन कंडा/बन गौंठा (पु0) देखें अर्ण कंडा।

बिन्वा कंडा (पु0) देखें अर्ण कंडा।

थपड़ी (स्त्री) देखें चाप्ड़ी।

थप्वाँ उप्ला (पु0) देखें उप्ला।

टाल (स्त्री) डंडी। संस्कृत अटाला। ईंधन की मंडी यानी वह मुक़ाम जहाँ ईंधन लाकर फरोख़्त किया जाता है।

टालवाला (पु0) ईंधन की मंडी का अढ़तिया, जो बतौर दल्लाल ईंधन की बिक्री का इंतज़ाम करे।

जलावन/जलाउनी (स्त्री) देखें ईंधन।

जुलैती (स्त्री) देखें ईंधन।

चाप्ड़ी (स्त्री) थिप्ड़ी। अद्ना क़िस्म का पतला थपवाँ उप्ला।

चिराव (पु0) ईंधन के लिए कुल्हाड़े से फाड़कर हसबेज़रूरत टुकड़े की हुई लक्डियाँ।

चोथ (पु0) गोबर का पिंड। गाय या भैंस का एक मर्तबा का किया हुआ गोबर का ढेर।

चैला (पु0) मोटा और वज़नी फटा हुआ चिराव। जो भट्टी वगैरा के लिए फाड़ा जाये। **देखें** चिराव।

छिप्टी (स्त्री) फटी हुई लकड़ी की छीज या चूरा जो फाड़ने में हो जाये।

छेना (पु0) देखें उप्ला।

डंडी (स्त्री) टाल की बड़ी तराज़ू या तराज़ू की डंडी। **देखें** टाल। **प्रयोग** नौकर ईंधन लेने डंडी पर गया हुआ है। अभी तक वापस नहीं आया।

कर्सी (स्त्री) देखें उप्ला।

कस्सा/घर्सा (पु0) घर्सा यानी गर्मी के मौसम की सूखी हुई झाड़ी। दरख़्तों के पत्ते और घाँस–फूस, जो भाड़ भट्टी गरम करने या पज़ावे में जलाने को गर्मी के मौसम में जमा कर लिया जाये। इसी वजह से इसको घर्सा कहते हैं। जो बिगड़कर कस्सा बोला जाने लगा है।

कुल्हाड़ा (पु0) ईंधन के लिए लकड़ी फाड़ने का धारदार और भारी औज़ार।

कुल्हाड़ी (स्त्री) कुल्हाड़े का इस्मे मुसग्ग़र।

कुंदा (पु0) दरख़्त के तने का छोटा या बड़ा सालिम टुकड़ा।

कंडा (पु0) देखें उप्ला।

कंडौर (पु0) उप्ले जमा रखने की जगह।

कोयला (पु0) लकड़ी के बुझाए हुए अंगारे, जो हसबेज़रूरत सुल्गा लिए जायें।

खाँस (स्त्री) खुर्जी। उप्लों का थैला, जो बैल या गधे पर लादने के लिए बना हुआ हो।

गब्रौटा (पु0) गुब्रीला। गोबर का कीड़ा।

गोबर्चक (पु0) देखें गोहारी।

गोबर्धन (पु0) देखें गोहारी।

गौंठा (पु0) देखें उप्ला और थप्वाँ उप्ला।

गोहारी (स्त्री) गोबर्चक। गोबर्धन। वह जगह उप्ले थापने को गोबर जमा किया जाये।

लकड़हारा (पु0) ईंधन के लिए लकड़ियाँ फराहम करने और इन को हसबेज़रूरत फाड़कर टुकड़े करने वाला मज़दूर।

तीस्री फ़स़ल पक्वान
(तैयारी–ए–खुराक)
1 पेश–ए–भाड भूँजाई

उट कुटी/उट कुनी (स्त्री) ढेक्ली की शक्ल की ओख्ली का मूसल जो दाब के ज़रिऐ उठता और गिरता है। **देखें** तस्वीर तहत ढैंकी।

अलाव (पु0) ईंधन का जलता हुआ अंबार जो भाड़, भट्टी वगैरा के गर्म करने को इकट्ठा एक ढेर की शक्ल में जलता हो। **लगना, लगाना** जुलैती या जलाव्नी का ढेर होना या करना।

इमाम दसता/हावन दसता (पु0) फारसी लफ्ज़ हावन दस्ते का उर्दू तलफ़्फुज। **देखें** ओखली।

ओख्ली (स्त्री) इमाम दसता। बाज़ क़िस्म के अनाजों को छड़ने यानी उनका छिल्का उतारने का प्याले की शक्ल का दसते दार ज़र्फ़ । इमाम दसता और ओख्ली दोनों एक ही क़िस्म के ज़र्फ हैं लेकिन इमाम दस्ते और ओख्ली के नामों के साथ मफ़हूम में भी फर्क़ हो गया है। इमाम दस्ता अ़मूमन धात का बना हुआ और दवाइयाँ या इसी क़िस्म की दूसरी चीज़े मसाले वगैरा कूटने के लिये छोटी क़िस्म का होता है और ओखली पत्थर या लकड़ी की बनी हुई हस्बे–ज़रूरत छोठी बड़ी हर क़िस्म की होती हैं और अनाज का भूसा निकालने के काम आती है।

कहावत *ओख्ली में सर तो,*
मूसलों का क्या डर।।

चित्र–ओख्ली

बालू (पु0) राजपूताने के इलाक़े का एक क़िस्म का बारीक रेत जिसको भाड़ में डालकर गर्म किया और अनाज भूना जाता है।

बख्ता/बख्ते (पु0) भूने हुये चनों की बनाई हुई दाल जो चने भुन्ने में सख्त हो जाते हैं और फूलते नहीं उन को दल कर दाल बना ली जाती है ऐसी दाल बख्ते कहलाती है। **दलना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

बौरी (स्त्री) गेहूं या जौ के गीले दाने जिन को खाने के लिये भाड़ में भून लिया गया हो। दानों की ऐसी भुनावट जिसमें खील न बने। चूँकि दानों को पहले गर्म पानी में भिगो लिया जाता है इसलिये भून्ने में इन की खील नहीं बनती ।

बूंजा (पु0) देखें भूजा।

भाड (पु0) संस्कृत– भृष्ट्रा (भट्टी) अनाज के दाने और बाज़ दीगर चीज़ों को बालू में भून कर पका लेने की भट्टी जिस में आमतौर से ग़िज़ा की ज़रूरत के लिये चने, गेंहूं, जौ और धान भूने जातें हैं।

भूजिया के सत्तू (पु0) देखें सत्तू।

भड़बूँजा/भाड़ बूँजा (पु0) बाज़ क़िस्म के अनाजों को भाड़ में भून कर ग़िज़ा के लिये तैयार करने वाला पेशेवर कारीगर।

भाड़ बूँजाई (स्त्री) भाड़ में अनाज़ भून्ने का अ़मल।

भर बूँजन (स्त्री) भड़ बूंजे की बीवी, जोरू।

भड़ सार/भड़ साल (पु0) अनाज भून्ने की जगह। वह जगह जहां भाड़ बना हुआ हो।

भूक्का (पु0) देखें सत्तू।

भुलभुलाना (क्रिया) भूबल में भून्ना। किसी चीज़ को भाड़ के गर्म भूबल में दबा कर भूनना।

भूज (स्त्री) किसी चीज को भाड़ में भूनना ।

भूजा/भूजिया (पु0/स्त्री) भाड़ में भूने हुये अनाज के दाने, असल लफ्ज़ बूँजा है।

पर्मल (पु0) मुरंढा। मकई के उबले हुये दाने जो भाड़ में भून कर करारे कर लिये गये हों यानी जो खील न बन सकें।

परौती/पड़ौती (स्त्री) मुल्वा। भाड़ के मुंह के बराबर बना हुआ गढ़ा जिस में भुने हुये दानों का बालू छन कर गिरता और जमा होता रहता है **देखें** तसवीर भाड़।

पौदर (पु0) ढैंकी के सिरे पर ढैंकी चलाने वाले के पैर रखने की जगह। **देखें** तस्वीर ढैंकी।

फुल्ली (स्त्री) देखें खील।

ठुड्ड़ी (स्त्री) ऐसा दाना जो भून्ने में खील न बने यानी फूला और खिला न हो बल्कि करारा या कुर्कुरा हो जाये। **होना** के साथ बोला जाता है।

अनाज के अधपके दाने जो सूख जाते हैं वह न पकाने से गलतें है और न भून्ने में फूलते हैं।

झरना (पु0) भूने हुये दानों का बालू छान्ने का बड़ा छलना। **देखें** तस्वीर भाड़।

झोकारू (पु0) भाड़ की भट्टी का मुंह जहां से ईंधन झोंका जाता है। भाड़ का पीछे का मुंह। **देखें** तस्वीर झाड़ू।

झोकंद (पु0) भाड़ की भट्टी के मुंह के बराबर ईंधन झोंकने वाले के बैठने की जगह झोंकइये के बैठने की जगह।

झोक्वा/झोकिया (पु0) भाड़ झोंकनें वाला मज़दूर यानी वह मज़दूर जो भाड़ की भट्टी में थोड़ा–थोड़ा ईंधन डालता रहे ताकि भाड़ काम के वक्त एअ़तिदाल के साथ बराबर एक हालता में गर्म रहे।

चबैना (पु0) अनाज के भुने हुये दाने जो भून कर कुर्कुरे और खाने के क़ाबिल हो गये हों जिस को काश्तकारी मज़दूर काम करते वक्त भूक की तसकीन के लिये फाँकते रहें।

चिड़वा/चुड़वा (पु0) उबले हुये धान को कूट फटक कर बनाया हुआ चबैना। धान के अन्दर दाना कुट कर चिपटा हो जाता है। बंगाल में इसका रवाज आम है।

चिलौनी (स्त्री) खोंचा, खुद्नी, खोईनी। भाड़ की गर्म बालू को उलट पुलट करने और कुरेद्ने की आँकड़े दार लम्बी और मोटी सलाख़।

चित्र–चिलौनी

चूड़ा (पु0) मुर्मुरे और भूने हुये चने की दाल वगैरा को तल कर नमक मिर्च मिलाया हुआ चबैना जो दकन में बहुत आम है।

छड़ाई (स्त्री) देखें छड़ना।

छड़न (स्त्री) भूसा। अनाज के दानों के ऊपर का ग़िलाफ़ जो ओख्ली में कूटने से निकले। **देखें** छड़ना।

छड़ना (क्रिया) अनाज के दानों का गिलाफ़ या छिलका जुदा करने को ओखली में दानों को इस तरह कुचलना कि दाने साबित रहें और उनका छिल्का जुदा हो जाये।

दबेला (पु0) करछोला। अनाज़ भूनने का लम्बे दस्ते वाला करछे की शक्ल का कफ़गीर।

चित्र –दबैला

दल्नी/दलैती (स्त्री) भुने हुए चनों की दाल बनाने की चपटे पेंदे की हंडिया।

दल्नी (दलैती)

दलैती (स्त्री) देखें दलनी।

धुँवाला (पु0) भाड़ की भट्टी का धुवाँ निकलने का मोखा, जिसपर धुवाँ ऊपर जाने को नल्वा लगा दिया जाता है। **देखें** तस्वीर भाड़।

ढेक (पु0) भाड़ की भट्टी का ऊँचा शोला यानी आग की लपट, जो भट्टी की छत को लगें।

ढ़ैंकी/ढ़ैंका (स्त्री) ढ़ैक्लीदार ओख्ली जिसपर दबलक़ यानी पैर की दाब से काम किया जाता है।

रोलन (स्त्री) वह हल्के या फूले हुए दाने, जो छाज की हरकत से छटकर दूसरे दानों के ऊपर आ जायें। इलाहिदा हो जाये।

रोल्ना (क्रिया) किलाना। फूले या खिले यानी खील बने हुए दानों की छाज में हिलाकर और झोला देकर ठुड्डियों या ठोस दानों से इलाहिदा करने का अ़मल।

सत्तू (स्त्री) भुने हुए गेहूँ, जौ या चन्द मिलवाँ अनाजों का बनाया हुआ आटा, जो पानी में घोलकर और गुड़, खांड या नमक मिलाकर बतौर ग़िज़ा इस्तेमाल किया जाता है। चन्द मिलवाँ अनाजों के भुने हुए आटे को इस्तिलाह में भुजिया के सत्तू कहते हैं। **देखें** भूज।

कहावत *सत्वा मन भत्वा जब घुलिये जब खाये, जब चलिये।*

करछोला (पु0) देखें दबेला।

किरयाल (पु0) भड बूंजे का अनाज भूनने का ज़र्फ़, जो एक क़िस्म की नाँद या गहरे कुंडे की शक्ल का होता है।

किलाना (क्रिया) देखें रोल्ना।

कौंचा (पु0) देखें चिलौनी। पंजाबी लफ़्ज़ खोंसना बमानी घसीट्ना, नोंचना का ग़लत तलफ़्फ़ुज़।

खुद्नी/खोइनी (स्त्री) देखें चिलौनी।

खौत/खौता (स्त्री) ढ़ैंकी की दाब का धुरा। **देखें** तस्वीर ढ़ैंकी।

खील (स्त्री) फुल्ली। अनाज का वह दाना, जो भाड़ में भून्ने से फूलकर खुल जाये यानी फटकर गिरी या मग़ज़ छिल्के के बाहर आ जाये। आमतौर से चावल की खील ज़्यादा बनाई जाती है। जो लोग दीवाली पर खाते हैं।

गुजई के सत्तू (पु0) गेहूँ और जौ का मिलवाँ सत्तू। **देखें** सत्तू।

लादा/लादिया (पु0) ढ़ैंकी की दाब यानी वह बल्ली जिसमें मोगरी लगी होती है। **देखें** तस्वीर ढ़ैंकी।

लावा (पु0) मकई या जौ की बौरी। **देखें** बौरी।

लावा भूजन, चोरूधन, भैंस तरंग इक थाईं।
अहीर मिताई न करो चाहे मित्रा मरजाईं।।

मुर्मुरा (पु0) उबले हुये धान के चावलों को भूनकर बनाया हुआ चबैना, जो भुन्ने से फूलकर कुर्कुरा हो जाये।

मुर्मुरे के सत्तू मुर्मुरों के बनाये हुए सत्तू।

मुरंडा देखें पर्मल।

मुल्वा (पु0) भाड़ के मुँह से मिला हुआ गड़हा जिसमें मुसतअ़मिला बालू गिर–गिरकर जमा होता है। **देखें** तस्वीर भाड़ और परौती।

मूसल (पु0) ओख्ली का दस्ता यानी वह डंडा, जिससे ओख्ली में अनाज वगैरा कुचलते हैं। **देखें** ओख्ली।

मूस्ली (स्त्री) मोग्री। मूसली का इस्मे मुसग़्गर। **देखें** मूसल।

मोग्री (स्त्री) छोटी मूसली जो ढैंकी में लगी होती है। **देखें** तस्वीर ढैंकी।

मूँधा (पु0) भाड़ के अगले हिस्से का मुँह या मोखा यानी बालू वाले हिस्से का मुँह। **देखें** तस्वीर भाड़।

हावन दस्ता/इमाम दस्ता (पु0) देखें इमाम दस्ता।

होला/होले (पु0) घाँस फूस के अलाव पर भूने हुये अनाज के अध्कच्चे दाने या बालें जिनमें रस बाकी हो।

2 पेशा–ए–पिसन्हारी।

अपरौटो (पु0) चक्की का ऊपर का पाट।

आटा (पु0) चून। रोटी वग़ैरा पकाने को पिसा हुआ अनाज।

अरारोट (पु0) आटे की क़िस्म की एक शैय्।

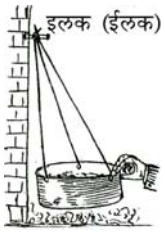

इलक/ईलक (स्त्री) हाँकी। मैदा छानने की उमदा किस्म की बारीक़ छल्नी जो बहुत बारीक कपड़े की होती है।

बेसन (पु0) चने का आटा।

भुक्राँद (स्त्री) पुराने आटे की बू जो बहुत दिनों तक सीली जगह बंद रखा रहा हो।

भुकराँदा आटा (पु0) उतरा हुआ आटा, जो बहुत दिनों तक बंद रखा रहने से बू दार हो गया हो।

भक्सा (पु0) पुराने घुन खाये या गले हुये गेहूँ का आटा। खत्ती के गेहूँ का आटा।

भूसा/भूसी (पु0/स्त्री) आटे की छनन। अनाज के दाने के ऊपर का बारीक छिल्का, जो पीसने में इलाहिदा हो जाये। गेहूँ वग़ैरा के सूखे हुए पौदे का चूरा जो गाय भैंस को खिलाया जाता है। भूसा या भुस कहलाता है।

भूसी (स्त्री) देखें भूसा।

पाट (पु0) चक्की का ऊपर या नीचे का पत्थर जिनके बीच में अनाज पिसता है। ऊपर या नीचे का पाट कहलाता है। **देखें** तस्वीर चक्की।

पिसाई (स्त्री) आटा पीसने का अ़मल। आटा पीसने की उजरत, मज़दूरी।

पिसनहारी (स्त्री) आटा पीसने वाली मज़दूरनी।

पनचक्की (स्त्री) वह चक्की जो पानी की कुव्वत से हरकत करे और आटा वगैरा पीसे।

पवनचक्की (स्त्री) वह चक्की जो हवा की कुव्वत से चले और आटा वगैरा पीसे।

फट्कन (स्त्री) अनाज का कूड़ा, जो पीसने से पहले छाज में फटककर निकाल दिया जाये।

तरौटा (पु0) चक्की का नीचे का पाट।

थूली (स्त्री) गेहूँ का राई के दानों जैसा बनाया हुआ बारीक दलिया। मोटी क़िस्म का रवा। **देखें** रवा।

टक (पु0) चक्की के पाट के खुरदुरे निशान, जो किसी नोंकदार आह्नी औज़ार से बना लिए जाते हैं ताकि पाटों के अन्दर दानों के पीसने में आसानी हो। **देखें** टाकना और रहाना। (पेशा संगतराशी भाग 1पृ0)

जाँट/जाँटी (पु0/स्त्री) दलिया दलने की बड़ी चक्की जो दो हाथों से चले यानी दो नफ़र मिलकर चलायें।

कहावत *कुछ गेहूँ गीली, कुछ जाँटी ढीली।*

झारा (पु0) मोटे सूराख़ों का छलना जिसमें पीसने से पहले अनाज का कूड़ा वगैरा छान लिया जाये।

झार्ना (पु0) झाड़न का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। चक्की के गरंड में से आटा झाड़कर निकालने का कपड़ा।

झनक (स्त्री) मुट्ठी भर दाने जो पीसने को चक्की के गल्ले में एक मर्तबा में डाले जायें।

चापड़ (पु0) सीले हुए अनाज की भूसी जिसमें दानों का बहुत सा हिस्सा बग़ैर पिसा चप्टा होकर मिल गया हो।

चक्की (स्त्री) अनाज वगैरा पीसने की दस्ती कल जो पत्थर के दो गोल और हसबेज़ुरूरत बड़े पाटों का मजमूआ होता है। **चलना, चलाना** के साथ बोला जाता है।

चोकर (पु0) अनाज या दाल के दानों का चूरा मिली हुई भूसी। गिरी मिला हुआ भूसा।

चून (पु0) देखें आटा।

चूनी (स्त्री) दाल की छिल्का मिली हुई बारीक छनन। चून की भूसी। बारीक चोकर।

छाज (पु0) सूप। अनाज के तिनके और ख़राब दाने रोल कर निकालने का हस्बेज़ुरूरत छोटा बड़ा बना हुआ ज़र्फ़, जो आमतौर से सिरकी या बाँस की तीलियों का बनाया जाता है।

छलना (पु0) आटे वगैरा का भूसा छानने का ज़र्फ़, जो हस्बेज़ुरूरत छोटा–बड़ा मोटे या बारीक सूराखों का बनाया जाता है।

छल्नी (स्त्री) छलने का इस्मे मुसग्गर।

छनन (स्त्री) आटे वग़ैरा की भूसी, जो छल्नी में छानने से निकले।

दर दरा आटा (पु0) मोटा पिसा हुआ आटा।

दल्हारा (पु0) दाल दलने वाला मज़दूर। दाल का व्यापारी।

दल्हारी (स्त्री) दाल दल्ने वाली मज़दूरनी।

दलिया (पु0) दला हुआ अनाज। गेहूँ, जौं, ज्वार वगैरा का दानेदार आटा, जो बजाय पीसने के चूरा कर लिया गया हो। **दल्ना** के साथ बोला जाता है।

दलैटी/दलैंटी (स्त्री) दलिया या दाल दल्ने की चक्की।

राला (पु0) चक्की के दोनों पाटों को हसबेज़ुरूरत इलाहिदा रखने वाली आड़, जो उनको एक दूसरे पर जमने न दे। यह आड़ आमतौर से मछली का छिल्का या कपड़े की धज्जी की बनी हुई छोटी सी ईंढवी होती है। जो मानी के सूराख़ या कीली में लगा दी जाती है। इसकी वजह से ऊपर का पाट नीचे के पाट से राले की मोटान के बराबर ऊपर को उठा रहता है। दाल या दलिया बनाने में इसकी बड़ी ज़ुरूरत होती है। **डालना, रखना, निकालना** के साथ बोला जाता है।

रवा (पु0) गेहूँ का ख़शख़ाश के दानों जैसा बनाया हुआ आटा। मामूल से मोटे दाने वाले को सूजी और थूली कहते हैं।

रोल्ना (क्रिया) सुरैत्ना, किलाना। अनाज के दानों को छाज़ में झकोल (हिला–जुला) कर अच्छे दानों को बुरे दानों और कूड़े से जुदा करना।

सुरैत्ना (क्रिया) देखें रोल्ना।

सूजी (स्त्री) देखें थूली और रवा।

किलाना (क्रिया) देखें रोल्ना।

कूटनहारी (स्त्री) जौ, धान वगैरा छड़ने यानी ओख़्ली में कूटकर छिल्का निकालने वाली मज़दूरनी।

कीली/कल्वा (स्त्री) चक्की के नीचे के पाट के मर्कज़ पर जड़ी हुई छोटी मेख़ जिसपर ऊपर का पाट घूमता है। **देखें** तस्वीर चक्की।

गरंड (पु0) कूंडे की शक्ल का मिट्टी का बना हुआ ज़र्फ़, जिसमें चक्की रखी जाती है और चक्की से निकला हुआ आटा उसमें गिरकर जमा होता रहता है। **डालना, भरना** गल्ले में अनाज डालना। **निकालना** गल्ले का अनाज पीसकर या निकालकर गल्ला ख़ाली करना। **देखें** तस्वीर चक्की।

गिल्ली (स्त्री) देखें मानी।

मानी (स्त्री) गिल्लीं, मयानी का ग़लत तलफ्फुज़। चक्की के ऊपर के पाट के सूराख़ के बीच में आड़ा लगा हुआ लकड़ी का गुट्का जिसके बीच में एक सूराख़ होता है। जिसमें नीचे के पाट की कीली रहती है। **देखें** तस्वीर चक्की।

मूँदरिया (स्त्री) मानी का सूराख़ जिसमें नीचे के पाट की कीली आ जाये। **देखें** तस्वीर चक्की।

मैदा (पु0) नशास्ता। निहायत बारीक छना हुआ आटा जिसमें भूसी का कोई जुज़ न रहा हो।

नशासता (पु0) देखें मैदा।

निखारा अनाज (पु0) छड़ा हुआ यानी छिलका उतारा हुआ अनाज यह इस्तिलाह आमतौर से धान और जौ के लिए मख्सूस है।

हाँकी (स्त्री) देखें इलक। इसको हाँकी इस वजह से कहते हैं कि यह छल्नी दीवार में लटकी रहती है और मज़दूर इसको हाथ से झकोले देकर दीवार से टकराता है, जो मैदा छन्ने का सबब होता है। **देखें** तस्वीर झलक।

हत्ता (पु0) चक्की की मूठ। **देखें** तस्वीर चक्की।

हाथ चक्की (स्त्री) हाथ से चलाई जाने वाली चक्की।

3 पेशा–ए–नानबाई

आब्ला (पु0) ख़मीरी आटे का उफान यानी फूलापन जो स्पंज के मानिन्द ख़ानादार हो। **उठना, आना** ख़मीर के असर से आटे में खानेदार जाल पैदा होना।

आबी रोटी (स्त्री) सादी और सफेद रंग की ख़मीरी रोटी। ख़मीरी रोटी में शीरमाल, बाक़रख़ानी, कुल्चे और ज़ाफरानी रोटी शामिल है। जो आमतौर से रंगीन होती है। इसलिए सादी और सफेद रंग रोटी आबी रोटी के नाम से मौसूम की जाती है।

आटा भिगोना (पु0) आटे में पानी मिलाकर कनी फूलने यानी लेस पैदा होने को थोड़ी देर छोड़ देना। **सोंदना** आटे में हसबेज़रूरत पानी डालकर अच्छी तरह मिलाना। **गूँथना** आटे में पानी मिलाकर गीला करना और रोटी पकाने के लायक़ लोचदार बनाना। **मसलना, मुक्की देना** आटे में पानी मिलाकर लोचदार बनाने को हाथ की मुट्ठियाँ बाँधकर मसलना। लफ़्ज आटा के लिए **देखें** पेशा–ए–पिसनहारी पृ0।

अर्रा (पु0) तन्दूर से रोटी निकालने की नानबाई की आँकड़ेदार मुँह की आहनी सलाख़ यह तादाद में दो होती है। एक चपटे सिर की तन्दूर से रोटी छुड़ाने की और दूसरी मुड़े हुये सिरे की होती है। दोनों मिलाकर नानबाई का जोड़ कहलाती है।

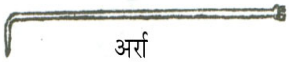
अर्रा

बाटी (स्त्री) कंगड़ा। गोल बट्टे की शक्ल की पकाई हुई रोटी, जो आटे के पेड़े को अंगारों में दबाकर तैयार की जाती है। मगर यह तरीक़ा बहुत पुराना हो गया है लेकिन राजपूताने और गोंडवाने की दूरो–दराज़ इलाकों में बे सरो सामान काश्तकार और बंजारे अब भी इस तरीक़े से रोटी पका लिया करते हैं। इसको पुर तकल्लुफ़ बनाने के लिए घी में डुबो लेते हैं और माश की दाल में चूरकर खाते हैं।

बासी रोटी (स्त्री) मामूल से ज़्यादा देर की पक्की यानी एक दिन या एक रात की रखी रोटी जिसमें ताजापन न रहा हो। बासी या तो हिन्दी लफ़्ज़ बास बमानी लू से है या फारसी लफ़्ज़ बाशी का उर्दू तलफ़्फुज़ है।

बाक़रख़ानी/बाकरख़ानी (स्त्री) शीरमाल। मैदा में घी मिलाकर और दूध से गूँधकर तंदूर में पकाई हुई आला क़िस्म की रौग़नी रोटी। इसमें चाश्नी पैदा करने और ख़मीर उठाने को हसबेज़ुरूरत नमक और दही भी मिलाया जाता है। शिमाली हिन्द में अपने मूजिद के नाम से बाक़रख़ानी और जुनूबी हिन्द में शीरमाल के नाम से मअरूफ़ है।

बिरी पराठा (पु0) पुरनपूरी। चने की दाल या आलू का भुरता भरकर पकाया हुआ पराठा। बिरी या तो फ़ारसी लफ़्ज़ बिरिया का उर्दू तलफ्फुज़ या लफ़्ज़ भरे हुए का मुखफ्फ़फ़ं। **देखें** पराठा।

बिरी रोटी (स्त्री) बिरी पराठे की तरह वगैर घी की सादी पकायी हुई रोटी। **देखें** बिरी पराठा।

बिस्कुट (पु0) अंग्रेजी ज़बान का लफ़्ज़ जो कसरते इस्तिमाल से उर्दू में शामिल हो गया है। मीठी या नमकीन करारी और खस्ता तैयार की हुई मुख़्तलिफ़ वज़अ़ की टिकियाँ; यूरप से बहुत किस्म के नियाहत आला और नफ़ीस बने हुए आते हैं। अब हिन्दुस्तान में भी उम्दा बनाये जाने लगे हैं।

बिस्कुट साज़ (पु0) बिस्कुट बनाने वाला पेशेवर नानबाई।

बेझड़ी रोटी (स्त्री) मुख्तलिफ अनाजों के आटे की रोटी।

बलदार पराठा (पु0) देखें वरक़ी पराठा।

बेस्नी रोटी (स्त्री) गेहूँ और चने के मिलवाँ आटे की रोटी।

न पूछ इसकी हक़ीक़त हूज़ूर ए वाला ने।
मुझे जो भेजी है बेसन की रौग़नी रोटी।।
न खाते गेहूँ निकलते न खुल्द से बाहर।
जो खाते हजरत–ए–आदम यह बेस्नी रोटी।

बेलन (पु0) रोटी गढ़ने का मख़रूती सिरों का लम्बोतरा गोल चोबी दस्ता जो चकले के ऊपर फेरा जाता है। **देखें** तस्वीर चकला।

भटियारा (पु0) मरहटी लफ़्ज़ भाकरया बमानी रोटी का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। रोटी पकाने वाला पेशेवर जो उजरत पर मुसाफिरों और दीगर ज़ुरूरत मन्दों की रोटी और उसके साथ के दूसरे लवाज़िम पकावे। आमतौर से सराओं और इसी क़िस्म के दूसरे मुक़ामात के करीब दुकान लगाकर बैठता और मुसाफिरों की खिदमत करता है।

भटियारी/भटियारिन (स्त्री) भटियारे की बीवी या वह औरत जो सराओं में मुसाफ़िरों के खाने और ठहरने का इन्तज़ाम करे।

भुरभुरी रोटी (स्त्री) रौग़नी ख़स्ता रोटी जिसके तोड़ने में भोरे यानी रेज़े ज़्यादा निकलें।

भुकराँद (स्त्री) रोटी की बू, जो खराब आटे या ज़्यादा देर तक सीली जगह बंद रखने से रोटी में पैदा हो जाये।

भंडारी (पु0) खानसामाँ, बकावल, बावर्ची। खूराकी सामान रखने वाला।

कहावत *दाता दे भंडारी का पेट फटे।*

भौरा/भौरे (पु0) रोटी का रेज़ा या रेज़े जो रोटी तोड़ने में निकले।

पापड़ (पु0) रोटी का छिल्का या बारीक पप्ड़ी, जो पकाने में भाप के असर से फूलकर सतह से अलग हो जाये। ज्वार, चावल, माश या मूँग वगैरा की मसालेदार पतली वरक़ जैसी पप्ड़ी।

पापड़ वाला (पु0) पापड़ बनाने वाला पेशेवर दुकानदार।

पप्ड़ी (स्त्री) पापड़ का इस्मे मुसग़्गर। किसी गीली चीज़ की ऊपर की खुश्क तह। **देखें** पापड़।

पतील रोटी (स्त्री) मांढा।

पुट/पुठ (स्त्री) गुँथे हुए आटे की गुठ्ली या गुठ्लियाँ, जो आटा गूँधते वक़्त पानी मिलाने और मसलने की ग़लती की वजह से पड़ जाये।

पुट्की/फुट्की (स्त्री) पुट का इसमे मुसग्गर। **देखें** पुट।

पराठा (पु0) रौग़न लगाकर या चुपड़कर पकाई हुई रोटी।

परतदार पराठा (पु0) देखें वर्क़ी पराठा।

पर्कोब (पु0) देखें कोच्ना।

पुरनपूरी (स्त्री) देखें बिरी पराठा। दकन में मीठी और पुरतकल्लुफ़ पकाई जाती है। आमतौर से चने की दाल के फीके, भुर्ते में मेवा वगैरा मिलाकर रोटी में भरने और पकाने के बाद शीरे में डाल

देते हैं। जो मुक़ामी ज़बान में पुरनपूरी के नाम से मौसूम की जाती है।

पलेथन (स्त्री) देखें खुश्की।

पूरी (स्त्री) रौग़न में तली हुई आटे या मैदे की हसबेज़रूरत छोटी बड़ी और पतली रोटी की क़िस्म की शैय्।

पेड़ा (पु0) रोटी गढ़ने को गुँथे हुए आटे की गुंबदी गोल बनाई हुई लुग्दी। **तोड़ना** गुँथे हुए आटे में से एक रोटी के लायक लुग्दी तोड़ना। **ताना गुलियाना** आटे की लुग्दी को जो एक रोटी के लायक तोड़ी हो, हाथ की हथेलियों के सहारे से गुंबदी शक्ल का बनाना।

मंगाकर चार पैसे भर गुडा कू।
फ़क़त ख़ाली ही गुलियाकर खिला तू।। (रंगीन)

ताना बमानी चक्कर देना ताव या तावे का ग़लत तलफ्फुज़। गुलियाना गोल बनाना यानी गोली की शक्ल बनाना।

फुट्की (स्त्री) देखें पुट्की।

फद्फदाना (क्रिया) सड़ जाना। सड़ाँद के बुलबुले उठ आना।

फुल्का (पु0) मामूल से छोटी गद्री और खूब फूली हुई रोटी। फूला होना ही उसकी वजह तसमिया है।

ताफ्ता (पु0) देखें कुल्चा।

तबारक की रोटी नियाज़ नज़र के लिए तन्दूर में पकाई हुई मीठी रौग़नी रोटी, जो अ़मूमन शब्बरात के महीने में पकवाई और मुर्दों के नाम पर तक़सीम की जाती है।

तन्दूर (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ तनूर का उर्दू तलफ्फुज़ और रोटी पकाने की बड़ी मट्के की शक्ल की मिट्टी या लोहे की बनी हुई भट्टी जिसको ज़मीन में गाड़ दिया जाता है। इस की तह पर आग रहती है और ऊपर के हिस्से में रोटी लगाकर सेंकी जाती है।

पेट भरा दूर की सूझी
भूख लगी तन्दूर की सूझी।।

तुन्की (स्त्री) देखें माँढ़ा।

तनूर (पु0) देखें तन्दूर।

तवा/ताऊ (पु0) संस्कृत तपाका। रोटी पकाने का अ़द्सी शक्ल का आहनी ज़र्फ़।

जैसे साहू तैसे माहू।
न इनका चूल्हा न उनका ताऊ।।

तवा हँसना (क्रिया) तवे के नीचे धुँए की जमी हुई कालिक का सुलग उठना और नन्हें–नन्हें मुतहर्रिक पतिंगों की क़तार की शक्ल में फैलना। अहले हुनूद इनके जलने की मिक़दार से नेक या बद शिगून लेते हैं।

थई (स्त्री) जुट। बहुत सी रोटियों की ऊपर–तले रखी हुई मज़मूई तादाद। **जमाना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

टिक्कड़ (पु0) टिकिया का इस्मे मुकब्बर। **देखें** टिकिया।

टिकिया (स्त्री) काक। हाथ की हथेली के बराबर चौड़ी, मोटी और किसी क़दर ठोस रोटी।

जुट (स्त्री) देखें थई।

जोड़ी (स्त्री) देखें अर्रा और खोंच्नी। तंदूर से रोटी निकालने की दोनों

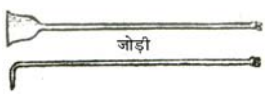

आहनी सीख़ों के मजमूओं को नान बाई अपनी रोज़मर्रा में जोड़ी कहते हैं। जिनके इलाहिदा नाम अर्रा और कोच्नी हैं।

चपाती (स्त्री) मामूली दर्जे की बड़ी और फैली रोटी, जो दल यानी मोटान न होने की वजह से फुल्के की तरह फूले नही। यह और इस क़िस्म की सब रोटिया आमतौर से तवे पर पकाई जाती हैं, जो हिन्दुस्तान का बहुत क़दीम रवाज़ है। हिन्दुस्तान के बाहर दूसरे तमाम मुमालिक में आमतौर से रोटी तंदूर या भट्टी में पकाये जाने का दस्तूर है। हिन्दुस्तान में तंदूर का रवाज़ मुसलमानों के अ़हेद से हुआ है।

चपातिया (पु0) चपातियाँ रखने का बर्तन, जो शक्ल में गोल होता है। ऐसा बर्तन जिसमें गोल गिरवे की शक्ल की चीज़ रखी जाये।

चुपड़ी रोटी (स्त्री) वह रोटी जिस पर सेंकने में या सेंकने के बाद घी मल दिया जाये।

चपेकी (स्त्री) पराठे के बीच में बनाया गया सूराख़ या कचोका जिसमें से रौग़न उसके परत में पहुँचाया जाता है।

चकचका पराठा (पु0) घी टपकता हुआ पराठा यानी वह पराठा जो घी में खूब तर बतर हो।

चुसनी बिस्कुट (पु0) दूध पीते बच्चों के चूसने के उंगली की शक्ल के बने हुए बिस्कुट।

चकला (पु0) रोटी बेलने यानी बढ़ाने का लकड़ी या पत्थर का गोल गिरवे की शक्ल का पाट, जिसके साथ एक चोबी बेलन भी होता है और दोनों मजमूई तौर पर चक्ला बेलन कहलाते हैं।

चंगेर (स्त्री) आटे के पेड़े की चपटी हुई शक्ल, जो रोटी की शक्ल बनाने से..... ताकि उस पर बेलने फिरने लगे। **बनाना** आमतौर से चंगेर बना बोला जाता है।

चोका/चौंगा (पु0) काक। लफ़्ज़ चौका का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। नज़रो–नियाज़ के लिए कंगूरेदार चौपरत पकाई हुई मीठी रोटी। आमतौर से अश्राए–मुहर्रम की नियाज़ के लिए पकाई जाती है। जिसमें किनायतन चारों खुल्फा–ए–राशिदीन (रजि0) से इज़हारे अ़कीदत मक़सूद होता है।

खुश्की (स्त्री) पलेथन। खुश्क आटा जो रोटी बनाने में इस्तेमाल किया जाए ताकि गीला आटा हाथ या चकले बेलन को न चिपके। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

ख़मीर (पु0) माया। ऐसा मसाला जो गुँथे हुए आटे के अज्ज़ा में उफार यानी फूलापन पैदा और चिपकाव कम कर दे। ऐसे बने हुए आटे की रोटी जूदे–हज़्म होती है। **उठना** ख़मीर तैयार होना। **पेचना** आटे में ख़मीर मिलाकर मथना। आटे में ख़मीर को हल करना।

ख़मीरी रोटी (स्त्री) ख़मीरी आटे की रोटी यानी ख़मीर किए हुये आटे की रोटी। पूरब में नान कहते हैं और वहाँ यह लफ़्ज़ ख़मीरी रोटी के लिए मख़सूस है। **देखें** ख़मीर।

दो परता पराठा (पु0) दो पड़ पराठा। ऐसा पराठा जिसमें ऊपर तले सिर्फ दो परत हों।

दो मेली रोटी (स्त्री) दो क़िस्म के अनाजों के आटे को मिलाकर पकाई हुई रोटी **जैसे** माश और ज्वार, मूँग और मकई वग़ैरा।

डबल रोटी (स्त्री) देखें नानपाव।

रफीदा (पु0) तंदूर में रोटी लगाने की गोल गद्देनुमा गद्दी जो कपड़े के ग़िलाफ़ में फूंस भरकर बना ली जाती है। इस पर गढ़ी हुई रोटी रखकर तंदूर में लगाते हैं और जोड़ी से निकालते हैं। **चित्र–रफीदा।**

रोट (पु0) रोटी का इस्मे मुकब्बर। **देखें** रोटी।

रोटी (स्त्री) गुँधे हुये आटे की हस्बे ज़रूरत छोटी, बड़ी, मोटी, पतली और आमतौर से गिरवे की शक्ल में बना और तवे या तंदूर में सेंककर खाने के लायक तैयार की हुई जिंस, इस्तिलाह में रोटी कहलाती है और बहुत से मुख़्तलिफ़ नामों से मौसूम की जाती है। **डालना** तवे पर रोटी सेंकना। रोटी पकाना। **गढ़ना, बेलना, बढ़ाना** के साथ भी बोला जाता है। **प्रयोग** सालन तैयार हो गया रोटी डालनी शुरू हुई है। **लगाना** रोटी सेंकने को तंदूर में जमाना। **प्रयोग** तंदूर गरम हो रहा है। रोटियाँ लगाईं जा रहीं हैं। **उतारना** सिकने के बाद तवे पर से रोटी अलग कर लेना। **प्रयोग** भटियारा रोटी उतारकर गरम गरम भेज रहा है। **फेरना** तवे पर रोटी का रुख़ बदलना। उलट–पुलट करना। **कहावत** रोटी जली क्यों, पान गला क्यों। फेरा न था। **निकालना** तंदूर में से सिकी हुई रोटी बाहर लाना। **प्रयोग** नानबाई तंदूर में से रोटियाँ निकालकर ग्राहकों को देता जाता है। **धमकना** तंदूर से रोटी का छुटकर नीचे गिर जाना। **कहावत** *रोटी खाइये शकर से, दुनिया लीजिए मकर से। पेट भर याँ रोटियाँ, सब ही कल्ला मोटियाँ।*

रौगनी रोटी रोटी **(स्त्री)** रौग़न मिलाकर पकाई हुई रोटी यानी वह रोटी जिसके खुश्क या गुँथे हुए आटे में रौगन मिला लिया जाये।

रूखी रोटी (स्त्री) बगैर रौग़न या सालन के सादी रोटी।

साँचा (स्त्री) नानपाव पकाने का कैंडा या ज़र्फ़। **दौड़ना** नानपाँव के साँचे को भट्टी के अन्दर पहुँचाना।

सेंकना (क्रिया) रोटी को तवे या आग की गरमाई में पुख़्ता करना, पकाना।

शीरमाल (स्त्री) देखें बाक़रख़ानी।

फतीरी रोटी (स्त्री) परतदार रौग़नी रोटी। पंजाब की इस्तिलाह, जो ग़ालिबन किसी अ़रबी लफ़्ज़ का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है।

फय्यर (पु0) फिराना या फेरने के इसमे आलः का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। तंदूर साफ करने की कूँची, जिसको तंदूर में चौ तरफ फेरकर धुँएं की कलौंस साफ करते हैं। जो उसकी सतह पर जम जाती है।

काक/कअ्क (पु0) देखें टिकिया और चौका। हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियारी, देहलवी (रह0) का लकब काकी मशहूर है। जो टिकियों की करामत ज़ाहिर होने का सबब बताया जाता है।

करारी रोटी (स्त्री) देखें ज़्यादा सिकी हुई रोटी जिसमें से नमी का असर जाता रहा हो या बहुत कम हो गया हो।

कुल्चा (पु0) ताफ़्ता। तंदूर में पकाया हुआ ख़मीरी फुल्का जिसमें ख़मीर की लाग और थोड़ा रौगन दिया जाता है। **देखें** फुल्का।

कोचना/कोचनी (पु0/स्त्री) प्रकोब, कचोका। रोटी में छेद बनाने या रोटी छेदने का सह शाखा, पंज शाखा, कंघीनुमा या गोल क़िस्म का दाँतेदार औज़ार जिससे रोटी को गोदा जाता है। ताकि वह फूले नहीं। यह अमल ज़्यादातर तंदूरी रोटी पर किया जाता है। क्योंकि तंदूर में रोटी फूलकर अकसर गिर जाती है। **कचोक्ना** के साथ बोला जाता है।

केक (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ काक या उसके मुअ़र्रब कअ्क का अंग्रेज़ी तलफ़्फ़ुज़ जो उर्दू में आम हो गया है। टिकिया की क़िस्म की बनाई हुई चीज़ जो हस्बे ज़ुरूरत छोटी बड़ी और मुख़्तलिफ़ शक्लों की अंडा मक्खन और क़ंद मिलाकर बहुत खुश ज़ाइका बनाई जाती है।

खोच्नी (स्त्री) तंदूर से रोटी छुड़ाने की आहनी सलाख़।

खोच्नी

काँक्डा (स्त्री) बाटी। वसते–हिन्द में बाज़ मुक़ाम पर काँक्ड़ा कहलाती है।

गाव दीदा (स्त्री) शीरमाल, बाक़रख़ानी या ख़मीरी रोटी आमतौर से दो शक्ल की गोल और लमबोत्री पकाने का अक्सर चलन है। बाज़ मुक़ामात पर गोल शक्ल की रोटी ग़म की और लम्बोतरी शक्ल की रोटी खुशी की तक़रीब के लिए मख़सूस समझी जाती है। इस तरह गोल रोटी के लिए गाव दीदा और लम्बोतरी के लिए गाव ज़बान उर्फ़ बन गये थे। जो अब मतरूक होते जा रहे हैं।

गाव ज़बान (स्त्री) गाय की ज़बान की शक्ल की बाक़र ख़ानी या शीरमाल, तफ़सील के लिए। **देखें** गाव दीदा।

गिजगिजी रोटी (स्त्री) ऐसी मोटी रोटी जो दोनों रूखों के बीच में अध्पक्की रही हो।

गद्री रोटी (स्त्री) किसी क़दर मोटी और गुदाज़ चपाती। **देखें** चपाती।

लोच (पु0) गुँधे हुए आटे का लेस या चिपकाव, जो उमदा क़िस्म के गेहूँ के आटे में बहुत ज्यादा होता है। **आना** के साथ बोलते हैं।

लोई (स्त्री) गुँधे हुए आटे की एक रोटी के लायक लुग्दी जो पेड़ा बनाने को आटे से तोड़ी जाये। मजाज़न पेड़े को भी कहते हैं और मस्दर बनाना के साथ इस्तेमाल करते हैं। **जैसे** लोई बनाना। **तोड़ना, काटना** के साथ बोलते हैं।

हैं जिन के तन मुलायम मैदे की जैसे लोई ।
वह इस हवा में ख़ासी ओढ़े फिरते हैं लोई।। (नज़ीर)

माँढा/माँढ़ा (पु0) तुनकी। पतील रोटी, बहुत पतली और चौड़ी चक्ली रोटी, जो आमतौर से पुलाव वग़ैरा की क़ाबों पर ढकने को पकाई जाती है। ताकि चावल गर्म और नर्म रहे।

माया (पु0) देखें ख़मीर।

मथ्ना (क्रिया) मैदे या आटे का लोच उठाने या बढ़ाने को हाथ की हथेली से दबाकर मल्ना।

मरोड़ी/मरोड़ियाँ (स्त्री) हाथ में चिपके हुए आटे की बत्ती या बत्तियाँ जो हाथों को मलने से निकलें यानी रोटी पकाने में जो आटा हाथों में चिपक जाता है। वह मलकर निकालने से बत्ती की शक्ल बन जाता और इस्तिलाह में मरोड़ी कहलाता है। **निकालना** के साथ बोला जाता है।

मुक्की लगाना (क्रिया) मुट्ठी बन्द करके आँटा गोधँना। इस अ़मल में आटे में लोच जल्दी पैदा होता है।

नान (स्त्री) रोटी। हिन्दुस्तान में यह लफ्ज़ तंदूर की पकी हुई ख़मीरी रोटी के लिए मख़सूस है। **कहावत** *नान नहीं तो जान नहीं।*

नानबाई (पु0) तंदूरी रोटी पकाने वाला पेशेवर कारीगर। हिन्दुस्तान में तंदूरी और ख़मीरी रोटी पकाने का रवाज़ मुसलमानों के अहेद से हुआ।

नानपाव (पु0) डबल रोटी। नान फ़ारसी और पाव पुर्तगाली लफ्ज़ है। दोनों हममानी हैं। उर्दू में एक लफ्ज़ बन गया है। जो मग़रिबी तर्ज़ की भट्टी में पकाई हुई ख़मीरी रोटी के लिए बोला जाता है। दकन में डबल रोटी के नाम से मअ़रूफ है जो अहले यूरप के बावर्चियों की ईजाद करदा नाम है और आमतौर से दकन में इस क़दर मशहूर है कि लफ्ज़ नानपाव किसी की ज़बान पर नहीं आता।

नाने गुल्ज़ार (स्त्री) फूल या सितारे की शक्ल की बनी हुई रोटी।

वर्क़ी पराठा (पु0) परतदार पराठा। चन्द बारीक बारीक परत रौग़न की लाग से बाहम मिलाकर पकाया हुआ पराठा जिसका हर एक परत रौग़न की वजह से अलग–अलग रहता और खूब खस्ता हो जाता है। परत आपस में बल खाये हुये मालूम होते हैं। इसलिए बलदार पराठा भी कहते हैं। जो पर्तों को मिलाकर और बल दे कर गढ़ने से बन जाता है।

4 पेशा–ए–बावर्चीगिरी (त़ब्बाख़ी)

उबाल (पु0) पानी जैसी पतली शैय् के पकने का जोश, उफान। जैसे दूध का उबाल। **आना, उठना** के साथ बोला जाता है।

उबाला/उब्ला (पु0) पानी में जोश हुआ वा बग़ैर रौगन का पक्का हुआ। जैसे उबाला सालन, उबाली खिचड़ी, उब्ले चावल।

उबालना (क्रिया) किसी चीज़ को पानी में जोश देना।

उबाला सालन (पु0) बगैर रौग़न का पक्का हुआ सालन, भाजी, तरकारी वगैरा।

उबाली खिचड़ी (स्त्री) बगैर रौग़न डाले पकाई हुई खिचड़ी, चावल वगैरा।

उबाली हंडिया (स्त्री) बगैर रौग़न डाले पकाई हुई शैय्। यहाँ ज़र्फ़ से मज़रूफ़ मुराद है। यानी उबाला, पक्का हुआ सालन वगैरा।

उब्सा खाना (पु0) देखें बुस्यारा (बस्यौरा)

उबस्ना (क्रिया) देखें बुस्ना।

उझीना (पु0) चूल्हे के अन्दर आग रौशन करने की जालीदार लगाया हुआ ईंधन ताकि सूराख़ों में से हवा दाखिल होकर आग जल्द सुलग जाये। झीना या छीना उप्ले को कहते हैं। उझीना से मुराद इधर–उधर रखे हुए उप्ले जिनमें जगह ख़ाली हो। **लगाना, जमाना, रखना, निकालना** के साथ बोला जाता है।

अध्कच्चा/अध्कचरा (पु0) वह शैय् जो पकाने में पूरे तौर से न गली हो और कुल में क़चाँद बाक़ी हो। **जैसे** गोश्त वगैरा।

आशे जौ (पु0) जौ का जोश किया हुआ पानी। जौ का जोशाँदा।

अखाना (पु0) बहुत खाऊ, पेटू। बिसयार खोर। खाऊ पीर।

अगवाई (स्त्री) देखें ऐरा।

आलन (पु0) सालन का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** सालन।

अलोना (पु0) (अ+लोन) बगैर नमक का खाना। फीका पकवान।

अम्चूर (पु0) (आम +चूर) खटाई, कच्चे आम का सुखाया हुआ चूरा, जो सालन में डालने की

ज़रूरत से छीलकर और छोटे–छोटे टुकड़े करके सुखा लिया जाता है।

अम्रस (पु0) आम के रस का बनाया हुआ हल्वा।

आँच (स्त्री) आग की लौ, लपट। शोला जो ईंधन के जलने से पैदा हो। **जलना, जलाना, होना** के साथ बोला जाता है। **भड़कना** आग के शोलों का तेज़ होना। **प्रयोग** आँच भड़क रही है। थोड़ा पानी डालकर धीमी करो। **फूँकना** शोला निकलने के लिए आग को हवा देना। आग सुलगाना। **देना** किसी चीज़ को आग की हरारत पहुँचाना। **प्रयोग** सालन को एक आँच देकर उतार लो। **सुलगना, सुलगाना** आग जलाना, पैदा होना, पैदा करना। **प्रयोग** नौकर सुबह सवेरे आग सुलगा कर पानी गर्म करता है। **प्रयोग** गर्मी के मौसम में एक दीवा सलाई से आग सुलग जाती है। **खींचना** चूल्हे में से आग बाहर निकालना। हंडिया के नीचे से आग करना। **खींचना** आग की तेज़ हरारत पहुँच जाना। **भड़कना, सुलग्ना**। **प्रयोग** तेज़ आँच लगने से सालन जल गया।

आँच का खेल (पु0) खाना पकाने में हसबेज़रूरत आग की कमी व बेशी का ख्याल रखना और इस पर अ़मल करना ताकि हंडिया पकने के उतार चढ़ाव की हद में फर्क न आये। **प्रयोग** हर चीज़ को हसबे–मर्ज़ी खुश ज़ाइका पकाने के लिए आग का खेल खेलना पड़ता है। **प्रयोग** चावल पकाने में सारा आँच का खेल है।

आँवन (स्त्री) लेव। हंडिया के पेंदे पर मिट्टी का पोता, जो उसको जलने से बचाये। **फेरना** के साथ बोला जाता है।

औला/एला (पु0) बुर्सी, भेद, सूराख। चूल्हे के मुँह के बराबर पीछे को बना हुआ मोखा जिसपर हंडिया पकने को रखी जा सके। **देखें** तस्वीर चूल्हा।

औलेदार चूल्हा (पु0) दुहरा बना हुआ चूल्हा। **देखें** तस्वीर चूल्हा।

ओलमा/दल्मा (पु0) तुर्की लफ्ज़ योल्मा का उर्दू तलफ्फुज़। मसाला या गोश्त भर कर पकाई हुई तरकारी जैसे टिमाटर, करेला, टिंडा या हरी मिर्च वग़ैरा का ओल्मा। क़ीमा भरी हुई को ओल्मा और मसाला या दाल वग़ैरा भरी हुई दल्मा कहलाती है। बाज़ पकाने वाले चुस्ते या आँत में भी गोश्त भरकर पकाते हैं।

ऐरा/अहरा (पु0) संस्कृत लफ्ज़ अहारा बमानी चूल्हे के सामने खाना रखने की जगह का उर्दू तलफ़्फुज़ अगवाई, रहा, धाई, गेह। चूल्हे की सामने की महदूद जगह जो सालन दम देने या रोटी सेंकने को बनाई जाती है। **देखें** तस्वीर चूल्हा।

बासी खाना (पु0) वह ग़िज़ा जिसमें ताज़ापन न रहा हो और जिस को पक्के हुए एक दिन या रात गुज़र गई हो। तफ़सील के लिए **देखें** बासी रोटी पेशा ए नान बाई।

बावर्ची (पु0) बकावल रसोइय्या, त़ब्बाख़। खाना पकाने वाला पेशेवर कारीगर।

बावर्ची ख़ाना (पु0) रसोई घर। खाना पकाने की जगह यानी इमारत या मकान का वह हिस्सा जहाँ रोज़मर्रा का खाना पकाया जाये।

बुर्सी (स्त्री) देखें औला।

बिरयानी (स्त्री) पुलाव की एक पुरतकल्लुफ क़िस्म जिसमें घी, गोश्त की मिक़दार ज़्यादा और मसालों में ज़ाफ़्रान का जुज़ खास होता है। ईरानी खानो में बिरयानी से मुराद शायद बघरे चावल हों लेकिन उर्दू में उस का मफ़हूम ख़ास तरीके से पुरतकल्लुफ़ पकाये हुए पुलाव के लिए मख़सूस हो गया है। **देखें** पुलाव।

बड़ियाँ (स्त्री) बड़ा बमानी मूँग या माश की पीठी यानी गीली पिसी हुई दाल की तली हुई टिकिया का इसमे मुसग़्गर बड़ी का सीग़ा–ए–जमा है, जो माश या मूँग की छिल्के से साफ़ की हुई गीली दाल को पीसकर और नमक मिर्च वग़ैरा मिलाकर छोटी छोटी लुगदियों की शक्ल में सुखाकर रख ली जाती है और बवक़त ज़रूरत दाल की बजाये उनका सालन पकाया जाता है। दाल की सूरत बदलकर पकाने का यह एक पुरतकल्लुफ तरीक़ा है। **तोड़ना** गीली पिसी हुई दाल को लुगदी की

शक्ल में बनाना। इस्तिलाह में बडियाँ तोड़ना कहलाता है।

बुसना (क्रिया) उबसना। खाना, सालन वगैरा सड़ जाना। उतर जाना। बदबूदार हो जाना।

बुसयारा/बसयौरा (पु0) उबसा हुआ खाना। बदबूदार खाना, बुसा हुआ खाना। असली ज़ाइके से उतरा हुआ खाना।

बिश्क़ाब (स्त्री) तुर्की लफ्ज़ बमानी बड़ी रकाबी बाज रकाबदार मिश्काब कहते हैं। **देखें** लफ्ज़ क़ाब, पेशा ठटेरा गिरी। पृ0

बकावल (पु0) देखें बावर्ची।

बघार (पु0) रौग़न दाग। छौंक। दाल, चावल या भाजी वगैरा में घी या तेल को प्याज वगैरा के साथ कड़–कड़ा के डालने का अ़मल।

बघारना (क्रिया) छौंकना। दाल चावल या भाजी वगैरा को रौग़न का दाग देना। सालन का मसाला रौग़न में भूनना। जिसको हडिया बघारना या सालन बघारना कहते हैं। **देखें** बघार। **प्रयोग** मामा, सालन बघारकर रोटी पकाती है। **प्रयोग** दाल बघार दी रोटी पकाना बाक़ी है।

बघारी हंडिया (स्त्री) बघरा सालन। उबाली हंडिया की ज़िद। रौग़न का दाग़ देकर पकाई हुई हंडिया। **देखें** उबाली हंडिया।

बघरे चाँवल (पु0) देखें चिलाव।

बंजारी दाल (स्त्री0) पन छुटी पक्की हुई दाल यानी ऐसी पक्की हुई दाल जिसमें दाल के दाने और पानी इलाहिदा रहे। बगैर घुटी दाल। चूँकि बंजारे सफर में इस क़िस्म की दाल जल्दी और आसानी के लिए पकाते हैं। इसलिए इस क़िस्म की पकाई हुई दाल बंजारी दाल के नाम से मअ़रूफ़ हो गयी है। इसमें मसाला भी बगैर पिसा डाला जाता है।

बूट पुलाव (पु0) कच्चे और हरे चने डालकर पकाया हुआ पुलाव। बाज़ पकाने वाले साबित चने डालते हैं और बाज़ दाल बनाकर डालते हैं। मटर का भी पकाते हैं। **देखें** पुलाव।

बूरानी/बूरन (स्त्री) दही का बनाया हुआ राइता। जो दही प्याज़ या दही और कोई उबली हुई तरकारी डालकर बना लिया जाता है और बिरयानी के साथ इस्तेमाल किया जाता है।

बीबी की स़हनक (स्त्री) नियाज़ के खाने की रकाबी जिसको सिर्फ़ पर्हेज़गार और पाकदामन बीबियाँ खाती हैं।

भात (पु0) देखें खुश्का।

भाजी (स्त्री) संस्कृत मिरज बमानी भूनना। भुना हुआ साग पात जो बतौर सालन इस्तेमाल किया जाये। साग पात को वस्ते–हिन्द और दकन में भाजी कहते हैं। जैसे मेथी की भाजी, पालक की भाजी वगैरा शिमाली हिन्द में आमतौर से साग का लफ्ज़ बोला जाता है। **जैसे** पालक का साग, मेथी का साग वगैरा भाजी का लफ्ज़ शिमाली हिन्द में गैर मअरूफ़ है। **भूनना, छौंकना** सालन की जुरूरत के लिए भाजी बघार कर पकाना।

भुजिया (स्त्री) भूना हुआ साग–पात, जो रोटी के साथ बतौर सालन खाने के लिए तैयार किया गया हो। लफ्ज़ भुजिया शिमाली हिन्द में आमतौर से भुने सागपात के लिए बोला जाता है। दकन में ग़ैर मअरूफ़ है।

भजिया (पु0) दकन में बेसन मिलाकर तला हुआ सागपात आमतौर से भजिया कहलाता है। जो ग़ालिबन भाजी और भुजिया का मुक़ामी तलफ़्फुज़ है। शिमाली हिन्द में मज़कूर उस–सदर मफ़हूम में लफ्ज़ भजिया ग़ैर मअ़रूफ है।

भुर्ता (पु0) किसी ख़ास तरकारी, जडी या दाल को उबाल, कुचल, पीस और हसबे–ज़ाइक़ा मसाले मिलाकर तैयार किया हुआ सालन जिसको रौग़न से बघार लिया जाता है। **जैसे** आलू का भुर्ता बैंगन का भुर्ता, चने की दाल का भुर्ता वगैरा। **राइता** दही मिला हुआ भुर्ता बाज़ तरकारियों के भुर्तों में दही मिलाकर एक तरह का सालन बना लिया जाता है। ऐसे भुर्ते को इस्लिाह में राइता कहते हैं। **जैसे** कद्दू, बैंगन, ककड़ी, आलू वगैरा का राइता। **करना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

भुना हुआ सालन (पु0) बग़ैर शोरबे का सालन, आमतौर पर बगैर शोरबे के मसालेदार पकाये हुए गोश्त को कहते हैं।

भण्डार/भंसाल (पु0) ग़ल्ला रखने का गोदाम। कोठा या कोठारी मोदीख़ाना, मुलम्मा घर, ख़ाम अश्या खुर्दो–नोश रखने की जगह।

भण्डारा (पु0) खैराती दावत, अल्लाह के नाम पर खाना खिलाना।

भण्डारी (पु0) कोठारी, मुलम्मा घर वाला।

भंडसाली। अश्या–ए–खुर्दो–नोश और गल्ला वगैरा रखने की खिदमत अंजाम देने वाला शख्स या खाना पकवाने का इंतजाम करने वाला।

कहावत *दाता दे भण्डारी का पेट फटे।*

भोज/भोजन (स्त्री) भोग। ग़िज़ा जो भूख मिटाने को खाई जाये। पेट भरने को खाने की चीज। **भोजना** ग़िज़ा खाना। **परोसना** खाने का दस्तरख़्वान लगाना, चौका लगाना। खाने के लिए खाना सामने रखना। खाना पेश करना।

भूख गयी भोजन मिली।
जाड़ा गया गब्बा आई।।
जौबन गया तिरिया मिली।
तीनों ढबो भई।।

बायीं ते भोजन करे।
दहिने पीवे नीर।।
दस दिन यूं भू लौर हो।
आवे रोग शरीर।।

भोजपत्र/भोजपत्तल–(पु0,स्त्री0) खाना खाने का पत्तों का बनाया हुआ थालीनुमा ज़र्फ। **देखें** पत्तल। पेशा टोकरीसाज़ी। पृ0

भोग (पु0) देखें भोज।

भूनी खिचड़ी (स्त्री) घी में भूनकर पकाई हुई खिचड़ी या दाल वगैरा।

पाठा मारना (क्रिया) ठंडिया जाना। खुश्के, खिचड़ी या पुलाव का पकने के बाद देर तक रखे रहने से ठंडा होकर रूखा हो जाना। लफ्ज़ पाला मारना बमानी सर्दी लग जाने से तब्बाख़ी की एक नई इस्तिलाह बन गयी।

पार्चे का कवाब (पु0) गोश्त के बगैर कटे सालिम तिक्के का भूना हुआ कवाब।

पथरौटा/पथरौटी (पु0/स्त्री) खरल। मसाला पीसने का ओखली की क़िस्म का पत्थर का बना हुआ प्यालेनुमा ज़र्फ़। **देखें** पेशा संगे तराशी जिल्द अव्वल। पृ0

पटाखे का अंडा (पु0) सितारा। खडा, अंडा। बगैर लत किया तला हुआ अंडा जिसमें ज़र्दी सफेदी के बीच में तारे की तरह मालूम हो।

पिचपिचा खुश्का (पु0) देखें खुश्का।

पचमेल दाल (स्त्री) सब क़िस्म की मिली हुई दाल यानी पाँचों दालें मिलाकर पकाने का तरीक़ा।

पछोड़ना (क्रिया) देखें शम्शू करना।

परोसा (पु0) खाना ग़िज़ा। पेट भरने को खाने की चीज़ या चीज़ें।

परोसना (क्रिया) देखें भोजन परोसना।

परोसिया (पु0) दस्तर ख्वान पर खाना चुनने वाला शख़्स, खाना पेश करने या खिलाने वाला कमेरा।

पसाना (क्रिया) चावलों को खौलते हुये पानी में उबालना, इस तरह कि जब चावल अधगले हो जायें तो फिर पानी निथार देना।

पसाव (पु0) चावल उबालने का पानी।

पसन्दे का कवाब (पु0) गोश्त के अध्कुटे तिक्के का भूना हुआ कवाब। यानी अध्कुटे तिक्के का बनाया हुआ कवाब।

पक्की रसोई (स्त्री) (हिन्दुओं में पक्की रसोई से तली हुई ग़िज़ा मुराद ली जाती है। जिसके लिए चौके की जुरूरत नही। हर जगह खाई जा सकती है। इसकी ज़िद कच्ची रसोई कहलाती है। जो चौके के बाहर नहीं जा सकती। तफ़्सील के लिए **देखें** लफ़्ज़ चौका।

पकवान (पु0) खाने की चीजों की पकाई। पकाने का हासिल मस्दर। **प्रयोग** रसोइया पकवान में लगा हुआ है। **प्रयोग** आज क्या पकवान होगा। उर्दू में पकवान का मफ़हूम हिन्दी भाषा से बिल्कुल जुदा है। यानी चन्द मख़सूस चीजें जो बरसात के मौसम में तलकर पकाई जाती हैं। मजमूई तौर पर पकवान के नाम से मौसूम की जाती है। **प्रयोग** बरसात की रुत में घर–घर पकवान होता है।

प्रयोग बागों में झूले पड़े हुये हैं और पकवान हो रहा है।

कहावत *ऊँची दूकान फीका पकवान।*

पकवाई (स्त्री) खाना पकाने की उज़रत।

पुलाव (पु0) गोश्त के साथ पकाये हुए चावल, जो मुख़्तलिफ़ तरीकों से और मुख़्तलिफ़ चीजें शामिल करके पकायें और उन ही के नामों से मौसूम किये जाते हैं। **मसलन** बूट, मटर या मूँग शामिल करने से बूट पुलाव, मटर पुलाव या मूँग पुलाव कहलाता है। इसी तरह मुर्ग पुलाव, तीतर पुलाव, माही पुलाव, वगैरा के नाम भी मशहूर हैं जो मुर्ग, तीतर या मछली के गोश्त में चावल पकाने की वजह तसमिया है। बगैर मसाले का पुलाव जिसमें खुश्बू के लिए मामूली गरम मसाला डाला जाता है। यख़नी पुलाव और मसालेदार, क़ोरमा और कुलिया पुलाव कहलाता है।

पन भत्ता (पु0) देखें खुश्का।

पनछुटी दाल (स्त्री) पन्हियाई दाल। अध् कच्ची पक्की हुई दाल जो घुली घुटी न हो और पानी छुटा रहे।

पनौटा (पु0) देखें खुश्का।

पन्हियाई दाल (स्त्री) देखें पन छुटी दाल।

पूची (स्त्री) देखें चूना।

प्याज़ दागना (क्रिया) प्याज रौग़न में भूनना।

पीच (स्त्री) चावल उबाला हुआ पानी जो निथार कर निकाला गया हो और जिसमें चाँवलों का असर आ गया हो। ऐसे उबले हुए चावल जिसमें कुछ पीच रह जाये पिचपिचे कहलाते हैं।

फाली (स्त्री) हंडिया के रोक की आड़ जो चूल्हे के मुँह पर लगा दी जाये। यह एक आहनी पट्टी होती है औ लफ़्ज़ फार का दूसरा तलफ्फुज़ है।

फरेरा खुश्का (पु0) देखें खुशका।

फरेरी दाल (स्त्री) ऐसी पक्की हुई दाल जिसमें पानी न रहा हो और दाने घुल मिल न गये हों।

फुक्नी (स्त्री) आग फूक्ने का नल्वा।

फेंटना (क्रिया) लत करना। किसी चीज के अज्ज़ा को खँगालकर एकजान करना। **जैसे** अंडा, दही वगैरा फेंटना।

तार (पु0) सालन के शोर्बे के ऊपर हल्की और मुन्तशिर तैरती हुई चिकनाई जो बुंदकी की शक्ल बन जाये। **प्रयोग** कैदियों को रोटियाँ सूखी और सालन रूखा जिसपर नाम को चिकनाई का तार न हो, खाने को मिलता है।

तिरमिरा (पु0) सालन के शोर्बे पर गोल छल्लेनुमा तैरती चिकनाई, जो कम मिक़दारी की वजह शोरबे पर फटी–फटी तैरती हो। **प्रयोग** सालन का सारा घी गिर गया। तिरमिरा तक बाक़ी नहीं रहा।

तलछट (स्त्री) लब धड़ा। हँडिया की तह पर बैठी हुई सालन के शोरबे की गाद। शोरबे का कसीफ़ जुज़ जो छुटकर नीचे आ जाये।

तंदूरी चूल्हा (पु0) देखें चूल्हा।

तोरा (पु0) खाने का ख्वान जो शादी की तक़रीब के मौके पर दूर परे के रिश्तेदारों और मुलाक़ातियों में दावत के बदले भेजा जाये। इसलाफ़ का यह तरीक़ा अब मतरूक और यह नाम ग़ैर मअ़रूफ़ हो गया है।

लगा के ख्वान में भेजा न कीजिए कुछ चीज़।
खुदा के वास्ते हम गुजरे ऐसे तोरे से।। (इंशा)

बंदी करना शादी की तक़रीब पर खाने के ख्वान अहबाब और अज़ीजों में भेजना।

तोरे पोश (पु0) तोरे का ढकना या सरपोश।

तहदेगी/तहदेगी (स्त्री) देग़ की तह पर की बिरयानी या पुलाव। यह लफ़्ज़ ख़ास बिरयानी और पुलाव के लिए मख़सूस है।

तई का कवाब कच्चे कीमे में मसाला मिलाकर गोलियों की शक्ल तले हुए कवाब। तई एक क़िस्म की उथलवाँ कड़ाई को कहते हैं। जिसमें यह कवाब तले जाते हैं। वही इनकी वजहे तसमिया हो गयी है।

टट्टी का कवाब गोश्त के तिक्के को लोहे की जाली पर भून कर बनाया हुआ कवाब। इस जाली को इस्तिलाह में टट्टी कहते हैं और यही वज्हे तस्मिया है।

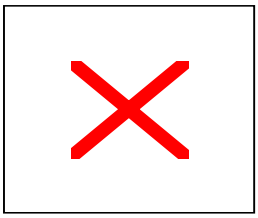

जराती (पु0) देखें रस।

जमाऊ दूल्हा (पु0) उठाऊ चूल्हे की ज़िद। मिट्टी का पक्का बना हुआ चूल्हा, जो एक जगह क़ायम हो।

जूना/झूना (पु0) पूची। बर्तन माँझने का सूफ़ जो नारियल के रेशे या बान, मूँज वगैरा का बना लिया जाय। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

झूट/झूटन (स्त्री) वह खाना जिसमें से कुछ खा लिया हो यानी जो अछूत न रहा हो। हिन्दुओं में ऐसे खाने को नापाक समझा और अछूत को दिया जाता है।

चुटपुटा सालन (पु0) तेज मसालों का सालन यानी जिसमें मिर्च मसाले और खटाई मामूल से कुछ ज़्यादा हो।

चिराँद (स्त्री) चर्बी या रौग़न के जलने की बू। पुराने घी या चर्बी की बू।

चखौतिया (पु0) सालन या दूसरे क़िस्म के खानों के आबो नमक और ज़ाइक़े की जाँच करने वाला शख्स।

चिलाव (पु0) बघरे चाँवल। घी मे भूनकर और गरम मसाला वगैरा डालकर पकाये हुए चावल, बगैर गोश्त का पुलाव।

चिल्ला/चेला (पु0) नमक मिर्च के साथ लत करके या फेंट कर टिकिया की शक्ल में तला हुआ अंडा।

चौका (पु0) हिन्दुओं में खाना खाने के लिए बैठने की महदूद जगह, जो रसोई घर में गोबर से लीप कर बना ली जाती है और निहायत पाक और पवित्र समझी जाती है। कच्ची रसोई यानी ऐसी ग़िज़ा जो तलकर न पकाई जाये। चौके के बाहर खाई जा सकती और न उस तक कोई अछूत जा सकता है। **बनाना, करना** खाने के लिए बैठने को रसोई घर में जगह बनाना। **लगाना** चौके में खाना खाने को रखना।

चूक (स्त्री) पंजाबी। सालन में डालने का खट्टा मसाला। उर्दू में खट्टे के साथ मिलाकर **खट्टा चूक** कहते हैं। दकन की मुक़ामी ज़बान में इमली के दरख्त की कोपल जो बहुत खट्टी होती है। चुगर कहलाती है। जो सालन में खटाई के लिए डाली जाती है।

चुगर (पु0) देखें चूक।

चिलाव (पु0) बघरे चाँवल, ताहिरी। घी में बिरयाँ कर के नमक और गरम मसाला डालकर पकाये हुए चाँवल।

चोटीदार रकाबी (स्त्री) चाँवल या खिचड़ी से नोंकदार भरी हुई रकाबी जो मख़रूती शक्ल मालूम हो।

चूल्हा (पु0) खाना पकाने की लम्बोतरी क़ौस की शक़्ल बनी हुई भट्टी जिसके पाखे क़रीब नौ इंच ऊँचे होते हैं। हसबेज़रूरत मुख्तलिफ क़िस्म का बनाया और जुदा जुदा नामों से मौसूम किया जाता है। **जैसे** उठाऊ चूल्हा, तन्दूरी चूल्हा, काना चूल्हा वगैरा।

उठाऊ चूल्हा (पु0) ऐसा हल्का–फुल्का बना हुआ चूल्हा जो हस्बेज़रूरत एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जाया जा सके। जमाऊ चूल्हे की ज़िद। **बाल्ना, जलाना, सुलगाना, गरम करना** चूल्हे में आग रौशन करना। **फूँकना** चूल्हे की आग को हवा देकर तेज़ करना, भड़काना। **गरम करना** हर वक़्त कुछ न कुछ पकते रहना। **प्रयोग** बड़े आदमियों का चूल्हा सुबह से शाम तक गरम रहता है। **झोंकना (मुहावरा)** चूल्हे में ईंधन लगाना, खाना पकाने का काम अंजाम देना। **प्रयोग** सुबह से शाम तक चूल्हा झोंकते गुजरती है। जब कहीं चार पैसे का मुँह देखना नसीब होता है। **पानी पड़ना (मुहावरा)** जब खाना पक रहा हो उस वक़्त घर में कोई मर जाये तो खाना पकाना बन्द करके चूल्हा ठंडा करने को उसमें पानी डाल देते हैं। इसलिए चूल्हे को पानी डालकर ठंडा करना नामुबारक समझा जाता है। **तन्दूरी चूल्हा–** ऐसा चूल्हा जिसके बीच में आग और उसके चारों तरफ खाना पकाने के लिए मोखे बने हों। बीच में से आग की लपट सब में बराबर पहुँचती हो। यूरप के ज़दीद वज़अ के आहनी चूल्हे इस क़िस्म के बनाये जाते हैं। **काना चूल्हा–** जिसमें उस के मुँह

से मिला हुआ पीछे को कोई मोखा हंडिया पकाने का न हो। जो इस्तिलाह में औला कहलाता है।

चुल्हकट (स्त्री) चूल्हे की जली हुई मिट्टी।

चुल्हानी (स्त्री) चूल्हा बनाने की जगह। चूल्हे की जगह।

छौंकना (क्रिया) देखें बघारना।

छींका (पु0) सक्कू। रस्सी या तार का बनाया हुआ झूलेनुमा लटकन जिसमें बवक़्ते ज़रूरत खाने की चीज़ें रख दी जायें। ताकि बिल्ली, चूहे वग़ैरा से महफ़ूज़ रहें।

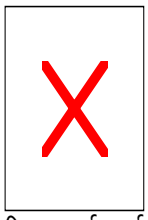

हरीरा (पु0) बाज़ ख़ास चीजों की पतली पकाई हुई ग़िजा जो हसबेज़रूरत मीठी, नमकीन, मुरग्ग़न या सादा होती है और जिस चीज़ की बनाई जाती है उसी के नाम से मौसूम की जाती है। जैसे बादाम का हरीरा, रवे का हरीरा, साबूदाने का हरीरा वग़ैरा।

हलीम (स्त्री) गेहूँ, चने की दाल और गोश्त तरकीब के साथ मिलाकर और बारह मसाले डालकर पकाई हुई ग़िज़ा, सब अज्ज़ा को पकने के बाद घोटकर एकजान करके घी और प्याज़ का बघार दे दिया जाता है। बाजार में फ़रोख़्त करने के लिए भटियारे भी पकाते हैं और "हलीम है बारह मसाले की" आवाज़ लगाकर गाहकों को बुलाते हैं।

ख़ागीना (पु0) अंडे को लत करके और मसाला वग़ैरा मिलाकर पकाया हुआ भूना सालन। (फ़ारसी लफ़्ज ख़ायः बमानी अंडा) से अंडे का सालन मुराद है।

– शुद आँ मुर्ग़ को ख़ायः ज़ररीं निहाद।

ख़ाम (पु0) देखें दम।

ख़ान सामाँ (पु0) भण्डारी। बावर्चीख़ाना का दरोग़ा, उर्दू में इस लफ़्ज़ का मफ़हूम अंग्रेज़ी बावर्ची के लिए मख़सूस हो गया है।

खुश्का (पु0) भात, पन भत्ता, पनौटा। उबालकर पकाये हुए रूखे फीके चावल जो पूरब में भात, पच्छिम में खुश्का और दकन में खाना कहलाते हैं। पहले नाम की वजह तसमिया पसंदीद्गी, दूसरे की कमी ज़ाइक़ा और तीसरे की पेट भराऊ होना मालूम होती है। दूसरा नाम बज़ाहिर विलायतियों का रखा हुआ और तीसरा कसरते–इस्तेमाल का नतीजा है। **बैठना** पानी की ज़्यादती, दम देने की ग़लती या चाँवलों की खराबी की वजह खुश्के के दानों का बाहम चिपककर नीचे जमना। **भत्ता होना (मुहावरा)** खुश्के का जुरूरत से ज़्यादा घुलकर चाँवलों की हैय्यत बिगड़ जाना। **पानी उठाना** चाँवलों की उमदगी की वजह खुश्के का मामूल से ज़्यादा पानी जज़्ब करके फूलना। **पसाना** चाँवलों को खौलते हुए पानी में उबालकर निथारना। **लगना** चाँवलों की खराबी या दम देने की ग़लती की वजह खुश्के का देग़चे के पेंदे पर जमकर आग की तेज़ी से ताव खा जाना या जल जाना।

याददाश्त हर क़िस्म के पकाये जाने वाले चावलों और लफ़्ज़ चावल के साथ **पसाना, लगना** बोला जाता है। **पिचपिचा खुश्का** वह खुश्का जिसमें पसाव के पानी का जुज़, जो इस्तिलाह में पीच कहलाता है। बाक़ी रह जाये और खुश्के को चिपचिपा कर दे। **फरैरा खुश्का** ऐसे उबले हुए चावल जिसमें पानी का जुज़ बाकी न रहा हो और एक एक दाना जुदा जुदा और खिला हुआ हो। **कनीदार खुश्का** वह चाँवल या खुश्का जिसके दानों में ज़रा कच्चापन रह गया हो और दाने में नुक़्ते की शक्ल दिखायी दे और मलने से ज़ाहिर हो। **देखें** कनी। **खड़ा खुश्का** मामूल से ज़्यादा फरैरे और किसी क़दर सख़्त पक्के हुये चाँवल **देखें** फरैरा खुश्का। **गुलत्थी** घुटा हुआ खुश्का या घोटकर पकाये हुए चावल।

खुश्क सालन (पु0) बग़ैर शोरबे का भुना व पकाया हुआ सालन।

ख़ताई कवाब (पु0) देखें शामी कवाब।

ख़नपोश/ख्वानपोश (पु0) ख्वान पर ढकने का कपड़ा या सरपोश।

दाल्चा (पु0) दालदार क़लिया। गोश्त में पकाई हुई दाल। शिमाली हिन्द में आमतौर से चने की

दाल का पकाया और चने की दाल का क़लिया मौसूम किया जाता है।

दस्पना (पु0) फ़ारसी लफ्ज़ दस्तपनाह का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ चिमटा। आग पकड़ने का आहनी बनाया हुआ दो शाखा।

दसतर ख़्वान (पु0) बिसात। कपड़े की चादर या कपड़े का बिछौना, जिसपर खाना खाया जाये। **˛बढ़ाना** दसतर ख़्वान उठाने के लिए नेक शगुन को मुहावरे में बढ़ाना बोलते हैं। जैसे चिराग़ बुझाने के बजाये ठंडा करना कहा जाता है। **˛लगाना, चुनना** दस्तर ख़्वान पर सलीक़े से खाने की चीज़ें रखना।

दल् घुटनी (पु0) दाल या हलीम घोटने का ढोई की क़िस्म का चोबी कफ़्गीर।

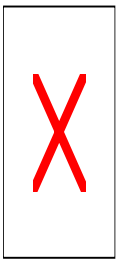

दल्मा (पु0) दाल या मसाला भरकर पकाई हुई तरकारी। **देखें** ओल्मा।

दलिया (पु0) गेहूँ, जौ या ज्वार वगैरा के दले हुए दानों की पतली हरीरे की तरह पकाई हुई ग़िज़ा। **देखें** हरीरा।

दम (पु0) ख़ाम। सालन या चाँवलों की देग़ या देग़ची की भाप बंद करने का अ़मल जो सालन या चाँवलों को भाप की हरारत से गलाने के लिए किया जाता है। **˛देना, करना, लगाना** सालन या चावलों के देग़चे की भाप रोकने को देग़चे का मुँह आटे वग़ैरा से बंद करना। **˛तोड़ना** सालन या चाँवलों के देग़चे के मुँह को, जो भाप रोकने को बंद किया गया था खोलना। **प्रयोग** चावल अभी दम पर रखे है। **प्रयोग** देग़ को ख़ाम लगे थोड़ी देर हुई। **प्रयोग** कब्ल अज़ वक्त दम तोड़ने से चावल कच्चे रह जाते हैं या पकने में खराब रहते हैं।

दमपुख़्त हंडिया (स्त्री) वह सालन या चाँवल जिसको दम लगाकर गलाया गया हो।

दो प्याज़ा (पु0) कतरी हुई प्याज़ बतौर तरकारी डालकर पकाया हुआ गोश्त। कच्ची प्याज़ डालकर पकाया हुआ गोश्त चूँकि इसके साथ घी में भुनी हुई प्याज़ भी डाली जाती है। इसलिए दो प्याज़ा मौसूम किया जाता है।

दोरंगी हंडिया (स्त्री) मुख़्तलिफ़ क़िस्म की कई तरकारियाँ मिलाकर पकाया हुआ सालन जिसके ज़ाइक़े में दुहरी चाट हो। ऐसे सालन को शहरी ज़बान में नौ रतन और देहाती बोली में दीवानी हांडिया कहते हैं।

देग़ची का कवाब हंडिया में बतौर सालन पकाये हुए कवाब जो सीख़ पर भूनने की बजाये ख़ासतौर से देग़ची में भूनकर तैयार किया जाता है और यही उसकी वज्हे तसमिया है।

दीवानी हंडिया (स्त्री) देखें दो रंगी हंडिया।

धुद्का (पु0) फ़ारसी लफ्ज़ दूद बमानी धुवाँ से धुँवाला के मानों में देहाती बोली में धुद्का बोला जाता है।

धोई दाल (स्त्री) छिल्का उतारी हुई दाल यानी पकाने के लिए धोकर छिल्का निकाली हुई दाल।

ढोरा (पु0) देग़ में से पानी या घी निकालने को कटोरे की शक्ल का खड़े दस्ते का कफ़्गीर की क़िस्म का ज़र्फ़। असल लफ़्ज़ ढोया, ढोई का इस्मे–मुकब्बर था जो तलफ़्फ़ुज़ की तब्दीली से ढोरा कहा जाने लगा।

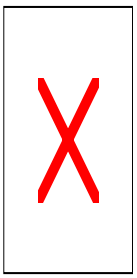

ढोया (पु0) देखें ढोरा। **˛देना** ढोरे से चाँवल या सालन की देग़ में पानी या घी फैलाकर डालना।

ढोल्ना (क्रिया) देखें शम्शो।

रासी (पु0) नमक साफ करने वाला कारीगर।

राइता (पु0) देखें भुर्ता।

रस (पु0) पानी या खार से निकाला हुआ नमक जिसमें मिट्टी की कसाफ़त बाकी हो। **काही** एक मर्तबा का साफ़ किया हुआ रस या नमक। **लाही** दो मर्तबा का साफ किया हुआ रस या नमक। **जराती** तीसरी मर्तबा का साफ किया हुआ नमक जिसमें मिट्टी के अज्ज़ा बिल्कुल न रहे हों और जो नमक के नाम से मौसूम किया जाये।

रसावल (स्त्री) रस खीर, रसौर। गन्ने के रस की पकाई हुई खीर। **देखें** खीर।

रस खीर (स्त्री) देखें रसावल।

रसौर (स्त्री) देखें रसावल।

रसोई (स्त्री) पकवान पकाई हुई ग़िज़ा। **़करना** खाने को ग़िज़ा तैयार करना। खाना पकाना। **़परोसना, जमाना, लगाना** खाने की जगह पर खाना रखना।

रसोइय्या (पु0) रसोई तैयार करने वाला, बकावल, बावर्ची। **देखें** बावर्ची।

रसोई घर (पु0) देखें बावर्ची ख़ाना।

रकाबदार (पु0) दस्तर ख़्वान लगाने और खाना पेश करने वाला शख़्स खाने के आबो नमक और ज़ाइक़ा की जाँच करने वाला पेशेवर। चूँकि ऐसा माहिरे–फन उमरा के हाँ होता है और मुतवस्त हाल घरानों में बावर्ची ही इस खिद्मत को अंजाम देता है। इसलिए बावर्ची को रकाबदार भी कह देते हैं।

रूखा सालन (पु0) बगैर रोटी वगैरा के अकेला सालन जो खाया जाये। **जैसे** रूखी रोटी। **प्रयोग** रोटी में देर हो तो बच्चे रूखा सालन खा जाते हैं। **प्रयोग** कवाब ऐसे मजे के थे कि सबने रूखे खा लिये। कम घी का सालन। **प्रयोग** घी और मसाला कम होने से सालन रूखा फीका रहा।

रहा (पु0) देखें ऐरा। यह लफ्ज़ फ़ारसी लफ्ज़ रिहा बमानी छूटा हुआ का इस्तिलाही कलिमा हो गया है। जो खानदानी मुसलमानों के घरों में बोला जाता है। लफ्ज़ ऐरा ग़ालिबन रिहा का ग़लत तलफ्फुज़ है।

ज़ानो पोश (पु0) खाना खाते वक्त लिबास की हिफ़ाज़त के लिए ज़ानुओं पर डालने का कपड़ा।

ज़र्दा (पु0) मुज़अफर, केसरी भात। ज़र्द रंग के पकाये हुए चाँवल। यह इस्तिलाह आमतौर से मीठे पकाये हुए चाँवलों के लिए बोली जाती है। जिनको ज़ाफ़रानी रंग से रंगीन बना दिया जाता है।

सादा सालन (पु0) बगैर तरकारी का पकाया हुआ गोश्त।

सालन (पु0) संस्कृत 'स' बमानी साथ। रोटी के साथ या रोटी से लगाकर खाने की चीज। पूरब की बाज़ मुक़ामी ज़बानों में बोरन या बौरन बमानी शोरबे दार चीज़ को कहते हैं। साल्ना हिन्दी में लकड़ी की किसी चीज़ के हिस्सों में बाहम जोड़ मिलाने को कहते हैं। **जैसे** पलंग साल्ना, किवाड़ साल्ना और दकन में अवाम सालन को साल्ना बोलते हैं। **बघारना, भूनना, दम देना** के साथ बोला जाता है। **़कसना** मसाले का पानी खुश्क करने के लिए सालन को देर तक अच्छी तरह भूनना। गोश्त या तरकारी का पानी जलाना।

सितारा (पु0) देखें पटाख़े का अंडा।

सत नजा/सत नाजा (पु0) सात अनाज मिलाकर पकाई हुई खिचड़ी की क़िस्म की ग़िज़ा जो आमतौर से खिचड़े के नाम से पुकारी जाती है।

सुथरियाँ (स्त्री) देखें महसेरी।

सक्कू (पु0) देखें छींका।

सुखारा (पु0) सुख+आरा। कच्ची रसोई। तफ्सील के लिए **देखें** पक्की रसोई और लफ्ज़ चौका।

सगपैता (पु0) साग और पात का मुखफ्फ़फ़। इस्तिलाह में दाल और साग मिलाकर पकाया हुआ सालन कहलाता है।

सिलबट्टा (पु0) देखें पेशा संगतराशी जिल्द अव्वल।

सौंदा सालन (पु0) बगैर रौगन डाले सिर्फ मसाला मिलाकर पकाया हुआ सालन।

सौंदना (क्रिया) कच्चे गोश्त में मसाला मिलाकर देग़ची में भूनना।

सीठा (पु0) बग़ैर नमक मिर्च का, फीका। चाँवल की पीच के मज़े का।

सीख़ (पु0) कवाब भूनने की आहनी सलाख़। **़लगाना** सीख़ पर कवाब का गोश्त चढ़ाना। **सीख़ का कवाब** आहनी सलाख़ पर भूनकर तैयार किया हुआ कवाब।

शामी कवाब (पु0) खताई कवाब। पिसे हुए गोश्त का टिकिया की शक्ल में तलकर तैयार किया हुआ कवाब। शायद मुल्क शाम के तरीक़े पर बनाये जाने की वजह शामी कवाब के नाम से मअ़रूफ हो गया है।

शाह पसंद दाल (स्त्री) मामूल से ज़्यादा पुरतकल्लुफ़ उमरा के खाने के लायक पकाई हुई दाल।

शुर्वा (पु0) देखें शोर्बा। शुर्वा फ़ारसी लफ़्ज़ शोर्वा का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ है। जिस तरह कवाब का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ कवाब है।

शब देग़ (स्त्री) वह सालन जो रात भर दम देकर पकाया जाये। उससे मुराद एक ख़ास क़िस्म का क़ोरमा होता है। जिसको ज़्यादा सलोना और खुश्बूदार बनाने के लिए शल्जम की बटियाँ और उन्हीं की शक्ल **जैसे** क़ीमे के मसालेदार कवाब भी शरीक कर दिये जाते हैं। गोश्त के सालनों में यह सालन बहुत खुश ज़ाइका और ज़्यादा मुरग़्ग़न होता है।

शकराना (पु0) बराबर का घी डाला हुआ भात। बाज़ पेशेवर बिरादरी वालों की शादी ब्याह की दावत का मख़सूस खाना है। बिरादरी में नाम होने के लिए खुश्के में घी और खांड की मिक़दार ज़्यादा से ज्यादा डालने पर फ़ख्र किया जाता है। इस क़िस्म का खाना शिमाली हिन्द में हिन्दुओं की अछूत जातों में शादी विवाह के मौके पर दिया जाता है।

शिकमपुर (पु0) मसाला भर कर तले हुए शामी कवाब। **देखें** शामी कवाब।

शम्शू करना (क्रिया) फ़ारसी लफ़्ज़ संग–शू का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। पछोड़ना, ढोलना। चावल या दाल में मिले हुये बारीक कंकड़ों को पानी में धोकर निकालना। यानी पानी में हिलाकर दानों से कंकरों को जुदा करना।

शोर्बा/शोर्वा (पु0) सालन का अर्क़ या लुआब। सालन का मसालेदार पानी।

शार्बेदार सालन (पु0) वह सालन जिसमें पानी यानी लुआब की मिक़दार मामूल से ज़्यादा हो।

शोला (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ शुल्ला का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ जो मसालेदार पतली पकी हुई खिचड़ी के लिए बोला जाता है। ज़्यादा पुर तकल्लुफ़ बनाने के लिए इसमें गोश्त भी शरीक कर देते हैं। आमतौर से मूँग की दाल और चावल या बाजरा मिलाकर पकाया जाता है।

शीर बिरंज (स्त्री) देखें खीर।

शीर खुर्मा (पु0) दूध में भिगोये हुए छुहारे जो बतौर लतीफ़ ग़िज़ा खाये जाते हैं। इसको ज़्यादा पुरतकल्लुफ़ बनाने के लिए रवे या मैदे की बारीक सिवैयाँ क़ंद और खुश्क मेवा शरीक करके घी का बघार दे दिया जाता है। मुसलमानों में ईद के त्यौहार का पुरतकल्लुफ़ खाना शुमार किया जाता है।

साफ़ी (स्त्री) गरम देग़ची पकड़ने को बावर्ची का कपड़ा। बर्तन साफ करने का कपड़ा।

ताह्री (स्त्री) बघरे चाँवल। **देखें** चिलाव। ताहरी और चिलाव के मफ़हूम में यह फर्क है कि लफ़्ज़ चिलाव मुसलमान घरानों में सिर्फ बघरे हुए और नमकीन मसालेदार चावलों के लिए बोला जाता है और लफ़्ज़ ताहरी के मफ़हूम में इस के साथ आलू या बड़ियों का शामिल होना भी जुरूरी है।

फ़ालूदा (पु0) निशास्ते के बनाये हुए चाँवल या सिवैयाँ जिसमें दूध और क़ंद मिलाकर पुर तकल्लुफ़ बना लिया जाता है। गर्मी के मौसम में बर–वक़्ते–इस्तेमाल बर्फ़ डालकर ठंडा कर लिया जाता है।

फ़ाइक़ खीर (स्त्री) घी में बिरियाँ किये हुए चाँवल डालकर पकाई हुई खीर जो मामूली खीर की निसबत ज़्यादा सोंधी और खुश ज़ाइक़ा होती है। यही उसकी वजहे तसमिया है।

फ़ीरनी/फ़िरनी (स्त्री) दले हुए चाँवल डालकर पकाई हुई खीर। **देखें** खीर।

क़बूली (स्त्री) चने की दाल की भुनी खिचड़ी आमतौर से एक हिस्सा दाल दो हिस्सा चाँवल मिलाकर और घी में बिरियाँ करके पकाई जाती है।

क़लिया (पु0) अरबी लफ़्ज़ क़लिय्या का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। सादा सालन। बगैर तरकारी का शोरबेदार पकाया हुआ गोश्त।

क़लिया पुलाव (पु0) देखें पुलाव।

क़ोर्मा (पु0) तुर्की लफ़्ज़ क़ोरमः का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। ज़्यादा घी का लुआबदार पकाया हुआ गोश्त जो क़लिये की निसबत ज़्यादा पुर–तकल्लुफ होता है।

क़ोर्मा पुलाव (पु0) देखें पुलाव।

काना चूल्हा (पु0) बगैर औले का अकेला चूल्हा या चूल्हे इस्तिलाह में काना चूल्हा कहलाता है। क्योंकि आमतौर से औलेदार चूल्हे बनाने पसंद किये जाते हैं।

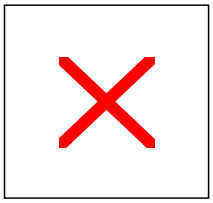

काही (पु0) देखें रस।

कबाब/कवाब (पु0) देखें कवाब।

कबाबन/कवाबन (स्त्री) कबाबी की बीबी या कबाब पकाने वाली औरत।

कबाबी/कवाबी (पु0) कवाब पकाने वाला पेशेवर।

कचाँद (स्त्री) सालन के कच्चे पन की बू। **प्रयोग** अच्छी तरह न भुनने से सालन में कचाँद रह गयी।

कच्ची बिरयानी (स्त्री) वह बिरयानी जिसमें गोश्त पकाकर डालने की वजाये नर्म गोश्त के कच्चे पार्चों को मसाला लगाकर चाँवलों के साथ दम दे दिया जाता है। इस तरीके से पकाई हुई बिरयानी ज़्यादा सोंधी और खुश ज़ाइक़ा होती है। **देखें** बिरयानी।

कच्ची रसोई (स्त्री) देखें पक्की रसोई।

कद्दूकश (पु0) कद्दू या गाजर का लच्छा बनाने का छल्नी की वज़अ़ का धारदार सूराख़ का ज़र्फ़।

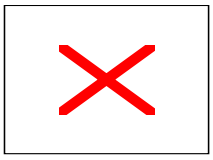

कड़कड़ाना (क्रिया) घी या तेल को तेज़ आँच पर खूब गरम करना। खौलाना। **प्रयोग** पुलाव में ज़ाइद घी कड़कड़ा कर डाला जाता है।

कढ़ी (स्त्री) गाड़े शोरबे का सालन, लेकिन इस्तिलाहे–आम में दही या छाज में बेसन घोलकर पकाये हुए सालन को कहते हैं। जिसको पुर–तकल्लुफ बनाने के लिए बेसन की तली हुई फुल्कियों का इज़ाफा कर दिया जाता है। दकन में चाँवल, मछली और इमली की भी पकाई जाती है।

कसना (क्रिया) गाजर या कद्दू का लच्छा बनाने को कद्दूकश पर उनको घिसने का अ़मल। **देखें** सालन तहत मसदर कसना।

कसियाव (पु0) ताँबे या पीतल के बर्तन की कसाफ़त, जो एक क़िस्म का जंग होता है। जो क़लई उतर जाने और खट्टी चीज़ लगने से सब्ज़ी माइल रंग का पैदा होता है। यह कसाफ़त जो इस्तिलाह में कसियाव कहलाती है। ज़ाइका में कसीली और तासीर में जहरीली होती है और सालन के मज़े को ख़राब कर देती है। **छोड़ना** के साथ बोला जाता है।

किश्तीपोश (पु0) किश्ती पर ढाँकने का कपड़ा।

कुलहार्ना (क्रिया) किसी खुश्क चीज़ मसलन दलिया या सिवैंयों को धीमी आँच पर या बालू में भूनना।

कन्की (स्त्री) कच्चे चाँवलों के बहुत छोटे–छोटे टुकड़े।

कनी (स्त्री) उबले हुए चावल का जिगरी यानी अंदरूनी कच्चापन जो दाने की शक्ल मालूम हो। इस अलामत की कमी बेशी कच्चेपन की मिकदार पर होती है। जो इस्तिलाह में एक, दो, तीन, वगैरा कनी से मौसूम की जाती है।

कनीदार खुश्का (पु0) देखें खुश्का।

कवाब (पु0) फारसी लफ़्ज़ कबाब का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ जैसे शोर्बा का शुर्वा, कोफ़्ता। आग पर मुख़्तलिफ़ तरीकों से भूनकर खाने के लायक तैयार किया हुआ गोश्त। एक तरीका घी में तलकर तैयार करने का भी है। मगर वह महेज़ तकल्लुफ़ है वरना गोश्त को आग के ऊपर रखकर भून्ने और सोख़्ता करने का नाम दरअसल कवाब है और उसीमें गोश्त का हक़ीक़ी ज़ाइक़ा रहता है।

इसीलिए किसी ने कहा है

"खुद को सोख़्तगी दूसरे को लज़्ज़त
यह मज़ा कवाब में देखा"

मछली और बाज़ छोटे परिंदों के गोश्त का भी कवाब बनाया और उसको उसी नाम से मौसूम किया जाता है। **लगाना** कवाब का भूनने के लिए सींख़ या इसी क़िस्म के किसी दूसरे ज़र्फ पर तैयार करके रखना।

कोफ्ता (पु0) देखें कवाब। कुचला हुआ। क़ीमा किया हुआ इस्तिलाह में कवाब कहते हैं।

केसरी भात (पु0) देखें ज़र्दा।

खार (पु0) गोश्त वगैरा गलाने का नमक। नौसादर वगैरा मिलाकर बनाया हुआ मसाला।

खाना (पु0) हैदराबाद व दकन में खुश्के के लिए यह लफ्ज़ मख़सूस है।

खाऊ पीर (पु0) बहुत खाने वाला। पेटू। **देखें** अखाना।

खप्चा (पु0) कफ़्चे का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। कफ्चा फ़ारसी लफ्ज़ कफ़गीर का इसमे–मुसग्गर है जो ढोई की क़िस्म के ज़र्फ के लिए बोला जाता है। **देखें** पेशा ठटेरागिरी।

खटाई (स्त्री) खट्टी चीज़, इस्तिलाह में अम्चूर को कहते हैं। **देखें** अम्चूर।

खिच्ड़ा (पु0) सत नजा। कई अनाज मिलाकर पकाई हुई खिचड़ी। जिसको पुर तकल्लुफ बनाने के लिए गोश्त भी डाल दिया जाता है।

खिचड़ी (स्त्री) बराबर मिक़दार में दाल और चावल मिलाकर पकाई हुई ग़िज़ा **जैसे** मूँग की खिचड़ी वगैरा।

खुर्चन (स्त्री) देग़ या देग़्ची की तह पर जमी हुई बिरयानी, पुलाव, खिचड़ी वगैरा जो खुरचकर निकाली जाये। बर्तन में जमी हुई, खुरचकर निकाली जाने वाली चीज़। **लगाना, जमना** के साथ बोला जाता है।

खरल (स्त्री) पथ्रौटा। ज़ाफरान या मसाला पीसने का पत्थर का नाव की शक्ल का बना हुआ ओख्ली की क़िस्म का छोटा ज़र्फ़। आला क़िस्म की दवाइयाँ बारीक पीसने को बाज़ निहायत उमदा क़िस्म के पत्थर के बनाये जाते हैं। **करना** खरल में मसाला वगैरा हल करना।

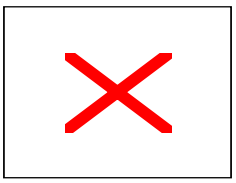

खड़ा कोर्मा (पु0) कत्रा हुआ मसाला डालकर पकाया हुआ कोर्मा। **देखें** कोर्मा।

खड़ी दाल (स्त्री) बगैर दली पकाई हुई दाल यानी वह दालें जो दाना के अंदर छिल्कों समेत पका ली जाये। **जैसे** खड़ी मसूर, कड़ी मूँग की दाल।

खंडवियाँ/खंडैयाँ (स्त्री) बेसन के क़त्ले यानी उंगली या लौज़ात की शक्ल के टुकड़े बनाकर शोरबेदार पकाया हुआ सालन। बेसन में मसाला मिलाकर और पानी में खूब गाढ़ा पकाकर जमा लिया जाता है और फिर शोर्बेदार पकाने के लिए हस्बे–मर्जी उसके टुकड़े काट लिये जाते हैं। जो हिन्दी में खण्ड कहलाते हैं और यही उसकी वजह तस्मिया है।

खीर (स्त्री) शीर बिरंज। दूध में चावल और हसबेज़रूरत क़ंद मिलाकर पकाई हुई ग़िज़ा जिसको पकने के बाद खूब घोटकर एकजान कर दिया जाता है। इसमें चाँवल दूध की मिक़दार का 1/8 और क़ंद 1/4 हिस्सा होता है। ज़्यादा पुर–तकल्लुफ़ बनाने के लिए चाँवल और कंद की मिक़दार में कमी बेशी भी कर दी जाती है।

खीर पकाई जतन से चर्खा दिया जला। (अमीर खुसरू)
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा।। (रहo)

गजर भत्ता/गजरीला (पु0) गाजर+भात। गाजर के लच्छे में क़दरे चावल और कंद या गुड़ मिलाकर पकाई हुई ग़िज़ा।

गजरीला (पु0) गुड़ या क़ंद के शीरे में पकाये हुये गाजर के क़तले। गुड़+अम्बः। गुड़ या कंद के शीरे में पकाये हुये कच्चे आम के क़त्ले बाज़ लोग पक्के आम का भी पकाते हैं और शीरे में क़दरे मैदा या रवा घी में भूनकर मिला देते हैं। बअल्फाज़े दीगर रवा मैदे के हरीरे में पकाते हैं।

गुलथी (स्त्री) देखें खुश्का।

गुम्चा (पु0) दस्तपाक। छोटा कपड़ा जो खाना खाते वक्त हाथ पोंछने को दस्तर ख़्वान पर तह करके रख दिया जाये, **जैसे** फ़िरंगी तरीके में नेपकीन होता है।

गोलियों का कवाब गोल शक्ल में बनाकर देग़ची में बतौर सालन पकाये हुए कवाब। **देखें** देग़ची का कवाब।

घाई/गही (स्त्री) गेह का गलत तलफ़्फ़ुज़। चूल्हे के सामने रोटी सेंकने की जगह। **देखें** ऐरा।

कहावत –गही की मेरी, तवे की तेरी।

घुंगिनी/घुंग्निया (स्त्री) ग़रीब मज़दूरों की गिज़ा। चने, गेहूँ, बाजरे या ज्वार के दाने उबालकर खाने के लायक बनाई हुई गिज़ा जो भूनने के मुक़ाबले में आसानी से तैयार हो जाती है। बाज़ तक्रीबों में बतौर तबर्रुक बनाई जाती है। **बनाना, उबालना** के साथ बोला जाता है।

लाही (स्त्री) देखें रस।

लब धड़ा (पु0) गाढ़ा लुआब जिसमें लताफ़त न हो। **देखें** तलछट।

लप्सी (स्त्री) आटे की पकाई हुई गुलत्थी। हस्बेज़ुरूरत मीठी या सलोनी पकाई जाती है। **जैसे** चावलों की गुलत्थी ग़रीब मज़दूरों की गिज़ा में शुमार की जाती है।

अहीर का क्या जजमान।
लप्सी का क्या पकवान।

लत करना (क्रिया) देखें फेंटना।

लचलचाहट (स्त्री) सालन के लुआब की तरी।

लुआब (पु0) घी का मसालेदार गाढ़ा शोर्बा जिसमें पानी की मिक़दार बहुत कम और घी की लताफ़त ज़्यादा हो।

लुआबदार सालन (पु0) गाढ़े शोर्बे का सालन जिसके शोर्बे में पानी के बजाये घी की लताफ़त हो।

लौंग चुड़ा (पु0) एक क़िस्म का सीख़ का कवाब जो नली की शक्ल और कम गुदाज़ होता है।

माही तवा (पु0) मछली या परिंद के कवाब तलने का एक ख़ास क़िस्म का तवा।

माही क़लिया (पु0) मछली का सालन। बाज़ लोग मामूली क़लिये को माही कलिया कहते हैं।

मुतंजन (पु0) पुर तकल्लुफ पकाये हुए मीठे चावल जिसमें खुश्क मेवे मसलन बादाम और पिसते के अलावा गोश्त भी बिरियाँ करके डाला जाता है। जो उसको ज़्यादा सोंधा बना देता है। बाज़ लोग बगैर गोश्त का ही पसंद करते हैं।

मुज़अ़फर (पु0) केसरी भात, ज़र्दा। ज़ाफ़रान का रंग और खुश्बू देकर पकाये हुए मीठे चावल। बाज़ बावर्ची सिवैयों को भी मज़कूरा तरीक़ पर पकाते हैं और सिवैयों का मुज़अ़फर कहते हैं। लेकिन मुज़अ़फ़र से मुराद दरअस्ल ज़ाफ़रानी रंग के पुर तकल्लुफ़ पकाये हुए मीठे चाँवल है।

मिश्क़ाब (स्त्री) देखें बिश्क़ाब।

मुलम्मःघर/मुलम्माख़ाना (पु0) भंडार। मूदीख़ाना। ग़ल्ला और सामाने खुर्द नोश रखने का कोठा या कोठरी। लफ़्ज़ मुलम्मा ख़ास किला–ए–मुअ़ल्ला देहली की ज़बान में मज़कूर उस–सदर मानों में बोला जाता था। जो बाज़ पुराने मुसलमान घरानों में अब भी कहीं–कहीं बड़ी बूढ़ी बेग़मात की ज़बान पर यह लफ़्ज़ चढ़ा हुआ है। मगर आमतौर से बिल्कुल मतरूक बल्कि मअ़दूम है। मुअ़ल्लिफ़ फर्हंग आसिफ़िया ने इस लफ़्ज़ को लिखा है। लेकिन इसकी असलियत नहीं बयान की।

मलीदा (पु0) सख़्त पकाई हुई रौग़नी रोटी को बारीक कुचलकर और हसबे–ज़ाइका क़ंद मिलाकर तैयार की हुई पुरतकल्लुफ गिज़ा जिन अनाजों की रोटी पकती है। उनका मलीदा भी बनाया जाता है। **जैसे** बाजरे का मलीदा, ज्वार का मलीदा, मकई का मलीदा बगैरा। **करना, बनाना** के साथ बोला जाता है। फ़क़ीरों के बाज़ फ़िरके सवाल करते वक्त ''दूध मलीदा, शक्कर, शीरा अल्लाह ही देगा'' की सदा लगाते फिरते हैं।

मुन्ना/मुन्ने (पु0) चूल्हे के पाखों और वसत पर बनी हुई छोटी गुमटी या गुम्टियाँ जो देग्ची या तवे को चूल्हे की सतह से जरा ऊपर उठा हुआ रहने को बनाई जाती है। इनके बनाने का मकसद चूल्हे के अंदर के धुँयें का रास्ता करना है। **देखें** तस्वीर चूल्हा।

मनसल्वा (पु0) आम के रस, मलाई और कंद को तरकीब देकर और खुश्के के अन्दर तह बतह जमा कर दम पुख़्त किये हुए चाँवल तकल्लुफ़ में मनसल्वे के नाम से मौसूम किये जाते हैं।

मूदी ख़ाना (पु0) देखें भंडार और मुलम्मःघर।

मूँग पुलाव (पु0) देखें पुलाव।

महेसरी (स्त्री) सुथ्रियाँ। रोटी के पकाये हुए मीठे टुकड़े। ग़रीब आदमी धर की पक्की हुई रोटी के बचे हुए टुकड़ों को घी में भूनकर गुड़ के शीरे में पका लेते हैं। दकन में घोड़े कहते हैं। जो शायद घयोर का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है और शादी ब्याह की तक़ारीब में नान का ग़लत तलफ्फुज़ है और शादी ब्याह की तक़रीब में नान पाव के टुकड़े क़ंद घी और मलाई डालकर पुर तकल्लुफ़ पकाये जाते हैं।

नाश्ता (पु0) सुबह सबेरे नहार मुँह का खाना।

नाश्तादान (पु0) नाश्ता रखने का ज़र्फ़। उर्फ़–आम में हर ऐसे बर्तन को कहते हैं। जिसमें खाना रख कर सफ़र में या घर के बाहर कहीं ले जाया जाये।

नर्गिसी कवाब (पु0) अंडा भर कर पकाये हुए गोलियों के कवाब। इस तरह के पिसे हुए क़ीमे में उबला हुआ अंडा लपेटकर पकाया जाता है और बाद पकाने के इस को बीच में से काटकर रखा जाता है जिसकी वजह वह आँख की शक्ल बन जाता है। इसलिए इस क़िस्म के कवाबों का नरगिसी कवाब नाम रख दिया गया।

नुक़्ताब (पु0) नखुद आब। चने उबाला हुआ पानी। उर्दू में यह लफ़्ज़ गोश्त की उबाली यख़नी के लिए मख़सूस है और न जाने क्योंकर नुक़्ताब कहलाने लगा है। मरीज़ को मुस्हिल (जुल्लाब) के बाद बतौर ग़िज़ा पिलाया जाता है। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

निकहारा (पु0) वह ग़िज़ा जो कड़ाही में तलकर पकाई जाये लफ़्ज़ निकहार पूरब की मुक़ामी ज़बान में कड़ाही को कहते हैं। **देखें** पक्की रसोई।

निखुरा (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ न खोर्दन का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। ऐसा खाना जो न खाया जाये। कम खुराक शख्स।

नौरतन (पु0) देखें दोरंगी हंडिया।

नोन (पु0) *नमक, लोन, खार।*

आँखों त्रिफला दातन नोन।
पेटे रखे चौथो कोन।।
कोस भरे पर जंगल जाये।
तिसपर वैद्य काये खाये।।

नहारी (स्त्री) सुबह का खाने का वक़्त। वह खाना जो सुबह बतौर नाश्ता खाया जाये। उर्फ़ आम में ऐसे सालन को कहते हैं। जो रात को दम दिया और सुबह सवेरे खाया जाये। इस के मफ़हूम में सिरी पाये भी शामिल हैं जो ख़ास तरीके से जाड़े के मौसम में पकाये जाते हैं।

हिराँद (स्त्री) सालन के मसाले की जो अच्छी तरह न भुना हो। कच्चेपने की बू। हल्दी की बू जब वह मसाले में मिक़दार से ज़्यादा हो गई हो। **आना** के साथ बोलते हैं।

हँडिया (स्त्री) खाना पकाने वालों की इस्तिलाह में हंडिया पकाना बोला जाता है। जिससे मुराद सालन पकाना होता है। यानी मुहावरे में ज़र्फ़ से मज़रूफ़ मुराद लिया जाता है। जैसे हंडिया दम देना, तैयार होना, पकना, बघारना, जलना वगैरा। **उतारना** हंडिया पकने के बाद चूल्हे पर से उतारना। **जलना** मुराद सालन का आग की तेज़ी से जल जाना। **दाग़ खाना** सालन में दाग लग जाना। **का उबाल** हंडिया में पकने वाली शैय् का उबल जाना।

हंड कुलिया (स्त्री) दस्तर ख़्वान पर खाना चुनने या पेश करने वाली औरत (क़िला–ए–मुअ़ल्ला देहली की ज़बान) बच्चियाँ जो खाना पकाने का खेल खेलती बअल्फ़ाज़ दीगर खाना पकाने की मश्क़ करती है। उसको भी इस्तिलाह में हंड कुलिया करना या पकाना कहा जाता है।

यख़नी (स्त्री) गोश्त उबाला हुआ पानी। गोश्त का अर्क़ जो पानी में उबाल कर निकाला जाये। **उबालन, बनाना** के साथ बोला जाता हैं।

यख़नी पुलाव (पु0) देखें पुलाव।

चौथी फसल

तकल्लुफाते–खुराक

पेशा–ए–तलन हारी (पकवान पोनी)

आलूपारा/आलूपारे (पु0) देखें आलू छवा।

आलू छवा/आलू छवे (पु0) आलू पारा। आलू के तले हुए क़त्ले। सादे और बेसन चढ़ाकर दोनों तरह तले और तवानाई को ताज़ा करने के लिए सह पहर के वक़्त बतौर हल्की ग़िज़ा खा लिए जाते हैं। अदरक के वरक़ और बाज़ फ़लियों के बीच भी इसी ज़रूरत के लिए तले जाते हैं।

बडा/बडे (पु0) माश या मूँग की पीठी की मसालेदार तली हुई टिकिया या टिकियाँ। इन बड़ों को ज़्यादा पुरतकल्लुफ़ बनाने के लिए उमदा और ताजा लत किये हुए दही में परवर्द कर लिया यानी दही चूस बना लिया जाता और दही बड़े कहा जाता है।

बेव्ड़ी/बैंड़वी (स्त्री) संस्कृत लफ़्ज़ वेढमिका का उर्दू तलफ़्फुज। माश की दाल की मसालेदार पीठी भरकर तली हुई पूरी। हिन्दू बेंड़वी तलफ़्फुज़ करते हैं।

भज्बा (स्त्री) देखें पतौर।

भोज पारा/भोज पारे (पु0) बाज़ क़िस्म की तरकारियों के बेसन चढ़ा कर तले हुए क़त्ले। **जैसे** टिमाटर, बैंगन, गाजर वगैरा।

भोज पतौर (पु0) देखें पतौर।

पप्डी/पप्डियाँ (स्त्री) पडाक्डी, खंक्डी। बेसन की पतली–पतली चुटपुटी और करारी तली हुई टिकिया या टिकियाँ। दीवाली के त्यौहार पर आमतौर से बनाई जाती है।

पतौर (पु0) भजिया, भोज पतौर। पालक के साग को बेसन चढ़ाकर तले हुए पत्ते। पालक के अलावा अर्वी के पत्ते भी इस तरीके से तले जाते हैं। लेकिन उनका सालन पकाया जाता है। तले हुए खाने के लिए आमतौर से पालक के पत्ते ही तले जाते हैं। क्योंकि रूखे खाने में वही सोंधे और खुशज़ाइक़ा होते हैं।

परतदार समोसा (पु0) देखें गिलाफी समोसा।

पराक्ड़ी (स्त्री) देखें पप्डी।

पकवान (स्त्री) तलन। तलकर तैयार की हुई खाने की चीजें। तफ़सील के लिए **देखें** पेशा–ए–बावर्चीगिरी। पृ0

पक्वान पोनी (स्त्री) तलनहारी। ग़िज़ा की ज़रूरत के लिए बाज़ खूराकी चीज़ों को तलने का अ़मल।

पक्वान पोनिया (पु0) तलनहारा। ग़िजा की चीजें तलनेवाला पेशेवर शख़्स।

पकौडा (पु0) पकौड़ी का इसमेमुकब्बर। **देखें** पकौड़ी।

पकौड़ी (स्त्री) देखें पुल्की।

पूड़ा/पुड़ा (पु0) पूरी का पंजाबी तलफ़्फुज़ (इस्मे मुज़क्कर) मुराद लत किये हुये मैदे की मीठी या फेंटे हुये नमकीन बेसन की छंकारी हुई टिकिया लफ़्ज़ छंकार छौंकने से मुशतक़ है। छंकारने का तरीक़ा यह है कि मैदा या बेसन पतला करके कड़कड़ाते घी या तेल में डाला जाता है। जिससे वह छनछना जाता है। यानी सूराख़दार बन जाता है। इस तरीके से जो तलन तली जाती है। उसको पंजाब में पूड़ा और दूसरे मुक़ामात पर चिल्ला या चैला कहते हैं।

पोना (क्रिया) देखें तल्ना।

पोनी (स्त्री) तलने का अ़मल। तलन तलने का सूराख़दार कफ़गीर इसको झरना और पोया भी कहते हैं।

पोया (पु0) देखें पोनी और झरना।

पीठी (स्त्री) बड़े बनाने या बेव्ड़ी, कचौरी में भरने को धोई माश की गीली पिसी हुई दाल।

फुल्की (स्त्री) पकौड़ी। फलौरी,। लत किये हुए बेसन की लुगदी की शक्ल की तलन यानी तली हुई चीज़ जो तलने में अ़मूमन फूलकर गोल हो जाती है। उर्दू में यही उसकी वजह तसमिया है। हिन्दी में पकौड़ी या फलौरी कहते हैं और दकन में भजिया। लफ़्ज़ भजिये की तश्रीह पेशा–ए–बावर्चीगिरी में मुफस्सल लिखी गयी है। फुल्कियों को बड़ों की तरह लत किये हुये दही या सोंठ के पानी में भी डाल लेते हैं।

फलौरी (स्त्री) देखें फुल्की।

फूलबडा/फोल बताशा (पु0) मैदे की रुपये के बराबर छोटी पतली और खूब फूली हुई टिकिया इसमें दही का राइता या सोंठ की चट्नी भरकर खाते हैं।

तलन (स्त्री) पकवान। तली हुई मुख़तलिफ क़िस्म की ग़िज़ा।

तल्ना (क्रिया) ग़िज़ा की ज़ुरूरत के लिए बाज़ चीजों को रौग़न में बिरियाँ करना।

तलनहार (पु0) तलैया, पकवान, पोनिया, सहपहेर के नाश्ते के लिए हल्की और पुरतकल्लुफ़ ग़िज़ा तलकर तैयार करने वाला पेशेवर बकावल।

तलनहारी (स्त्री) खूराकी चीजें तलने का अ़मल।

तलैया (पु0) देखें तलनहार।

चिल्ला/चैला (पु0) देखें पूडा।

छनछनाना (क्रिया) पानी या पानी की तरह की पतली चीज़ के अज्ज़ा का तेज़ गर्म रौग़न में पड़कर फटना। मुन्तशिर होना।

छन्कारना (क्रिया) पानी की तरह पतली चीज़ के अज़्ज़ा को स्पंज की तरह फटवाँ तलने के लिए तेज़ गर्म रौगन में डालना। इस अ़मल से उस चीज़ के अज्ज़ा मुन्तशिर होकर सूराख़ पड़ जाते हैं। जिनमें रौग़न भर जाता और अच्छी तरह पका देता है।

खस्ता (स्त्री) देखें कचौरी। रौग़नी पूरी का वसफ़ी नाम।

दालबीजी (स्त्री) पानी में भिगोकर नर्म कर लेने के बाद घी या तेल में तलकर तैयार की हुई चटपटी दाल आमतौर से मूँग, चना और मसूर की दाल तली जाती है इसको पुरतकल्लुफ़ बनाने के लिए बेसन की तली बारीक सिवैयाँ भी मिला दी जाती है। इस मज़मूए को दाल बेजी के नाम से मौसूम करते हैं। आगरा की बहुत मशहूर है।

दालमोट (स्त्री) भाड़ की भुनी चने वगैरा की दाल जो नमक मिर्च मिलाकर खाने के लायक चटपटी बना ली गयी हो। मोट एक क़िस्म का दालों वाला अनाज होता है। लेकिन उर्फ़े आम में चने की मज़कूर–उस–सदर तरीके पर तैयार की हुई दाल के लिए यह लफ़्ज़ मख़सूस हो गया है।

दही बडा (पु0) देखें बड़ा।

समोसा (पु0) गूँजा। मैदे या रवे की पतली पूरी को तिकोनी शक्ल में मोड़कर उसके अन्दर क़ीमा या कोई चुटपुटा मसाला भर और तलकर तैयार की हुई ग़िज़ा मुरब्बअ़ शक्ल की बनी हुई लुक़्मी कहलाती है। जो दकन का मुक़ामी और मख़सूस लफ़्ज़ है। **लब** समोसे या लुक़्मी के किनारे जो मसाला भरने के बाद बंद कर दिये जाते हैं।

सिवैयाँ (स्त्री) बेसन का बनाया हुआ बारीक लच्छा जो एक क़िस्म की दस्ती ''कल'' से जिसको घोडी कहते हैं, बनाया जाता है और इस्तिलाह में सिवैयाँ कहलाता है। इसको घी में तलकर तली हुई दाल के साथ मिलाकर नमक मिर्च और गरम मसाला डालकर चुटपुटा बना लेते हैं। बेसन की तरह रवे और मैदे की भी सिवैयाँ बनाई जाती हैं, जो भूनकर मीठी पकाई जाती है। **सेल** सिवैयाँ का लच्छा जो घोड़ी की दाब या हाथ की बटाई से पतला और लम्बा होता जाये। **चलना, निकलना** के साथ बोला जाता है।

सुहाल (पु0) मैदे या रवे का नमकीन या हल्की मिठास की चाश्नी का रोटी की तरह पतला किसी क़दर खसता और करारा तला हुआ रोट की शक्ल का पकवान।

सेव (पु0) मामूल से मोटी बनी हुई सिवैयाँ।

गिलाफी समोसा (पु0) परतदार समोसा, वरक़ी समोसा। ऐसे समोसे जिनका खोल रौग़न की लाग से तह ब तह बारीक परतदार बेलकर बनाया जाता है और जो तलने में खिलकर कवारे हो जाते हैं। तफ़सील के लिए। **देखें** समोसा। वर्क़ी समोसों को मीठा करने के लिए क़ंद के क़िवाम में परवर्द भी कर लिया जाता है। ऐसी सूरत में उसके अन्दर मेवा या उसी क़िस्म की कोई और चीज़ भर देते हैं।

क़लमी बडा/क़ल्मी बडे (पु0) बड़ों की क़िस्म की लम्बोतरी शक्ल का करारा तला हुआ पकवान आमतौर से चने की दाल की पीठी के बनाये और किसी क़िस्म की चुटपुटी चटनी से खाये जाते हैं। बड़ा और क़लमी बड़ा एक ही किस्म का पकवान है फ़र्क सिर्फ इस क़दर है कि बड़ा आमतौर से माश की और क़ल्मी बड़ा चने की पीठी का ज़ाइकेदार समझा और बनाया जाता। बड़ा चने की और क़लमी बड़ा माश की पीठी का नहीं

बनाया जाता। पहला टिकिया की शक्ल का और दूसरा क़लम की वज़अ़ बनाकर तला जाता है और यही इसकी वजह तसमिया है।

कचौरी (स्त्री) खसता। बेव्ड़ी की क़िस्म का पकवान। **देखें** बेव्ड़ी। बेव्ड़ी और कचौरी में यह फ़र्क़ है कि बेव्ड़ी आटे की और रौग़न की लाग दिये बग़ैर पकाई जाती है। बर खिलाफ़ इसके कचौरी मैदे की और रौग़न की लाग देकर तैयार की जाती है। जिसकी वजह तलने में वह खूब खसता हो जाती है। इसी वसफ़ की वजह बाज़ तलन्हार उसको खसता के नाम से मअ़रूफ करते हैं। **पहेली** "उर्पुस रबीअ़ और बीच में ख़रीफ़ नोन मिर्च डालकर के खा गया हरीफ़।" रबीअ़ से मुराद गेहूँ का आटा या मैदा और ख़रीफ़ से मक़सद माश की पीठी है। उर्पुस बमानी आसपास हरीफ़ का इशारा इंसान की तरफ है। शिमाली हिन्द के ज़ात वाले हिन्दुओं में शादी ब्याह के मौक़े पर कचौरी पुरतकल्लुफ़ खानों का जुज़वे आज़म समझी और निहायत आला क़िस्म की बनवाई जाती है।

खंक्डी (स्त्री) देखें पप्डी।

धोड़ी (स्त्री) बेसन वग़ैरा की सिवैयाँ बनाने की ढ़ेकी की क़िस्म की दस्ती 'कल' जिसमें ओख्ली की वज़अ़ का एक सूराख मअ्

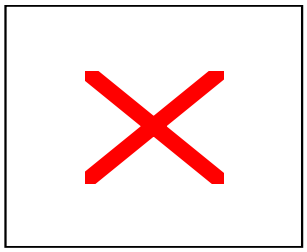

मूसली होता है। मूसली दाब की कुव्वत से सिवैयों की सेल (लच्छा) निकालती है। ज़दीद वज़अ़ में शिकंजेदार घोड़ी बनाई जाने लगी है। मगर इससे बड़ी मिक़दार में सिवैयाँ नहीं बनाई जा सकती। सिवैयों की ज़्यादा मिक़दार जो मुसलमानों में ईद के त्यौहार पर बतौर ख़ास इस्तेमाल की जाती है। लकड़ी की बनी हुई घोड़ियों में निकाली जाती है।

लब (पु0) देखें समोसा।

लुज्जी (स्त्री) मैदे की बहुत पतली पूरी, जो हल्वे के साथ खाने को बनाई जाती है। पंजाब में लुज्जी और दो आबा के बड़े शहरों में माँढ़ा कहते हैं।

लुक्मी (स्त्री) देखें समोसा।

मठ्री (स्त्री) बग़ैर पीठी भरी बच्चों के खाने के लायक, खसता छोटी, पतली और फूली हुई कचौरी की क़िस्म की तलन रुपये के बराबर या उससे कुछ ज़्यादा बड़ी होती है।

मंगोछी/मंगोछियाँ (स्त्री) मूँग की दाल की पीठी की पकौड़िया या फुलकियाँ। बाज़ मुक़ामी बोलियों में मंगोछी को मूँगरे कहते हैं।

मूँगरे (पु0) देखें मंगोछी।

नमकपारे (पु0) मैदे या रवे की रौग़नी और नमकीन पतली पूरी बेलकर और चौपाओं की शक्ल में तराशकर तला हुआ पकवान सहपहेर के नाश्ते में लतीफ गिज़ा के तौर पर खाये जाते है।

वर्क़ी समोसा (पु0) देखें गिलाफ़ी समोसा।

2 पेशा–ए–खटूमर और अचार साज़ी

आबशोरा (पु0) देखें पन्ना।

आबी आचार (पु0) किसी क़िस्म के खट्टे रस **जैसे** सिरका, लेमूँ का अर्क़ या राई के पानी में रसाकर तैयार किया हुआ अचार।

अचार (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ आचार का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। संस्कृत अर्नाल हिन्दी भाषा चिर। बाज़ ख़ास कच्चे फल, तरकारी या जड़ी को किसी क़िस्म के खट्टे रस में रसिया कर बनाया हुआ खटूमर जो गिज़ा के साथ तब्दीले ज़ाइका या तकल्लुफ में खाया जाता है। ग़रीब गुर्बा बतौर सालन भी इस्तेमाल करते हैं। **उतरना** अचार खराब हो जाना, बद ज़ाइक़ा हो जाना, बिगड़ जाना। **उठना** अचार का तैयारी पर आना। पानी के आचार में तुर्शी पैदा होना।

अचार साज़ (पु0) खटूमरा। अचार बनाने वाला पेशेवर कारीगर।

अचारी (स्त्री) अचार डालने या रखने का बर्तन।

अर्नाल (पु0) देखें अचार।

अम्हार (पु0) देखें लौंची।

बच्चा (पु0) फफूँदी की पुट जो बहुत दिनों के पराय तेल को अचार या मुरब्बे में पड़ जाती है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

परवर्द करना (क्रिया) देखें रचाना, रमाना।

पन्ना (पु0) संस्कृत लफ़्ज़ पनासा का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। आब शोरा, खटूमर, खट रस, खट्टा पानी जो पक्की इमली या अमचूर और हड़ को भिगोकर निथारा और हसबेज़रूरत गरम मसाला मिलाकर खुश ज़ाइक़ा बना लिया जाता है। बादी दूर करने और हाज़मा दुरुस्त रखने को अहले हुनूद में आमतौर से सह पहर के नाश्ते या खाने के बाद इस्तेमाल किया जाता है। इसको हिन्दुस्तान का सोडा वाटर कहा जाये जो बेजा नहीं। चूँकि पन्ने या खटूमर के मसालों में ज़ीरे और सौंठ का जुज़ ज़रूरी और मिक़दार में भी दूसरे मसालों की निस्बत ज़्यादा होता है। इसलिए खटूमरे उसको जलज़ीरा और जल सौंठ के नाम से पुकारते यानी बेचने के लिए आवाज़ लगाते हैं।

फाड़ी/फाड़ियाँ (स्त्री) उर्दू लफ़्ज़ फाँक का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। **देखें** फाँक।

फाँक/फाँकें (स्त्री) फाड़ी, क़ाश। किसी फल या तरकारी का लम्बोतरी क़लम की वज़अ़ का तराशा यानी काटा हुआ टुकड़ा या टुकड़े, जो अचार, मुरब्बा या किसी दूसरी ज़रूरत के लिए कर लिए जायें। बाज़ फल और तरकारियों में क़ुदरती तौर पर होती हैं। जैसे नारंगी, खीरा वग़ैरा। **बनाना, करना** के साथ बोला जाता है।

कहावत मिलन मिलें हीरे की सी,
दिल में फाँके खीरे की सी।

फपूँद/फपूँदी (स्त्री) काई की शक्ल का गाढ़ा कफ़, झाग जो अचार या मुरब्बे के अज़्ज़ा के सड़ने से पैदा हो जाये। **लगना, आना, चढ़ना** के साथ बोला जाता है।

फोई (स्त्री) हल्का और मामूली उफान। झाग जो आचार या मुरब्बे के खराब होने की अलामत होता है। **आना** के साथ बोला जाता है।

जाला (पु0) मैल का लच्छा जो ज़्यादा दिन रखे हुए अर्क़ या शर्बत में पैदा हो जाये। यह उसके पुरानेपन की अलामत है।

जलज़ीरा (पु0) देखें पन्ना।

जलसौंठ (पु0) देखें पन्ना।

जोआखार (पु0) एक क़िस्म का हाज़िम चूरन जिसमें जौ के नमक का जुज़वे खास होता है। **देखें** चूरन।

चाट (स्त्री) चटपटी और लज़्ज़तदार मुख़्तसर ग़िज़ा जो नाश्ते के तौर पर या खाने के साथ तब्दीले–ज़ाइक़ा के लिए तकल्लुफ में खाई जाये, हिन्दी में चाट कहलाती है और खटूमरा यानी चाट बनाने वाला पेशेवर। *''चाट है बारह मसाले की''* आवाज़ लगाकर गाहकों को मुतवज्जा करता है।

चाटवाला (पु0) सहपहेर के नाश्ते की चुटपुटी चीजें बनाने वाला पेशेवर। **देखें** कटूमरा और लफ़्ज़ चाट।

चाश्नी (स्त्री) किसी चीज़ का बहुत थोड़ा जुज़ जो बतौर बाँद्गी या नमूना देखा जाये। तार बन्द शीरा।

चटपटा/चुटपुटा (पु0) तेज़ मसालेदार गिज़ा यानी वह चीज़ जिसमें मिर्च मसाले और तुर्शी का जुज़ मामूल से ज़्यादा हो और ज़बान चट्ख़ारे ले।

चट्नी (स्त्री) तब्दीले ज़ाइका के लिए ज़रा–ज़रा सी चाटने या खिचड़ी, खुश्के के साथ लगाकर खाने की चटपटी चीज़। सिर्फ नमक मिर्च या मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मसालों की बनाई जाती है।

चटोरा (पु0) चुटपुटी और मज़ेदार ग़िज़ायें खाने का शौक़ीन जो बिला लिहाज़ नफ़ा नुक़सान उनका आदी हो। इसीलिए लफ़्ज़ चटोरा ऐसे ग़ैर मुहतात और मौक़ा महल से बेपरवाह शख़्स के लिए बोला जाता है जिसके शौक़ में हल्कापन पाया जाये।

चूरन (स्त्री) तेज़ और हाज़िम मसालों का खुश्क पिसा हुआ मरक्कब। जिसका अहम जुज़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नमक और काली मिर्च वग़ैरा होती है। खाने के बाद बतौर हाज़िमे दवा खाया जाता है।

दो रसा अचार (पु0) मिठास की चाश्नी देकर तैयार किया हुआ अचार, जिसको मीठा अचार भी कहते हैं। बाज़ ख़ास क़िस्म की तरकारियों और फलों का बनाया जाता है।

रचाना (क्रिया) परवर्द करना, रमाना। अचार के ठहराव को यानी बहुत दिनों तक असली और ताज़ा हालत में रखने के लिए तेल की आमेज़िश करना इस तरह की, आचार उसमें डूबा रहे। ताकि हवा के आबी अज्ज़ा उस पर असर न करें। आमतौर से आम का आचार इस तरह से महफ़ूज़ किया जाता है।

रसाना (क्रिया) किसी क़िस्म के खट्टे रस या मसालों के पानी में तो तरकीब पाकर तुर्श हो जाये। कच्चे फल या तरकारी के कत्लों को अचार की ज़ुरूरत के लिए अच्छी तरह खटियाना। इस क़िस्म का अचार पानी का अचार कहलाता है। शलजम, गाजर अ़मूमन और बाज़दीगर कच्चे फल तरकारियाँ खुसूसन रसाये जाते हैं।

रमाना (क्रिया) देखें रचाना।

रंजक चट्नी (स्त्री) देखें नौ रतन।

सिर्का (पु0) अचार रसाने को एक क़िस्म का तैयार किया हुआ खट्टा रस, जो आमतौर से गन्ने के रस से बनाया जाता है। उसके अलावा बाज़ क़िस्म के मेवे मस्लन अंगूर, जामुन और दो एक तरह के अनाजों से भी तैयार करते हैं। बाज़ मुक़ामात पर खट्रस कहते हैं। **उतरना** बिगड़ जाना। बद ज़ाइक़ा हो जाना। **उठना** तैयार होना। **डालना** गन्ने, जामुन या अंगूर वगैरा के रस के खटियाने यानी सिरका बनने के लिए ख़ाम करना।

शक्रन (स्त्री) दो रसी चट्नी। **देखें** नौ रतन।

अ़र्क़ नाना/अ़र्क़ नअ्नाअ़ (पु0) अरबी लफ़्ज़ अ़र्क़ नअ्नाअ़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ जिससे आमतौर पर मुरव्वक़ यानी कसाफ़त फाड़कर साफ किया हुआ सिरका मुराद ली जाती है। लफ़्ज़ नअ्नाअ़ (पुदीने का अ़र्क़) के मानों का उसमें कोई मफ़हूम नहीं होता। मुमकिन है कि खुश्बू के लिए पुदीने का अ़र्क़ शरीक किये हुये का नाम अर्क़ नान रख लिया गया हो लेकिन लफ़्ज़ अर्क़ नाने से वही मफ़हूम लिया जाता है। जो ऊपर बयान किया गया है।

क़ाश (पु0) देखें फाँक।

क़त्ला (पु0) देखें फाँक।

कांजी (स्त्री) तुरत का तैयार किया हुआ खटूमरा। यानी सिर्के या लेमूँ के अ़र्क़ में बर वक़्त रसाया हुआ खटूमरा या अचार जो प्याज और हरी मिर्च वगैरा का बना लिया जाता है। बाज़ लोग पन्ने को काँजी कहते हैं। जिसमें किशमिश, छुआरा और सौंठ शामिल होती है। **देखें** पन्ना।

कचालू (पु0) संस्कृत काचू। नीमपुख़्ता आलू या उसी क़िस्म की दूसरी उबली हुई चीजों या बाज़ फल और तरकारियों की गरम मसाले या लेमूँ या खट्टे का अर्क़ मिलाकर बनाई हुई खुशज़ाइक़ा और ताज़गी बख़्श एक क़िस्म की चाट जो अ़मूमन ख़ास मौसमी फलों और तरकारियों की ताज़ा–बताज़ा बनाई और कचालू के नाम से मौसूम की जाती है। कचालू अर्वी की जड़ को भी कहते हैं और वह भी उबालकर कचालू में शरीक की जाती है।

कचोका (पु0) गोदा। किसी नोंकदार चीज़ का निशान जो चुभोकर लगाया जाये। अचार या मुरब्बे के फल वगैरा पर सुए जैसी नोंकदार चीज़ का गोदा हुआ निशान। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है।

कचोक्ना/कचोक्नी (पु0+स्त्री) कोच्ना, गोदनी। अचार या मुरब्बा डालने के फल या तरकारियों को गोदने का काँटा। **(क्रिया)** किसी चीज़ को नुकीली चीज़ से गोदना। कचोका लगाना, कचोका देना।

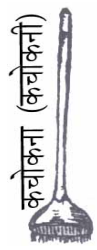

कचूमर (पु0) मल्गोबा। अचार बनाने के लायक़ चीजों का कुचल मसल कर ताज़ा बताज़ा और चुटपुटा तैयार किया हुआ अचार। जो उसी वक़्त खाने के लायक हो जाये।

कोच्ना/कोच्नी (पु0+स्त्री) देखें कचोक्ना।

खट्रस (पु0) कई मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खट्टी चीजें मिलाकर बनाई हुई चट्नी या आबशोरा **देखें**

आबशोरा। बाज़ मुक़ामी बोलियों में सिर्का को कहते हैं।

खटूमर/खटूम्रा (पु0) छः मज़ों की चट्नी की तरह तैयार की हुई खट्टी चीज़। खट्टी और चटपटी क़िस्म की खाने की चीज़ें तैयार करने वाला पेशेवर। बंगाल में छःतरह के अनाज मिलाकर और ख़ास तरीक़े से खट्टा करके पकाई हुई एक क़िस्म की गिज़ा।

खुरना (क्रिया) अचार या चटनी का खराब होना। ज़ाइका बिगड़ जाना।

गोदा (पु0) देखें कचोका। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

गोद्ना/गोद्नी (पु0, स्त्री) देखें कचोक्ना, कचोक्नी और कोच्ना कोच्नी।

घुंगनियाँ (स्त्री) चने, मटर वग़ैरा के उबले हुए दाने जो नमक मिर्च और खटाई मिलाकर खाने के क़ाबिल बना लिया जाये।

लौंजी (स्त्री) अम्हार। आम की बहुत कच्ची कैरी के गूदे का कच्चा अचार, जो सिर्फ हल्दी और नमक मिर्च मिलाकर फौरन तैयार कर ली जाये। यह अचार देरपा नहीं होता और न अचारों में शुमार होता है। महज़ वक़्ती ज़ुरूरत के लिए बना लिया जाता है।

मलग़ोबा (पु0) देखें कचूमर।

नौरतन (स्त्री) कच्चे अमचूर की पुरतकल्लुफ़ चटनी जिसमें नमक मिर्च और दूसरे मसालों के साथ किशमिश छूआरे और अदरक का इज़ाफ़ा करके क़ंद और सिर्के की चाशनी में रचाते हैं। चूँकि यह चट्नी दो रसी होने की वजह बहुत खुश ज़ाइक़ा और आम पसंद होती है। इसलिए इसका नाम नौरतन रख लिया गया है।

नप्पी (स्त्री) मछली और इसी क़िस्म की बाज़ चीज़ों का अचार जो दकन के बाज़ शहरों में ख़ास तौर से बनाया और मुक़ामी तौर पर पसंद किया जाता है।

3 पेशा–ए–खंसारी (शक्कर साज़ी)

ओसा (पु0) गन्ने के रस के शीरे यानी राब को ठंडियाने का अमल। **देना** राब को आहिस्ता आहिस्ता उछालकर ठंडा करना।

ओला (पु0) निहायत सफेद क़ंद की बूरा का बनाया हुआ लड्डू की शक्ल का गोला जो हस्बे ज़ुरूरत छोटा एवं बड़ा बनाया जाता है। सफेदी और गोलाई में बर्फ के ओले से मुशाबिहत इसकी वजह तस्मिया है।

अधौका (स्त्री) एक मर्तबा की साफ की हुई कच्ची खाँड। लफ़्ज़ आधे से अधौका एक इस्तिलाह बन गयी है।

अखाड़ी (स्त्री) अखाँढी बमानी खाँड के अज़्ज़ा न रखने वाली इस्तिलाह में एक क़िस्म की ईख का नाम जो सफेद रंग, पतली और कमरस होती है। इसके रस में.....

अखौला (पु0) गन्ने या ईख का पत्तों वाला सिरा। जिसकी पोरियाँ बगैर खुली पत्तों में बंद और कच्ची हो।

अगौल (पु0) लख्ड़ा। गन्ने की अद्ना दर्ज़े की क़िस्म जिसका रस ज़्यादातर सिरका बनाने के काम आता है।

आँड़ी (स्त्री) देखें टारन।

ईख/ईक (स्त्री) गन्ने की एक क़िस्म जो शक्करसाज़ी के लिए काश्त की जाती और आमतौर से सख्त और पतली डाल की होती है। इसकी चंद क़िस्में खंसारों में खासतौर से मशहूर है।

ईंढ़ी/ईंधी (स्त्री) गन्ने का रस उबालने की भट्टी। खंसारों की ख़ास इस्तिलाह में ————————? पृ0188

बाटा/बट्टा (पु0) लफ़्ज़ बाट और बटिया बमानी पगडंडी का दिहाती तलफ़्फ़ुज़। कोल्हू के गिर्द बैल के फिरने का रास्ता जो तेलियों की इस्तिलाह में पेंड़ कहलाता है। **देखें** पेशा–ए–तेली। पृ0

बाँक (स्त्री) गन्ने का छिल्का छीलने का घोड़े के नाल की शक्ल का धारदार औज़ार।

बताशा (पु0) खाँड या क़ंद की ख़मीर की हुई चाश्नी की बुलबुलेनुमा बनी हुई शक्ल जिसके

अन्दर ख़मीर की वजह से स्पंज की तरह के खाने बन जाते हैं। हसबेज़ुरूरत कुल्चे की वज़अ के छोटे बड़े बताशे भी बनाये जाते हैं।

बरोखा (पु0) ईख की एक क़िस्म जो बहुत रसीली नर्म और लम्बी डाल की होती है।

बूझा (पु0) राब निथारने का ठीया जिस पर राब के थैले शीरा निथरने को रख दिये जाते हैं।

बूरा (पु0) देखें खाँड।

बाँबा (स्त्री) राब के थैले का कसकर बाँधने का तार या जंजीर। राब के थैलों पर रखने का वज़न जो बतौर दाब इस्तेमाल किया जाता है ताकि शीरा खाँड के अजज़ा से बिल्कुल ख़ारिज हो जाये।

बहान/बह्नी (स्त्री) एक क़िस्म की खुली नाली जिसमें एक बार का पकाया हुआ रस बहकर दूसरे कड़्हाव में जाता है। रस पकाने के कारखाने में वह जगह जहाँ सिर्फ एक भट्टी होती है और ताज़े रस को मामूली जोश देकर एक नाली के ज़रिये राब पकाने के कारखाने में पहुँचा देते हैं। मजाज़न ताज़ा रस जोश करने का बड़ा कड़हाव।

बेल (स्त्री) शक्करसाज़ी के लिए रस को उतार चढ़ाव से कई बार पकाने के लिए कड़हाव का भट्टियों पर जमा हुआ तरतीबवार सिलसिला जिनमें रस हस्बेज़ुरूरत पकाते और एक कड़हाव से दूसरे कड़हाव में बदलते रहते हैं। **चलना, जारी होना** के साथ बोला जाता है।

भरया (स्त्री) कोल्हू के नीचे रस जमा होने का बड़ा ज़र्फ़ या हौदा।

भिल्वा (पु0) भेली का इसमे–मुसग्ग़र। **देखें** भेली।

भेरा (पु0) थूआ। फ़ारसी लफ़्ज़ बार बमानी वज़न का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। राब के थैलों पर रखने का वज़न जो बतौर दाब इस्तेमाल किया जाता है।

भैरों/भेरों (पु0) पटराया, रसौलू। गन्ने का रस निकालने का चर्ख़ी की वज़अ का बेलनदार कोल्हू जो बज़ाहिर लफ़्ज़ बार बमानी दाब का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है।

भेला (पु0) भेली का इसमे मुकब्बर। दस पन्द्रह सेर वज़नी भेली।

भेली (स्त्री) गुड़ की पंसरी बनाई हुई पइँढी आमतौर से पाँच सेर की बनाई जाती है। बाज़ मुक़ामात ढ़ाई सेर की भी बनाते हैं और भेली के नाम से मौसूम करते हैं।

कहावत *गवाँर भेली दे पौंढा न दे।*

पाल (पु0) एक ख़ास क़िस्म की चटाई। जिसपर ताजा खाँड हवा देने को फैलाई जाती है।

पत्री (स्त्री) खाँड के ज़र्रात का पिंड जो राब से शीरा टपकने के बाद थैले में बाक़ी रह जाता है। **देखें** लफ़्ज़ पत पेशा–ए–शीरीनी साज़ी (कजक साज़)।

पतोई (स्त्री) लादा, मैलिया। लफ़्ज़ फोई का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। गन्ने के रस का मैल जो रस को गरम करने से फेन की शक्ल में ऊपर आकर जम जाता है। **देखें** लफ़्ज़ फोई पेशा–ए–अचार साज़ी।

पतरा/पतेला (पु0) पटेला, सीवार (सीबार) सिरवार (सिरवाल) लौंची। एक क़िस्म की लम्बी और गोल पत्ती की खुदरू घास जो लचकदार दरियाओं के किनारे कम पानी में होती है। इसको राब के थैलों पर डाल देते हैं। उसकी गर्मी से राब का शीरा जल्दी निथरता है।

पटियारा (पु0) देखें भैरों।

पराई (स्त्री) गन्ने की पोरों का छिल्का साफ करने का अमल। गन्ने के पोरों पर का छिल्का उतारने की उजरत। **करना** छोला करना, छोलना। गन्ने की पोरों का छिल्का उतारना।

पिन्ड (पु0) कोल्हू के गिर्द मिट्टी का बना हुआ घेरा जो गन्ने के टुकड़ों को फैलने और गिरने से रोके।

पोना/पौना (पु0) कड़हाव से रस निकालने का ज़र्फ। **देखें** लफ़्ज़ डोरा। पेशा–ए–बावर्ची। पृ0

पौंढा (पु0) थुवन, सरैठा। मोटे और लम्बे गन्नों की क़िस्म में दूसरे दर्जे का गन्ना। इसमें खाँड के ज़र्रात कम होते हैं। इसलिए ज़्यादातर चूसने या चबाकर रस पीने के काम आता है।

फद्का (पु0) गन्ने का पहली बार रस पकाने का गहरा और बड़ा कड़हाव।

फिद्ढा (पु0) राब पकाने का छोटा और किसी क़दर उथलवाँ कड़हाव।

फूला (पु0) पावले का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। शकर साफ करने का फद्के बड़े कड़हाव के चौथाई हिस्से के बराबर छोटा कड़हाव। पावला, हिन्दी में चौथाई हिस्से को कहते हैं।

ताँबती (स्त्री) खाँड को कड़हाव के किनारों से छुड़ाने का ताँबे का खप्चा (कफ्चा)

तानी (स्त्री) देखें नाधा।

तरौंजा (स्त्री) एक मर्तबा की साफ़ की हुई मैले रंग की कच्चा खाँड।

थापी (स्त्री) रस निकालने के कूल्हे की लाट का चपटा सिरा जो गन्ने के टुकड़ों को कुचलता है।

थल्काना/तहल्काना (क्रिया) तह हल्काना। गन्ने के रस की पकी हुई गरम राब को ठण्डा करने के लिए उछालना। तले ऊपर करना, हिलाना।

थूअ (पु0) देखें भेरा।

थुवन (पु0) देखें पोंडा। लफ्ज़ थम या थूनी का गलत तलफ़्फ़ुज़।

टारन (स्त्री) आँडी, चूलिया, ढेकी। क़दीम वज़अ़ के कोल्हू की लाट के निचले सिरे पर चौपारा शक्ल की बनी हुई थाप। जो गन्ने के टुकड़ों को मरोड़ी दे कर तोड़ी और रस निकालती है। लफ्ज़ तोड़ना से टारन इसमें आलः बना लिया है।

टिकटी (स्त्री) राब के थैलों के मचान की अडवाड़ या टेका देने वाली लकड़ी।

जाट/जेठा (स्त्री) चूरन, मूहन। गन्ने का रस निकालने के चर्खीदार कोल्हू का बेलन। **देखें** तस्वीर।

जिभ/जिभीला (स्त्री) भैरों। कोल्हू के ऊपर के बेलन की दाब। **देखें** तस्वीर।

जुम्नी (स्त्री) देखें डोली। कोल्हू के चौबच्चा से गन्ने का रस भर कर लाने का ज़र्फ।

जोंक (स्त्री) गज्जा। शीरा निथरने के लिए राब के थैले रखने की एक क़िस्म की दरियाई घाँस का बना हुआ कोठा।

झोकट (स्त्री) देखें झोकंद।

झोकना (पु0) शक्कर साज़ी के कारख़ाने की भट्टी में ईंधन डालने का एक क़िस्म का चिमटा, (दस्पना)।

झोकंद/झोकंदा (स्त्री, पु0) शककर साज़ी के कारख़ाने में राब तैयार होने की भट्टी।

झोक्वा/झोकिया (पु0) शक्कर के कारख़ाने की भट्टी में ईधन डालने वाला मज़दूर।

चाँढा/चंढवा (पु0) चाँद का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। गुड़ को कड़हाव में उलट पुलट करने और किनारों पर से खुरचने का चाँद के मानिंद गोल मुंह का खप्चा (कफ्चा)।

चाँढना (क्रिया) गुड़ की तैयारी के वक़्त कडाव के किनारों से गुड़ चाँढे से खुरचना यानी कड़हाव के किनारों पर जमे हुए गुड़ को चाँढे से छुड़ाना।

चराई (स्त्री) चर्ख़ी के कोल्हू (भैरों) के बैलों की दाब को कमती, बढ़ती करने वाला पेंच। **देखें** तस्वीर।

चिड़िया (स्त्री) देखें ढाबी।

चक्रा/चक्री (पु0, स्त्री) गरम गुड़ को ठण्डा करने और इकट्ठा करने का हौदा या चोब्चा।

चँदवा/चँढ़वा (पु0) देखें चाँढा।

चंदोई/चंढोई (स्त्री) चाँढे का इसमें गुसग़र। **देखें** चाँढा।

चुन्नी (स्त्री) ईंख की क़िस्म जो छोटी और पत्ली होती है। इज़लाअ़ इटावा और अलीगढ़ की पैदावार है।

चोआ (पु0) देखें चोबाँढा।

चोबाँढा (पु0) चोआ। शकर के अज्ज़ा जो राब से शीरा निथरने के बाद बाक़ी रहें।

चूरन (स्त्री) देखें जाट।

चूलिया (पु0) देखें टारन।

चोहाँडा (पु0) वह बर्तन जिसमें राब का शीरा टपक कर जमा होता रहता है।

चीनी (स्त्री) सफेद और उमदा क़िस्म की खाँड। आम तौर से पिसे हुये क़ंद को कहते हैं।

छटोला/छटोनी (पु0) गन्ने के रस के ऊपर का मैल उतारने का खप्चा (कपचा)

छेट्वा (पु0) राब निथारने का टोकरे की क़िस्म का छल्ना।

छोला (पु0) गन्ने की पोरों (गाँठों) का छिल्का।

छोलकट (पु0) छोल्वा, छोलिया। गन्ने की पोरों के ऊपर का छिल्का साफ़ करने वाला मज़दूर।

छोल्ना (क्रिया) छोला करना। गन्ने के ऊपर के छिल्के और पत्ते साफ़ करना।

छोल्नी (स्त्री) गन्ने के पत्ते काटने और पोरें साफ करने का दराँती की क़िस्म का धारदार औज़ार।

छोल्वा/छोलिया (पु0) छोलकट।

छोई (स्त्री) देखें खोई।

दुक्चन (स्त्री) इज़लाअ़ पीलीभीत ओर बरेली के इलाक़े की मोटी क़िस्म की और ज़्यादा रसीली ईख़।

धौला/धौरा (पु0) इज़लाअ़ मुजफ़्फर नगर और सहारनपुर के इलाक़े की उमदा आला क़िस्म की सफेद रंग की ईंख इसके रस में शक्कर के ज़र्रात होते हैं। और खाँड़ सफेद बनती है।

डाबी (स्त्री) चिड़ा, चंढवी। बताशे बनाने का ढोई की वज़अ़

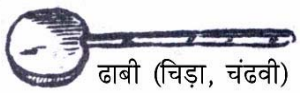
ढाबी (चिड़ा, चंढवी)

का छोटा चोबी खप्चा जिसको गवाँरी बोली में ढरबी और ढरहू भी कहते हैं दरअस्ल लफ़्ज़ ढोई का ग़लत तलफ़्फुज़ है।

ढोभा (पु0) गन्ने का रस जमा करने का नाँद की क़िस्म का बड़ा ज़र्फ। चौब्चा।

ढोली (स्त्री) कोल्हू के चौब्चे से गन्ने का रस भरकर लाने का ज़र्फ़।

ढ़ंढ़ोई (स्त्री) पंजाबी लफ़्ज़ ढाँढा बमानी घाँस फूँस का चूरा और बारीक क़िस्म के तिन्के वगैरा का इसमें मुसग्गर खंसारों की इस्तिलाह में राब के ऊपर की मैल जो दूध की मलाई की तरह उसके ऊपर जम जाती है। **देखें** लफ़्ज़ पतोई।

राब (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ रूब का उर्दू तलफ़्फज, गन्ने के रस का पकाया हुआ क़िवाम जिसमें रस का पानी का जुज़ खुश्क हो गया हो। इस क़िवाम में जिस को इस्तिलाह में राब कहते हैं मिठास के ज़ाइद ज़र्रात मुंजमिद हो जाते हैं। जिन को अ़मले तक़्तीर से इलाहिदा कर लिया जाता है। और साफ़ करके खाँड़ बनाई जाती है।

रस (पु0) गन्ने का अ़र्क़।

रसावा (पु0) गन्ने का रस रखने का ज़र्फ़।

रस छननी (स्त्री) रस छान्ने का छल्ना।

रसूआई (स्त्री) गन्ने का रस तक़सीम करने की रस्म जो पहले दिन का शुरू होने पर की जाती है।

रसौलू (पु0) देखें भैरों।

रेव्डा (पु0) गन्ने की निहायत् रसीली और मीठी अव्वल दर्जे की क़िस्म। इज़लाअ़ शाहजहाँपुर और बनारस में इसकी काश्त की जाती है। जिसकी खाँड़ बहुत उमदा होती है।

साबूनी (स्त्री) सफेद खाँड़ के औसत दर्जे के लुग़दी की शक्ल के बनाये हुए पेड़े।

साँड़ (पु0) लफ़्ज़ साँटे का ग़लत तलफ़्फुज़। संस्कृत शाँड़ बमानी मरोडना। गन्ने के कोल्हू की लाट।

साया (पु0) कोल्हू से कड़हाव तक रसभर कर ले जाने का ज़र्फ़।

सरेठा (पु0) देखें पोंडा।

सीबार/सीवार (पु0) देखें पैतरा (पटेला) जाते हैं।

खांची (स्त्री) कुंडी। राब के थैले रखने का पुख़्ता बनाया हुआ हौदा जिसकी मुंडेर पर राब के ठेले बाकी माँध शीरा निथरने और खुश्क होने को रखे जाते हैं।

खाण्ड (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ क़ंद का उर्दू तलफ़्फुज जिसको पूरब वाले बूरा कहते हैं क़ंद दानेदान होता है। और खाँड़ से बनाया जाता है और राब से निकली हुई आसली हालत में जो आटे की मानिन्द होती है। इस्तिलाह में खाँड कहलाती है। कच्ची खाँड़। बगैर साफ़ की हुई खाँड़ जिसमे राब का अस़र बाक़ी हो।

खंसार/खंडसाज़ (पु0) शकर साज़। खाँड़ और इसी क़िस्म की दूसरी चीज़े बनाने वाला पेशेवर कारीगर या इजारेदार।

खंडसाल (पु0) खाँड, शकर वगैरा बनाने का कारखाना।

खैंची (स्त्री) खंसारी। कारख़ानें में शकर साफ़ करने की जगह।

खोई (स्त्री) छोई। गन्ने का फूक जो रस निकालने के बाद बाक़ी रह जाये। इस फूक को रस पकाने के लिये भट्टी में जलाया जाता है।

खोइय्या (पु0) गन्ने के फूक को जमा करने और भट्टी में छोकने वाला मज़दूर।

खेल (स्त्री) आहनी खप्ची जिससे कोल्हू में गन्ने के टुकड़ों को उलट पुलट करते हैं।

गाँढा (पु0) गन्ने का गँवारी तलफ़्फुज़।

गुज्जा (पु0) देखें जोंक।

गुर्दमी/मुरुमी (स्त्री) लफ़्ज़ गर्दांग का हिन्दी तलफ़्फुज। राब को ठण्डा करने के लिए हर्कत देने वाला खप्चा बाज़ मुक़ाम पर लोंदी कहते हैं।

गुड़वाई (पु0) गुड़ बनाने का कारख़ाना।

गुड़ (पु0) गन्ने के रस का गाड़ा और ठोस पकाया हुआ क़िवाम।

गलावट (पु0) देखें शीरा।

गन्ना (पु0) नेशकर। बाँस के दरख्त की वज़अ का पौदा जिसके रस से गुड़, शकर, खाँड़ और इसी क़िस्म की चीजें बनाई जाती हैं।

गँदौड़ा/गेंदौडा (पु0) संस्कृत गैंढू बमानी गोला। गेंढौड़ा उमदा क़िस्म की निहायत सफेद खाँड़ के कुल्चे नुमा बनाये हुए गिरवे जो हिन्दुओं में शादी बियाह की तक़रीब के लिये बताशे की बजाये तक़सीस किये जाते हैं।

गंढेरी (स्त्री) गन्ने की पोरी का इंच सवा इंच लम्बा काटा हुआ टुकड़ा जो चूसने की ग़रज़ से काट लिये जाते हैं।

गौनी (स्त्री) देखें कोठी।

धान (पु0) देखें कोठी।

घघरा (पु0) देखें कोठी।

लादा/लादो (पु0) देखें पतोई।

लधौरी/लढ़ौरी (स्त्री) राब खुरचनी। कड़हाव के किनारों से राब खुरचने का आहनी खप्चा।

लोथा (पु0) राब के थैले के अन्दर की कम्बली यानी कम्बल की मियान तह।

लौंजी (स्त्री) देखें पतेरा।

लोहिया कोल्हू (पु0) जदीद वज़अ का चर्ख़ी का आहनी कोल्हू। **देखें** भैरों मअ् तस्वीर।

माँक (स्त्री) देखें मरखम्बा (पेशा–ए–तेली)। जो खंसारों की इस्तिलाह में मानक कहलाता है।

मुस्दी (स्त्री) लफ़्ज़ मसदूदी का गलत तलफ़्फुज। खाँड़ के खिलौने बनाने का साँचा। दीवाली के त्योहार पर इस क़िस्म के खिलौने बनाये जाते हैं।

मिस्री (स्त्री) शीरे की मिक़दार से ज़ाइद मिठास यानी खाँड़ या क़ंद जो ज़ाइद मिक़दार में पानी में हल कर दिया गया हो शीरे में जम जाता है। इसको इस्तिलाह में मिस्री कहते हैं। जो बतौर ख़ास तैयार की जाती है।

मल्ली/मैलिया (स्त्री) देखें पतोई।

मूहन (पु0) देखें जाट और चूरन।

मुहाल (स्त्री) देखें कुकुडी प्रयोग।
शहद की मक्खियों का छत्ता।

नाधा (स्त्री) तानी लफ़्ज़ नाथ का गलत तलफ़्फज़ है। वह रस्सी जिसका एक सिरा कोल्हू के बैल की नाथ से और दूसरा लाट से बंधा होता है।

नाड/नाड़ी (स्त्री) वह रस्सी जो कोल्हू के बैल के साथ बतौर जोत बंधी हो।

निबरा (पु0) तिलंगी लफ़्ज़ नीला बमानी पानी का घड़ा जिसका हिन्दी तलफ़्फुज़ निबरा है खंसारों की इस्तिलाह में ऐसे मटके को कहते हैं जिसमें कोल्हू से रस लेकर कड़हाव में डाला जाता है।

निखादा (पु0) निखारा का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** निखारा।

निखारा (पु0) मस्दर निखारना बमानी उजला करना। मैल निकालना साफ करना से इसमें ज़र्फ़। खंसारों की इस्तिलाह में उस बड़े कड़हाव को कहते हैं जिसमें गन्ने के रस का पहली मर्तबा गरम कर के साफ किया जाता है।

नुक़ल् (पु0) देखें इलाइची दाना।

हथर्की/हथरूकी (स्त्री) कोल्हू में गन्ने के टुकड़े डालने वाले मज़दूर के हाथ की हिफ़ाज़त का दस्ता।

हरसोंधा (पु0) कोल्हू का बैल हाँकने वाला। कोल्हू का बैल हाँकने वाले की निशस्त जो बैल के साथ चक्कर में रहती है।

4 पेशा–शीरीनी साज़ी
(गजक साज)

इलाइची दाना (पु0) क़न्द का तार बन्द क़िवाम चढ़ा हुआ इलाइची। चना या किसी क़िस्म के मेवे का दाना जो बतौर शीरीनी तैयार किये जाते हैं। बड़ी क़िस्म को नुक़्ल कहते हैं।

बहादुरशाही सेंव (पु0) मैदे के रौग़नी सेव जो क़ल्मी शक्ल के बना और रौगन में तलकर खाँड़ या गुड़ के क़िवाम में परवर्द करके मीठे कर लिये जाते हैं।

भुक्का (पु0) देखें तिल शक्रा।

पत (स्त्री) खाँड़ या गुड़ की सख़्त तैयार की हुई चाश्नी या तारबंद क़िवाम जो ठण्डा होकर जम जाये।

पट्टी/पत्ती (स्त्री) सेवग्नी, गट्टा। पत की बनाई हुई एक क़िस्म की मिठाई जो पत को फेंट कर क़लमों की शक्ल के टुकड़े बनाते और उन पर तिल चढ़ाकर तैयार कर लेते हैं। लफ़्ज़ पत का गलत तलफ़्फ़ुज। **देखें** पत।

तिल शक्रा (पु0) भुक्का, तिलौंचा। तिल, और खाँड हम वज़न कूटकर मलीदे की तरह बनाई हुई गजक की एक क़िस्म जिसको पंजाब में भुक्का कहते हैं।

तिलनगी (स्त्री) पत की निहायत बारीक बनाई पपड़ियाँ या गिलास जिस पर कहीं कहीं तिल और इलाइची दाना चिपका दिये जाते हैं।

तिलौंचा (पु0) देखें तिल शक्रा।

रेव्ड़ी (स्त्री) गुड़ या खाँड़ के तार बन्द क़िवाम की फेंट कर सख्त की हुई लड़ का तिल चढ़ा हुआ गोल और चपटा टुकड़ा जो आमतौर से छोटे पैसे के बराबर होता है। जमअ़ रेवड़ियाँ।

कहावत– अंधा बाँटे रेवड़ी और अपने ही अपने को।

सेल (स्त्री) गुड़ या शकर की तारबंद चाश्नी की लम्बी लड़।

सेवग्नी (स्त्री) लफ़्ज़ सेव का ग़लत तलफ़्फ़ुज। **देखें** पट्टी।

गट्टा (पु0) देखें पट्टी।

गजक (स्त्री) फ़ारसी गज़क बमानी तबदीले जाइक़े को खाने की चीज़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज। उर्दू में इससे मुराद एक क़िस्म की शीरीनी है जो साफ तिल और गुड़ या खाँड़ की तार बन्द चाश्नी (पत) मिलाकर तैयार की जाती है। बाज़ मुक़ामात मस्लन–आगरा अलीगढ़ और दिल्ली में निहायत आला क़िस्म के बनाते हैं। ख़ास जाड़े के मौसम की चीज है इस लिये उस ज़माने में वहाँ इसकी बड़ी गरम बाज़ारी रहती है।

गजक साज़ (पु0) गजक बनाने वाला पेशेवर कारीगर।

गुड़याना (क्रिया) सेव। चने या इलाइची दाना पर गुड़ या खाँड़ की चाश्नी चढ़ाना।

गुड़धना (पु0) गुड़+धान। चने या मुरमुरों को गुड़ की चाश्नी में मिलाकर तैयार की हुई शीरीनी जो टिकियों या लड्डू की शक्ल में बना ली जाती है।

5 पेशा–ए–शीरीनी साज़ी
(हल्वाई)

अद्रकी (स्त्री) अद्रक की बनाई हुई मिठाई।

अकबरियाँ (स्त्री) चाँवल के आटे की तली हुई और शीरे में परवर्द की हुई अंदर्से की क़िस्म की तिकियाँ पंजाब में अक्बरियाँ कहलाती है।

इमर्ती/इमर्तियाँ (स्त्री) संस्कृत लफ़्ज़ अम्रवत बमानी रूहअफ़ज़ा का याए निस्बती के साथ उर्दू तलफ़्फ़ुज़। माश की दाल की पीठी की कंगूरेदार हल्क़े की शक्ल की तिलकर और कंद के शीरे में परवर्द कर के बनाई हुई मिठाई जो लताफ़त और खुश ज़ाइक़गी की वजह इमर्ती यानी रूह परवर मशहूर हो गयी। चित्र इमर्ती

अँदर्सा (पु0) चाँवल के आटे की मीठी तली हुई खुश ज़ाइका टिकिया जो तलने में छनक कर घी

जज़्ब कर लेती और मुरग्ग़न हो जाती है इस चीज को लुकदी की शक्ल में तिलकर अँदर्से की गोली कहते हैं जो अँदर्से की तरह बहुत खुश ज़ाइक़ा होती है। तलते वक़्त इसके ऊपर तिल जमा देते है जिससे इसकी सूरत में खुशनुमाई ओर ज़ाइके में सोंधापन पैदा हो जाता है।

बालू बड़ा (पु0) देखें बालूशाही।

बालूशाही (स्त्री) बालूबड़ा, खुर्मा। मैदे की निहायत खस्ता तली हुई और क़ंद के शीरे में परवर्द की हुई आला किस्म की मिठाई। पंजाब में बालू बड़ा और देहली में मुसलमान खुर्मा कहते हैं। बालू बड़े की वजह तस्मिया उसका खस्तापन है और खुर्मा शायद रंगत की वजह से नाम पड़ गया है।

बताशी फेनी (स्त्री) बताशे की तरह फूली हुई मैदे की बनी हुई एक क़िस्म की खस्ता मिठाई।

बत्तीसा (पु0) खुश्क मेवे गोंद और मखाने मिलाकर बनाया हुआ रवे का मुरग्ग़न हलवा। पंजाब में बत्तीसा और देहली व नवाहे–देहली में सटोरा कहलाता है। जो बज़ाहिर सात के अदद से मंसूब मालूम होता है।

बर्फी (स्त्री) दूध में निहायत सफेद क़ंद का क़िवाम पकाकर तैयार की हुई मिठाई जो रंगत में बर्फ से मुशाबा होने के सबब बर्फ़ी मशहूर हो गयी। जब इसके क़िवाम को पतला जमाकर नुकीले चौपहल की शक्ल में काट लेते हैं। तो इस सूरत में लौज़ात कहलाती है। बर्फी या लौज़ात को पुरतकल्लुफ़ बनाने के लिए खोये में क़िवाम पकाया जाता है और उसमें कोई खुश्क मेवा मसलन–बादाम या पिस्ता पीसकर मिला देते हैं और उसको मेवे के नाम से मौसूम करते हैं। **जैसे** बादाम की बर्फ़ी, पिस्ते की बर्फ़ी वगैरा।

बक्कर/पख्खर (पु0) संस्कृत वल्कर या वल्खर बमानी पपड़ी या दरख़्त की छाल। हलवाइयों की इस्तिलाह में कंद की ऐसी तार बंद चाश्नी या क़िवाम को कहते हैं। जिसकी पपड़ी जम जाये। यानी जिस किसी चीज पर पढ़ाया जाये। उस पर जमकर ग़िलाफ़ सा बन जाये और जो चाश्नी या क़िवाम जमे नहीं वह..... कहलाता है। बूँदी.... जलेबी इमर्ती और बालूशाही वगैरा को क़ंद का शीरा पिलाना या तार बन्द शीरे की तह चढ़ाना।

पर्छा (पु0) सुहाल या खजूरें तलने का उथली क़िस्म का कड़वाह।

पर्छी (स्त्री) पर्छे का इस्मे मुसग्ग़र।

परवर्द करना (क्रिया) देखें पतियाया।

पंजीरी (स्त्री) मुरग्ग़न बिरियाँ, रवा क़ंद और पाँच, सात किस्म के खुश्क मेवे मिलाकर मलीदे की क़िस्म की बनाई हुई शीरीनी।

पोआ (पु0) मालपुआ। क़ंद के तार बंद क़िवाम में पतियाई हुई मैदे की परतदार खस्ता पूरी।

असाढ़ में करी गाँतरी सावन खाये पोआ।
कातिक में पूछे कौन के कितना हुआ।।

पेड़ा (पु0) खोया और क़ंद मिलाकर पेड़े (लुक्दी) की शक्ल बनाई हुई मिठाई। **देखें** पेडा। पेशा–ए–नानबाई।

पेंड़ी (स्त्री) पंड का इस्मे मुसग्ग़र। घी में बिरियाँ रवे खाँड और खुश्क मेवे मिलाकर बनाये हुये लड्डू जो आमतौर से शादी बियाह की तक़रीबों के लिए बनाये जाते हैं।

फेनी (स्त्री) मैदे की बारीक लच्छेदार शक्ल की तली हुई टिकिया जो बारीक तारों का लच्छा मालूम होता है। फीकी और मीठी दोनों किस्म की बनाई जाती है। फीकी तली जाती है और शीरे में परवर्द करके मीठा कर लिया जाता है।

तारबंद चाश्नी (स्त्री) खाँड या क़ंद का गाढ़ा पकाया हुआ क़िवाम जिसकी बूँद में बारीक तार बने और ठण्डी होकर जम जाये।

ताना (क्रिया) घी या तेल को इस क़दर गरम करना की उसकी कसाफ़त जल जाये या इलाहिदा हो जाये।

ताव (पु0) प्याले की शक्ल का बहुत बड़ा कड़वाह। **देखें** कड़वाह। लोहे या टीन का पत्रा जिसपर नानखटाइयाँ रखकर भट्टी में सेंकी जायें।

तिल चाँवली (स्त्री) हमवज़न तिल, चाँवल और क़ंद तरकीब से मिलाकर लड्डू की शक्ल बनाई हुई मिठाई।

तमंका/तमंगा (पु0) अरबी लफ़्ज़ तमक्कुन बमानी जगह पकड़ने का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। हलवाइयों की इस्तिलाह में कोर उठे हुए ऐसे बड़े परात को कहते हैं जिसमें पतली या गाढ़ी क़िस्म की मिठाई मसलन–बर्फ़ी, क़लाक़ंद या हलवा सोन वगैरा जमाया जा सके। शिमाली हिन्द के हिन्दू हलवाइयों में यह लफ़्ज़ आम है।

तन्नी (स्त्री) देखें तई।

तई/तवी (स्त्री) जलेबी और इमर्ती तलने की तवे की शकल की उथलवाँ यानी चौरस पेंदे की कड़हाई। (संस्कृत लफ़्ज़ ताप से तवा, तवी और उसका उर्दू तलफ़्फ़ुज़ तई उथली कड़हाई के मानों में मशहूर हो गया। बाज़ कारीगर तन्नी तलफ़्फ़ुज़ करते हैं। **तई–चित्र (तवी)**

टिक्टी

टिक्टी (स्त्री) कड़वाह के मुँह पर खप्चा या छल्ना रखने का चोबी चौखटा।

ठोकी (स्त्री) झिरना, चट्टू। नुकती या सेव बनाने का सूराख़दार खप्चा।

जलेबी

जलेबी (स्त्री) लत किये हुये ख़मीरी मैदे की हल्क़ेनुमा बनी हुई मिठाई। जो फीकी तलने के बाद क़ंद के शीरे में परवर्द की जाती है।

जौज (स्त्री) नत्ना (फ़ारसी लफ़्ज़ गौज़ बमानी अख़रोट का मुअ़र्रब जौज़ का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़ जलेबी बनाने की मिट्टी की छोटी हंडिया या नारियल का खोल जिसके पेंदे में सूराख़ कर लिया जाता है।

जेली (पु0) देखें रूब।

झिरना (पु0) देखें ठोकी।

चाश्नी (स्त्री) क़िवाम। खाँड क़ंद या गुड़ का तार बंद पकाया हुआ शीरा जो फीकी तली हुई चीज़ पर चढ़ाने (पतियाने) को तैयार किया जाये। **देना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

चट्टू (पु0) देखें ठोकी।

चुर्मा (पु0) संस्कृत चूर्मा बमानी मलीदा। **देखें** पंजीरी।

चोंगा (पु0) परतदार मेवा भरा हुआ समोसा।

छुट्टा (पु0) मुख़्तलिफ़ किस्म की मिठाइयों के चूरे का मजमूआ।

जशी हलवा सोहन (पु0) देखें हलवा सोन।

हल्वा (पु0) नर्म और मुरग्ग़न किस्म की शीरनी जो रवे मैदे या बाज़ क़िस्म के फल और तरकारी वगैरा की बनाई जाती है। जिस चीज़ की बनाई जाती है। उसी के नाम से मौसूम की जाती है। मसलन–अण्डे का हलवा, गाजर का हल्वा, मलाई का हलवा वगैरा।

हल्वा सोन/सोन हल्वा (पु0) दूध में रवा और सम्नक हल करके पकाया हुआ हलवा। हल्वा सोन कई क़िस्म का ख़ास तौर से मशहूर है। एक करारा यानी सख़्त जो इस्तिलाहन पपड़ी का हलवा सोन कहलाता है और निशास्ते के पानी में बराबर का घी और क़ंद मिलाकर तारबंद चाश्नी के तौर पर पकाया जाता है। दूसरा नर्म जो दूध रवे और सम्नक को तरकीब देकर बनाया जाता है। इसलिए जशी, जौज़ी या गोंद का हलवा सोहन कहलाता है।

हलवाई (पु0) मुख्तलिफ़ किस्म के हलवे और दीगर मिठाइयाँ बनाने वाला पेशेवर कारीगर।

हलवाइन (स्त्री) हलवाई की बीवी या हलवे और मिठाइयाँ तैयार करने वाली कारीगर औरत।

खुर्मा (पु0) देखें बालूशाही।

दो कन्नी (स्त्री) देखें कड़हाव।

रूब (पु0) जेली। क़ंद या किसी फल के अर्क़ की खाँड मिलाकर पकाई हुई तार बन्द चाश्नी या क़िवाम।

रसगुल्ला (पु0) गुलाब जामुन की क़िस्म की मिठाई जो दूध को फाड़कर लड्डू की शक्ल में बनाई जाती है और क़ंद के शीरे में परवर्द कर लड्डू की शकल में बनाई और क़ंद के शीरे में परवर्द कर ली जाती है। बंगाल की ख़ास चीज़ है और वहीं की ज़बान में रसगुल्ला कहलाती है।

साज/साज़ (स्त्री) फेनी के लच्छे का हर एक तार बारीक लम्बी सेल। **बन्ना**।

साँग (स्त्री) जलेबी या इमरती के हलक़े की लड्। **चलना** के साथ बोला जाता है।

सटोरा (पु0) देखें बत्तीसा।

सम्नक (स्त्री) फूटे हुये यानी कोपल निकले हुये गेहूँ का आटा जो हल्वा सोन में डालने के लिए तैयार किया जाता है। इसकी लाग से दूध फट जाता है।

सोन हलवा (पु0) देखें हलवा सोन।

शकरपारा (पु0) सुहाल की क़िस्म की लम्बोतरे चौकोर की शक्ल की तली हुई मिठाई। **देखें** सुहाल। लौज़ात या बर्फ़ी के टुकड़े को भी शकरपारा कहते हैं।

शीरा (पु0) देखें चाश्नी। शीरा चाश्नी की निस्बत कम पका हुआ और पतला होता है।

ग़िलाफ़्ना (क्रिया) किसी चीज़ पर क़ंद की चाश्नी की तह चढ़ाना। इस तरह की उस चीज़ पर क़ंद की पपड़ी बँध जाये। **देखें** पतियाना।

क़लाकंद (पु0) खोये की मिठाई जो क़ंद की तार बन्द चाश्नी में खोये को मिलाकर तैयार की जाती है। कभी इसमें खोपरे का लच्छा मिला देते और जौज़ी या खोपरे का कलाकंद कहते हैं।

क़िवाम (पु0) देखें चाश्नी।

कान (पु0) कड़वाह के हल्क़े।

कड़वाह (पु0) दो कन्नी। फैले हुये मुँह की नाँद की शक्ल का हलवाइयों, खंसारों और इसी क़िस्म के पेशेवरों के इस्तेमाल का आहनी ज़र्फ़। हस्बेज़रूरत छोटे–बड़े और मुख्तलिफ़ वज़अ़ के बनाये जाते हैं।

कड़हाई (स्त्री) कड़वाह का इस्मे मुसग्ग़र। **करना, होना** के साथ बोला जाता है। **मुहावरा** पकवान तलने को कहते हैं। **देखें** पकवान पेशा–ए–बावर्ची।

कंदमूल फल (पु0) मग़ज़ियात और खुश्क मेवों की तैयार की हुई मिठाई। पंजाब और सरहदी इलाक़े की ख़ास चीज़।

कूँचा (पु0) लफ़्ज़ कफ़्चा का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। लम्बे दस्ते का खप्चा हलवाइयों की इस्तिलाह।

खाजा (पु0) देखें खज्ला।

खजला/खाजा (पु0) खाजा, घयोर। पतले फेंटे हुए मैदे का घी में छनछनाया हुआ मोटा चेला जो तलने में स्पंज की शक्ल का बन जाता है। इसको मीठा करने के लिए क़ंद के शीरे में डालकर परवर्द कर लिया जाता है। शीरा और घी उसके सूराख़ में भर जाता है। जो उसको बहुत मज़ेदार बना देता है। पंजाब में खाजा, देहली में खज्ला और पूरब में खजूर कहलाता है।

कहावत *टके सेर भाजी टके सेर खाजा।*
अंधेर नगरी चौपट राजा।

खीर बडा/खीर बड़े (पु0) अँदर्से की गोलियों की क़िस्म की चाँवल के आटे की तैयार की हुई मिठाई। **देखें** अँदर्से की गोली।

गुलाब जामुन (स्त्री) खोये में थोड़ा मैदा मिलाकर जामुन की शक्ल में तलकर शीरे में परवर्द की हुई मिठाई।

गुलगुला (पु0) लत किये हुए मैदे, रवे या आटे में क़ंद मिलाकर फुलकी की तरह तैयार की हुई मामूली किस्म की मिठाई।

गूलरा (पु0) चाँवल के आटे की तैयार की हुई पंजीरी (पंजाब) **देखें** पंजीरी।

गाँजा (पु0) खोये का बना हुआ समोसा।

गाँजा गिलाफ़ी (पु0) मेवा भरकर बनाया हुआ समोसा। वह मीठा समोसा जिसके अन्दर खोया वगैरा भरा हुआ हो।

गाँदे का हलवा सोन देखें हलवा सोन।

घोटा (पु0) चाश्नी घोटने का खप्चा।

घयोर (पु0) देखें खजला।

लछ पेठा (पु0) पेठे के लच्छे की मिठाई। पेठे को कद्दूकश पर घिसकर लच्छा बनाते और तार बन्द चाश्नी चढ़ाकर मीठा कर लेते हैं।

लड्डू (पु0) गेंद की शक्ल की बनाई हुई मिठाई जिस चीज की बनाई जाती है। उसी के नाम से मौसूम की जाती है। मसलन् मलाई, नुकती, बेसन, मूँग, रवे वगैरा का लड्डू। **बाँधना, बनाना** जिस चीज को लड्डू बनाना हो उसको बक़द्र जुरूरत गेंद की शक्ल में तैयार करना। पंजाब में बँटना कहते हैं।

लौज़ात (स्त्री) देखें बर्फ़ी।

लोहाँडा (पु0) घयोर बनाने की हंडे की वज़अ़ की कोठीदार कड़हाई।

मालपोआ (पु0) देखें पोआ। सुहाल की क़िस्म की मीठी और खस्तापूरी।

मिठाई (स्त्री) खाने के बाद तकल्लुफ़ में खाने के लिए मुख़तलिफ क़िस्म के तैयार किये हुए हलवे और मीठे पकवान। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

मुरब्बा (पु0) तारबन्द चाश्नी में परवर्द किया हुआ मेवा वगैरा।

मगत/मगद (पु0) पंजीरी का लड्डू। **देखें** पंजीरी और बत्तीसा।

मोती पाक (पु0) मोती चूर। नुकतियों को तार बन्द चाशनी से मिला और जमाकर तैयार की हुई मिठाई। **देखें** नुकती।

मोती चूर (पु0) देखें मोती पाक जिसको बाज़ कारीगर मोती चूर भी कहते हैं।

मून (पु0) रौग़न की लाग जो पकवान को खस्ता बनाने के लिये जिंस के अन्दर दे दी जाये। **देना, डालना** के साथ बोला जाता है।

मोहन भोग (पु0) हल्वा या उमदा क़िस्म की मिठाई जो बतौर ग़िज़ा खाई जाये।

मेथाव्ला (पु0) मैदे या रवे का नर्म और मुरग्ग़न हलवा। (पंजाबी)

नान खटाई (स्त्री) रवे की मीठी और बहुत खस्ता बिस्कुट की तरह तैयार की हुई पेड़े की शक्ल छोटी टिकिया।

नत्ना (पु0) देखें जोज। इमर्ती बनाने की पोट्ली।

नुक्ल (पु0) खाँड़ का लड्डू जो इलायची दाना की तरह बनाया जाता है। **देखें** इलाइची दाना।

नुक्ती/नुग्दी (स्त्री) बूँदी। नुक़ते का इस्तिलाही तलफ़्फ़ुज़ लत किये हुए बेसन की बूँद की शक्ल तली हुई तलन जिस को शीरे में परवर्द करके मीठा कर लिया जाता है। इससे लड्डू और मोदी पाक भी बनाते हैं।

जमीमा आइसक्रीम (स्त्री) देखें मलाई की बर्फ।

कुल्फ़ी (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ कुफ़ल का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ दूध, मलाई, वग़ैरा की बर्फ जमाने का साँचा।

मलाई की बर्फ़ (स्त्री) आइसक्रीम (अंग्रेजी) बर्फ में ठण्डा करके जमाया हुआ मलाईदार दूध, जिसमें हस्बे जुरूरत क़ंद, पिस्ता, बादाम और खुशबू के लिए थोड़ा अर्क़ केवड़ा भी शरीक कर देते हैं।

निमश (स्त्री) दूध का मसनूई झाग जो सर्दी के मौसम में दूध को थोड़ी मिस़री के साथ खूब गाढ़ा पकाकर रात के वक्त ओस में ठण्डा करके सुबह सबेरे उछाल कर बनाया जाता है। फेरे वाले सौदा फ़रोश ''चाट दौलत की'' आवाज़ लगाकर बेचते हैं।

तम्मत